शिष्यबोधक।

HINDUI' READER.

VOL. II.

BEING

A TRANSLATION

OF

ÆSOP'S FABLES;

OR

NO. III.

OF

THE ENGLISH READER.

CALCUTTA:

PRINTED AT THE SCHOOL-BOOK SOCIETY'S PRESS, AND SOLD AT
ITS DEPOSITORY, CIRCULAR ROAD.

1837.

1st Ed. 1,000 *Copies.*
November, 1837.

अथ हिन्दी इतिहास।

१ दृष्टांत

कुक्कुट और रतन का।

एक कुक्कुट किसी गोबरके ढेरको थापसे खोद रहा था. अकस्मात् एक भारी मोलका रत्न उसमेंसे निकला. इसमें वुह कुक्कुट देखके बोला यह वस्तु रत्न परीक्षक के लिये अति सुख दायक और मन मोहन है परंतु मेरे निकट बालकोंके ऐसे सैकड़ों खिलौनों से एक दाना चावल अथवा गेहूंका बहुत पियारा है.

शिक्षा

अब हमारी चतुराईका चिह्न यही है कि हमलोग सदा फलदायक वस्तुको देखावटकी बातोंके आधमें धरें अथवा सर्वदा लाभकी ओर दृष्टि करें और ऊपरके बरन पर न भूलें.

२ दृष्टांत.

लोमड़ी और कुक्कुटका.

एक कुक्कुट विपत्का मारा किसी लोमड़ीके हाथमें फसा वह चाहती थी कि उसको मार डाले. पर उस ठगनी को यह बात भाती थी कि अपनी बुरी वासना को छिपावे

और उसपर उलहना रखकर अपना काम करे. तब कुक्कुट से कहने लगी कि तू बड़ा ही धूमधामी और चीकनेहारा है जो ऐसी चिल्लाहट् मचाता है कि नतो मैं और न मेरे मित्र अपने अवश्यक काम कर सक्ते हैं. संक्षेप यह है कि सारे पड़ोसके लोग तेरी चीकके कारन अपने सुखसे निरास होते हैं. कुक्कुटने उत्तर दिया हाय हाय ए लोमड़ी तू जान्ती है कि मेरा शब्द बिना हेतके है. ईश्वर न करे क्या मुझे इससे किसी को दुःख देने की इच्छा है? बड़े भोर मेरा मन कलोल वा सुख मे आता है तब मैं पुकारके अपनी सोई ऊई कुक्कुटियो को जगाता हूं. और काम काजी लोगों को इस शब्दसे जगाय देता हूं. जिसमें वह सब उठें और अपने अपने काममे लगें लोमड़ी यह बात सुन्ते ही क्रोध करके बोली आव २ तुमारी बात सुनके मैं ठहर नहीं सकी बेर भई और मेरे अहार का समय बीता जाता है. यह बात कहके उस बिपता के मारे को पकड़ कर अपना काम पूरा किया अर्थात् उसको मारडाला और इस कथा को समाप्त किया।

समाचार।

दुर्जन अपने कुकर्म से कभी नहीं मुड़ते और उनको पास निरपराधी की क्षमा कुछ नहीं भाती. न उनके अपने मन की साखी कोई काम कर्ती है और न दृष्टांत और प्रमान उनके कठिन मन मे प्रवेश होती है.

---

१ दृष्टांत

हथ्वार और भेड़ीका.

एक भेड़िया किसी नदीके तीरपर पानी पीता था. अकस्मात् एक भेड़ीके बच्चेपर उसकी दृष्टि पड़ी जो उस्से बहुत् दूर और नीचे की ओर उसी नदीका जल पीता था. और वोंहीं अपना कुसरूप मुख खोले हुए उसके निकट आयके बुरा भला कहने लगा. पहली बात चीत उसकी यह थी. अरे छिछोरा तेरा यह मुह है कि जिस जल को मैं पीता हूं उसको तू गदला और मटीला करे? तब बच्चा वेबस होय कहने लगा यह बात मेरे ध्यान मे नहीं आती. अजी! मेरा इतनी दूर से नीचे की ओर का पानी पीना किस रीत नदीके पानी को ऊंचे की ओर हुलावेगा. और उस ओर का पानी गदला करेगा? इस् बात पर भेड़िया झुंझलाके बोला. मुझे बूझ पड़ता है कि तू अपने बड़बड़ाने से चुप न रहेगा जब लग तेरी खाल खींच कर उस्मे भुस न भरेंगे. ओगत तेरे पिता की इससे छः महीने आगे हुई- क्योंकि उसने भी तेरी रीत अपने बड़ोंके संग बातेंकी थी सो तुझे भी सुर्त होगी तब भेड़ी का बच्चा बिपत् का मारा डर्ता कांपता धीरेसे बोला. अजो! आप निश्चय प्रतीत कोजिये कि जिसकी बात आप कहते हैं उस समयमे मैं जन्मा भी न था. तब भेड़िया कहने लगा अरे निर्भय कुछ भी तुझे लाज और संकोच नहीं? हमारे घराने की शत्रुता तेरे जात के सिरा

की रज्ञमे पैठी ऊई है और अब तुमको अपने बाप दादेकी प्रभुता का फल भोगना होगा. इतना कह निश्चिंत होय उस निरपराधी को विदारन करके खा गया.

परीक्षा.

अर्थात् कुजात लोगों के निकट अन्याव करनेके लिये बिवाद का न्यून नहीं. और प्रत्येक अन्यावके लिये क्षमाका उलांघना उनके पास बऊत सहज है.

४ दृष्टांत
मेंडक और चूहे और चीलका.

एक समय मेंडक और मूसे की बड़ी लड़ाई राज करनेके विषयमे किसी झील पर ठहरी. पर ठीक उसी समय में कि दोनों ओर के दोनों साहसी रनके पट पर मे अतिही लाज और पोढ़पनसे लड़ते थे. इतने मे एक चील पवन सी उन दोनों मल्ल पर टूटी और उठाले गई. और बर्सों की वातें और झगड़ों को एक छिन में मिटा दिया.

उपदेश.

बिवादके अंतमें बऊत करके दोनों ओर को हानि है नहीं तो सब रीत की प्रभुता और बिवाद को ईश्वर एकपखमें पर्चा कर्ता है.

५ दृष्टान्त

बाघ और रीछ और लोमड़ीका

एक बाघ और रीछ एक हिरनके बचेके लिये जिस् को उन्होंने मारा था बेरलग लड़ते२ थक गए. निदान चकनाचूर होय के एक दूसरे से अलग ऊए तो थोड़ा सुस्तावें. इतने में एक अति चतुर लोमड़ी उस ओर से आय निकली. और जब उन दोनों लड़नेहारों को बऊत ही चकनाचूर और निर्बल देखा तब चेटसे उस. आखेट को उठाय अपनी बाट धरी. बाघ और रीछ जो दोनों निर्बलता से पड़े देखते थे और कुछ नहीं कर सके उस समय मोह से यही कहते थे. हम दोनों निर्बुद्धि इस आखेट के लिये अपने में लड़े और इतना भी न बूझे कि दोनों मिलके बांट खावें. जिसको अंतमें वह लोमड़ी लेगई और दोनों को ठगाय गई.

उपदेश.

बऊत् करके सब वस्तुके लिये लड़नेवाले को लोभ थोड़ी वस्तु से भी निरास कर्ता है.

६ दृष्टान्त

कुत्ते और उसकी पर्छाईं का.

एक कुत्ता मांस का टूक मुंह में लिये एक निर्मल जल की नदी से उतर्ता था. सो अपनी पर्छाईं को जलमे देखके यह ध्यान किया कि एक दूसरा कुत्ता उसी

मांसका टूकलिये जल मे है. तब उस मांसके लोभने उसको ऐसा बेचैन और उसके नेत्र को ऐसा अंधा. बनाया कि बिना विचारे उस भ्रम की पर्छाईं पर मुह मारा और अपने उपस्थित वस्तुको भो गवांया.

उपदेश.

लोभी लोग अधिक उपार्जन करनेके उद्योग में वृथा अपनी उपस्थित वस्तु को भी गवांते हैं.

७ दृष्टांन्त

बाघ और कई पसुओं के अहेरका.

एक बाघ और रीछ और ऊंड़ार और लोमड़ी जो आखेट की खोज में थे और आपस में एक मत ऊए कि जो आखेट मे हाथ लगे तिसका समान चार भाग किया जावे. इतनेमे एक पाढ़े को उन्होने पकड़ा और अवयवके प्रमान चार अंस किया परंतु जब प्रत्येक अपना भाग लेने लगे तब बाघने कहा ठहरो और सुनो वह अंश मेरा है इस लिये कि मै सब पर बड़ाई रखता हूं. और दूसरे का भी सत्य भागी मैं हूं क्योंकि इस आखेट के पकड़ने मं मैंने बड़ा दुःख भोगा है. और तीसरा अंस इस हेत से मेरा हो सक्ता है कि मुझे उस की चाह है. और मेरे चौथे भागके सत्य भाग मे जो तुम लोगोंको कुछ संदेह वा और कोई बात होय तो आओ हम चारों मिलके युद्ध करें इसमे जो प्रबल होय सो लेवे. इसमें इन तीनों निरुपाय के पास ऐसे महा बली

के वचनका कुछ उत्तर न था. अंत को सभोंने चुप चाप अपनी बाटली.

सिक्षा.

हम लोगों को उचित है कि ऐसे मनुष्यके संग जो अपने से प्रबल है उसके साभे से डरें क्योंकि प्रबल लोग अपना ही लाभ देखते हैं. और उनको निर्बल लोगों का. सत्य भाग नष्ट करने से किंचित् भय नहीं होता.

८ दृष्टान्त

भेड़िये और सारसका.

एक भेड़िया कि उसके कंठमें एक हाड़ अटका था. इसमें वुह निरुपाय हाय के किसी सारस के निकट गया और उसको इस अवधपर एक उत्तम प्रतीकार देनेका बचन दिया कि वह उस हाड़को निकाले. सारस प्रसन्न हुआ और तुर्त उस हाड़को निकाला. फिर अवधका प्रतीकार मांगा. तब भेड़िया मुंह बनाके कहनें लगा तू कैसा आंख का निर्लज्ज और निर्भय है. तूने अपने लंबे गले को भेड़ियेके मुह में डाला था और ऐसी डरौनी जगह से पूरा और समुचा बाहिर निकाला यह थोड़ा नहीं है जो तू प्रतीकार कीआ सारखता है.

उपदेश.

अन्यायी और निर्दय लोगोंके संगसे जा लाभकी ठांवमे हमको घाटा न होवे तो यही बड़े लाभ और धन्यवाद

का ध्यान है. अथवा दूसरी रीत से कहिये कि जो लोग ठग और अन्यायी होते हैं उनमें अधर्माचार वा अस्तुति की हीनता यह सब अशुभ गुन भी पाए जाते हैं.

९ दृष्टान्त

गवांर और सर्प का.

कहते हैं कि एक बरस बड़े जाड़े मे किसी दयावान गवांर ने एक सर्प को देखा जो सीतके मारे एक उपबन की टट्टीके नीचे अकड़ गया था और उसकी दुर अवस्था पर दया करके उसको भूमसे उठायके छाती से लगा लिया तब उसने देहके तापसे फिर चेत पाया. पर वह दुःख देनेहारा जन्तु कि उसने उसी समय अपने शरीरमें बल पाया और उठा सबके पहले उसी गवांर की ओर कि जिसने उसके प्रानकी रक्षा की थी फुफका मारने लगा. तब वह यह गति देखके बोल उठा ए अधर्मी अभागे! तेरा खोटा मन अपने भले करनेहारेके दुःख देनेमें प्रसन्न होता है? थूक पड़े ऐसे अशुद्ध बीज पर!

उपदेश.

कुजात से सदा भय करते रहिये और विससे कभी अस्तुतकी आसा न रखिये·

१० दृष्टान्त

व्याघ्र और गधव का·

एक ढीठ गदहा ऐसा निर्भय और अहंकारी हो गया कि बाघसे हंसी और ठठोली की इच्छा की पहले पहले

बाघ ने थोड़ा अप्रसन्न होयके उस अचेत्को अपना दांत दिखाया. पर थोड़े विचार के पीछे उस बनके राजाने मुस करा कर कहा कि तू तो. गदहा है जो तेरा मन माने सो कह. परंतु मनमे सुर्त रख कि तेरे ढीठपने और छोटाईका हेत है इस लिये तेरा अशुद्ध शरीर अबलग बचा है.

सिक्षा.

निर्भय लोगों की ढिठाई से क्रोधित होना गुनवान की अवस्था के योग्य नहीं. इस लिये कि उनके संग सामना करनेसे उसका अपमान होता है.

११ दृष्टान्त

दो चूहेका एक गांवका और दूसरा नगर वासी.

एक गांवके मूसेने किसी नगर के मूषक का निमंत्रन किया और वह उसका पुराना मित्र था और प्रत्येक वस्तु उसग्राम की योग्यता के समान. अर्थात् फफूंदी लगी हुई रोटीके छिलके पनीरके टूक उससे ऊपर जौका परौंठा और सड़ा ऊषा मांस इत्यादि जो मिला था सो निमंत्रन में उपस्थित किया. नगरके चूहेने नगर की भली सिक्षा के हेतसे इन् सब वस्तुको कुछ थोड़ा न जाना तौभी सभाके अंतमें यह बात कही कि इस दुःखसे दिन काट्ना हमारे देसके योग नहीं. तिस पीछे अपने संपत् से रहने का थोरा अपने मित्रके निकट प्रकाश करके उसका न्योता किया इस लिये वह उसके संग नगर में आवे. इसमें गवांर मूसेने उसका निमंत्रन

अंगीकार किया और वह दोनों वहां से चले और आधीरातके लग भग अपने ठिकाने पर पऊंचे. तब नगर बासी चूहेने अपने पाऊनको पहले अपना भण्डार और पाक शाला और दूसरी ठांव जहां२ उसने सामग्री के ढेर रक्खे थे सो सब दिखाए. फिर उसको अपनी बैठकमे लेगया और वहां उन दोनोंने उसी दिनके निमंत्रन के कई एक प्रकार की सामग्री जो बच् रही थी सो पाई. नगर बासीने अपने पियारे पाऊनके लिये प्रत्येक सामग्री जिसको उसने स्वादिक और उत्तम जाना उसके सन्मुख लाय धरी और दोनों बड़े सुखचैन में रहे. गांवके चूहेने न कभी ऐसा सुख चैन देखा था न सुना था. अपने ऊपर बऊत शुभ बाद किया इस लिये कि उसके बड़े भागने उसको वैसी कंगाल अवस्थामे ऐसे राजाके समान गतमें पऊंचाया. वे दोनों उस आनंद और प्रसन्नतामें थे अकस्मात् सब घरके दार एक ही बेर खुल गए और एक दल सेवक का चीकते ऊए भीतर आया कि उस बचे ऊए खानेको खावे. उसका शब्दसुन्ते ही दोनों की सुधबुध जाती रही विशेष गवांर चूहा मानों ठंडा हो गया क्योंकि उसने इस रीतकी भीड़ और लोगों की चिल्लाहट् बऊत थोड़ी देखी थी तिसपर किसी ढबसे प्रान बचाने के लिये डर्ता कांपता ऊआ घरके एक कोनेमे जाय छिप रहा यहां तक कि वे सब बाहिर निकल गए. इतनेमे जब घर सूना ऊआ तब उसने झट कोनेमे से निकल अपने मित्रसे यह बात

काही जो आपकी भांत२ की सामग्री का यही स्वाद और संपतके जीवन का यही फल है तो आपको बढ़ती होय. अब दास अपने कंगाल झोंपड़े में सिधारता है जहां निर्भय और सुखसे सूखा टुकरा चबाना लाख बिसवे उत्तम है इस नाना प्रकारके भोजनसे जिसमें ऐसा भय और घबराहट् है.

उपदेश.

सुख चैनका सूखा टुकरा उत्तम है नाना प्रकार के द्रव्यसे जिनमे ऐसी घबराहट् और दुःख है.

१२ दृष्टान्त

डोमकाग और काग का.

एक डोमकाग किसी सीप को अपनी चोंचसे धर्ती पर पटका था जिसमे वह टूटे और टूटती न थी. इतने में उसको एक कागने यह परामर्श दिया कि तू इस को चोंचमे लेके दूर लग बतास में उड़जा और वहां से किसी पथ्थरेली भूम में इस को छोड़ दे. तब यह सीप आपसे आप टूक२ हो जायगी. डोमकागने बुद्धिवानोंके सदृश परामर्श को माना. परंतु पवनके ऊपरसे नीचे आयके क्या देखता है कि सीपतो टूट गई है और उसमें का गूदा दूसरा संगी जो उसका परामर्शी था सो ले गया.

सिक्षा.

जब अपनी मंबके लोग किसी दूसरे को परामर्श वा सुमंत्र

ना देत हैं तो उसमे अप्ने गंव की वार्त्ता भी गोपन रखत हैं.

१२ दृष्टांत

डोमकाग और लोमड़ीका.

कहते हैं कि एक डोमकाग एक चिकना चूपड़ा और सुखादिक चारा मुह मे लिये किसी वृक्ष पर जा रहा था इतने मे दमनकके तुल्य एक लोमड़ी उसको देखके ललची और चाहा कि किसी रीतसे उसके चारे को अपने हाथ में लावे. तव वह चतुरी लोमड़ी उस डोमकागका गुनानुवाद इस रीतसे बखान कर्ने लगी ए पियारी मूरत ईश्वर जानता है जैसा तेरा उत्तम सुंदर रूप और रंग है और तू ऐसी ईश्वर की शक्ति है कि जिससे सारे लोग भला सगुन और मंगल विचार लेते हैं. जो मैने आज लगभी तेरा शब्द नहीं सुना परंतु ऐसा मन मोहन है जैसे तेरे और सब घट प्रघटके गुन मन मोहन हैं तो निश्चय है. कि इस लोकमे कोइ पंछी तेरी समानता नहीं कर सक्ता है. इस पिरीरी की बातोंमे उस वनके कौवे के मनमे ऐसा प्रवेश किया कि झट् अपना मुह गायनके लिये खोला. और मुह खोल्ने ही अकस्मात् चारा गिर पड़ा और वह लोमड़ी झट् उसको खा गई. और हंसके यह बात बोली कि इस दासीने यह अस्तुत और गुणानुवाद तुम्हारे रंग रूपका किया था न तुम्हारी बुद्धि और न ज्ञान का.

उपदेश.

सुर्त रक्खी चाहिये कि क्षुद्र जातिके मनुष्य जब विरोरी करते हैं तब एक न एक अपनी प्रार्थना उसमें मिलाते हैं, इसलिये उचित है कि उनकी बातों पर कभी मन न लगाइये बरन कदाचित् न सुना चाहिये.

१४ दृष्टांन्त

बूढ़े बाघका.

एक बाघ जिसने अपनी जुवा अवस्था और पराक्रम के दिनोंमे बहुत लोगों पर अन्याय और उपद्रव किया था अंतको वृद्ध अवस्था और दुर्बलताके हेतसे उनके निकट अतिही नीच और छिछोरा बूझ पड़ा इसलिये बनके सारे जन्तु कितेक अहंकार के हेतसे और केते पलटा देनेकी इच्छासे उस वृद्ध बाघको छेड़ने और दुःख देने लगे. परन्तु किसीके छेड़छाड़से उसको इतना दुःख न हुआ जितना एक गदहे कीलात्से हुआ था कि जिसने उस जंगल के राजाको बेबस बूझके मारा था.

परीक्षा.

जो राजा और धनवान लोग आपना राज और धन रहते ऐसे समय में मनुष्यके मन को बसमे नहीं करते और पराए लोगोंको अपने उपकारसे अपना नहीं बूझते हैं तिनका निर्धन अवस्था और निकम्मे समयमे कोई मित्र नहीं होता और प्रधान लोग नहीं रहनेसे क्षुद्र लोगोंके हाथसे हेठे हो सक्ते हैं.

१५ दृष्टान्त

गर्धब और कुत्तेका.

किसी भले मानसने एक छोटे सुंदर कुत्तेको पाला था और उसके भले खेलने और कूदनेसे बज़त चाहता था और इस हेतसे कुत्तेको बज़त पियार कर्ता था और अपना मित्र जान्ता था. और एक गदहा जो बोझ उठाने के लिये उसके घरमें गया था अकस्मात् उस कुत्ते का मान और पियार देखके उसके मनमे आया जो मैं भी अपने स्वामीके सन्मुख उसकी रीत दौड़ूं और बिन्तीसे पूंछ हिलाऊं तो निश्चय है मै भी वैसाहि पियारा और मानी होऊंगा. परन्तु एकही लकड़ीकी मारने उस लंबे कानवालेके कान अच्छी रीत खोले और बज़त सावधान किया इसलिये कि उसके खेलने और कुत्तेके पूंछहि लाने मे बड़ा बीच है.

उपदेश.

देखादेखी क्रियाके साधनेहारेको अर्थात् जो औरोंको एक काम कर्ते ज़ए देखके बिना समझे बूझे आप भी वैसा काम कर्ने लगते हैं. उनको चाहिये और निश्चय कर्के माने कि प्रत्येक कर्म प्रत्येक मनुष्य से भला नहीं देखाई पड़ता बरन बज़त सी बस्तु एक मनुष्यमे गुणके तुल्य है और दूसरे मनुष्यने दोषके समान है.

१६ दृष्टान्त

बाघ और मूसेका.

किसी दयावन्त व्याघ्रके हाथमे एक दुःखिया मूषक आगया था. जब उसने मुक्त की प्रार्थना उस बाघसे की तब उस कुलवन्तने छोड़ दिया. थोड़े दिनके पीछे अकस्मात् वही बाघ किसी फंदेमें फसा तब वही क्षमा कर्के जो उसनें मूसे की गतमें की थी उसके काम आई क्योंकि उसी चूहेने जब व्याघ्र को फसा देखा और उसकी अगली दया की सुध की वो तुर्त उस फंदे की गांठको अपने चोखे दांतोंसे काटने लगा और थोड़ी बेरमे उसके टूक टूक कर अपने हितकारी को उस जाल से छुड़ाया.

उपदेश.

अर्थात् इस जगलोक में सब श्रेष्ठ और नीच और धनी और निर्धन एक एकके चाहने हारे हैं.

१७ दृष्टान्त

एक रोगी चील और उसकी माताका.

एक रोगी चील अपनी माताके रोने और चिल्लाहट्को देखके कहने लगी, ए माता! तुम मेरे लिये ईश्वरसे प्रार्थना करो इस रोने पीटनेसे तुमको क्या लाभ होगा? तब उसकी माताने उत्तर दिया हाय मेरे बच्चे मैं किस मुहसे उस अन्यायके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करूं जिसने कितेक बार आपही उसके बलदानके खानेको

नष्ट किया है जिसने उसके मारनेके योग्य वस्तुको कितेक बार आपही संहार किया.

उपदेश.

जो लोग अन्यायके समान जीते हैं सो अति उपद्रवितके तुल्य अंतको मर्ते हैं.

१८ दृष्टान्त

अबाबील और भिन्न जातके पखेरू.

एक अबाबील पंछीने जो आगम बिचार और चतुराईमें प्रसिद्ध है किसी किसानको पाटबोते देखके कितेक छोटी चिरैयों को अपने निकट बुलाय उन सभोंसे कहने लगी इस मनुष्य को देखो क्या बो रहा है और इसी अशुभ बीजके वृक्षसे सब चिड़ी मार अपने फंदे और जाल बनाते हैं चलो हम सब मिल इस बीजको तुर्त बीन लेवें. उन चिड़ियोंने अबाबीलके बचनका कुछ भय न माना यहां लग कि उन बीजों से चारे और पौधे निकले फिरभी उसने कहा अब भी जो चलो तो मिल जुलके निर्बल पौधोंको उखाड़लें. तौभी उन्होने उसकी बातका कुछ ध्यान न किया यहां लग कि वही पौधे सनके समान ऊए और उनको सोर मोढ़ी भई और अब उस बुद्धिवान अबाबीलने देखा कि मेरा उपदेश अकारथ गया और किसीने उसको कहूं प्रमाण किया न थी तब उसने सारे भांतके पखेरू को बनमे छोड़के उनके संगसे अलग भई और तभीसे बस्तीमे नगर का बास अंगीकार किया. अब देखो अंतको वही

पाठ काटे गए और सड़ाके उनकी छाल निकाली फिर उसी का फंदा और जाल बनाया गया और उन्हीं चिड़ियोंको कि जिन्होंने अबाबील की सिक्षा और उपदेशको तुच्छ बूझके ध्यान न लगाई थी अबाबीलने उसी फंदे मे फसा हुआ और यह कहके पछताते देखा कि क्यों उस बुद्धिवानकी सिक्षा पहले न सुनी जो हम सुन्ते तो अंतको हमारी यह गत न होती.

चतुराई.

ग्यानीलोग प्रत्येक कर्मके आरंभसे उसके अंतको देखते हैं और बीजहीसे उसके फलकी मिठास वा कड़ुवाहट् बूझते हैं. और जब उपाय हाथसे जा चुका है तब सारे निर्बुद्धि यही कहते हैं जो पहले सावधान होते तो अपनी मूरखता पर न रोते और न पछताते.

१८ दृष्टान्त

मेंडकों का जिन्होंने एक राजाके लिये प्रार्थना की थी.

एक मेंडकने सर्वत्यागीके समान अपने जीवनसे विरक्त होयके ज्युपीटरसे अर्थात् जो यूनान देशके देवताओं में से एक देवता है एक राजाके लिये प्रार्थना की. ज्युपीटरने उनकी परीक्षाके लिये आज्ञा की कि एक लक्कड़को इस तालमें जहां वे रहते थे गेरदें. उसके पानीमें गिरनेकी धमक और भयने पहले तो उनको ऐसा डराया कि सबतालके भीतर छुप गए और डरसे माथेको उपर न निकाल सके. एक उनमें से जो अति साहसी था सिर

उपर निकालके क्या देखता है कि राजा निः शब्द पड़ा है. तब उसने अपने भाई बंधुको बुलायके राजाकी गत दिखलाई अबवे सब निर्भय होय उसपर चढ़के इधर उधर फिराने लगे. और उतना भय और शंका जो पहले उनके मनमें इस राजासे था सो अब अपमान और ठठोली बिन कुछ न रहा तब आपसमें कहने लगे कि यह राजा तो अतिही भद्दा और निकम्मा है अब दूसरे राजाकी प्रार्थना की चाहिये. अबकी बेर ज्युपीटर ने उनके राजके कारन लगलग नाम एक पक्षी को भेजा उसने उनसे अगले राजा का पलटा अच्छी रीत लिया और जो कोई उसके सन्मुख उनमें से आता तिनको वह स्वच्छंद निगल जाता. निदान उन रहे सहे उपद्रवित प्रजाने बे बस होयके ज्युपीटर के निकट फिर इस ब्योरेका भाषा पत्र भेजा इस लिये कि किसी दूसरे दयावंत राजाको उनके लिये स्थापित करे वा उनको अपनी अगली सर्वत्यागी अवस्थामे छोड़ दे. परंतु ज्युपीटर ने उसके भाषा पत्र को न मानके ऐसा कहा कि वुह तो उस विपत् और आपदाको आपही बुलायके अपने माथेपर लाए हैं अब उनको सहना चाहिये इस लिये कि यही उस प्रार्थना का प्रतीकार है और बिना सहनेके दूसरा उपाय नहीं है.

सिक्षा.

जिनके मनमे संतोष नहीं उनको संसार को कोई गत प्रसन्न नहीं रख सक्ती फिर हम जो उपस्थित गतसे

प्रसन्न न होवें और नित नई अवस्था की बासना करें तो दुर्गतमें उचित है कि हम अपने तईं धिक्कार करें क्योंकि हमने उसको इच्छा करके मांगा था.

२० दृष्टान्त

चील और बाज और कपोतोंका.

एक कपोतके झुंडने जो चीलके अन्यायसे बेबस हुए थे उन्होंने किसी बाजसे प्रार्थना की कि उनकी रक्षा और सहायता करे. बाजने अंगीकार किया परंतु रक्षक और सहाई की रीतसे चीलके पलटेमे दो दिनमे आपही ऐसा उत्पात उन दुःखियों पर प्रारंभ किया जो उस चीलने दो महीनेमें न किया था.

चेतना.

यह अति भय की ठांव है जो हम अपने उपद्रव सहनेके समयमें ऐसे मनुष्य को रक्षाके लिये बुलावें जो बड़ा बलवान और अन्यायी है.

२१ दृष्टान्त

कुत्ते और चोरोंका.

कई चोर्ट्टे किसी के घरमें चोरी को गए थे. तब उसघर का बिस्वासी कुत्ता उन्हे देखके बहुत चिल्लाया और भोंकने लगा इसमें उन चोरोंमेसे एक ने इस कुत्ते को ढाढ़स देने की इच्छा करके एक टुकड़ा रोटीका उसके सन्मुख फेंक दिया. पर उस बिस्वासी कुत्ते ने उनसे मेल न किया और कहने लगाकि मैं तुम्हारी घूस न लेऊंगा और अपने स्वामी से कृतघ्नताई न करूंगा, क्योंकि यह बड़ी

ही कृतघ्नताई है कि एक टुकड़े रोटीके लिये उसके बर्सोंका पुन्य खोऊं और जीवन भर का सुख और बिश्वास डुबोऊं.

उपदेश.

जो कोई चिरोरी से हमको मीठी बातें कहे और भेट दिये आय बिना इस बातके कि हमारा सच्चा नांटा कहने और देनेवालों पर ठहरा होवे तो हमको उचित है कि ऐसा ठांव में संदेह करें और बूझे कि उसमें कोई मंतकी बार्त्ता छिपी ऊई है.

२२ दृष्टांत

भेड़िये और सुअर्नीका.

एक भेड़ियेने बड़ी दया और अति मीठे बचन से किसी सूअर्नीके संग जो जम भग बच्चे देने पर थी कहा कि तेरे बच्चोंके रोग सेवामें मैं अपने मनसे उद्योग करूंगा सुअर्नीने इस बात की अस्तुत मुह से की और उससे कहा जो दूरहीसे मेरे ऊपर क्षमा दृष्ट रक्खोगे तो तुम्हारी बड़ी दया प्रकाश होगी. और जितना आप हमसे दूर रहेंगे उताही हम भी आपके उपकारित होवेंगे.

चेतना.

कोई जाख उससे अधिक डरौना नहीं जैसा कि दुःख दायक शत्रु भली बासनाके रूपसे मढ़के हमारी बाटमें रखता है अर्थात् स्पष्ट शत्रुसे हमको मित्रता दिखानेवाले शत्रुसे अधिक डर्ना चाहिये.

२३ दृष्टांत

पहाड़की कोखकी पीरका.

एक बेर किसी देशमें यह बात फैली कि एक बड़े पर्वतको कोखमे पीर भई है अब तुर्त उसमे से कोई बड़ा अचरज उत्पत्ति होगा. इसमे आसपासके सारे लोग वहां बटुरे तो देखें कि ऐसी बड़ी माताके पेटसे वैसा बड़े डीलका संतान जनमता है. पीछे से क्या देखते हैं कि एक छोटी सी मुसिया उससे से निकली.

शिक्षा.

यह इतिहास ऐसे बड़ाई करनेवालोंकी अवस्थाके योग है जो लोगोंकी आशाको बड़े बड़े उपकार करने और प्रसाद देने की बोधसे बढ़ाते हैं और संसारके मनुष्यको भलाई करनेका भरोसा देते हैं फिर अंतको अपने नीचपनसे लोगोंके ठाहीं हंसोड् और छिछोरे कहाते हैं.

२४ दृष्टांत

गर्धब और उसके कृतघ्न स्वामीका.

एक दुखिया गदहा जो बुढ़ापे और बहुत दुःखके हेतसे अति अशक्त और दुर्बल हो गया था. एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि एक भारी लादीके नीचे कि जिसको वह बेबस होय उठा न सका बैठ गया तब इस हेतसे उसका निर्दय और कठोर स्वामी उसको मारने लगा. तब वह दुखिया गर्धब रोय पीटके बोला हाय इस संसार का उपकार भूलने हारे की यही रीत है कि जो बेबस

श्रीय कोई एक बेर अपराध करता है तो वह बर्सोंके उपकार और सेवाको डुबो देता है.

२५ दृष्टान्त

एक बुढ़े कुत्ते और उसके स्वामीका

एक कुत्ता जिसने जुवा अवस्थामे भांत भांतके आखेट और खेल दिखाके अपने स्वामीको बहुत प्रसन्न किया था और रखवाली और बिलासका काम बहुत किया था जब अपने बुढ़ापे से अशक्त हुआ तब मारखाने और झिड़कियां सहने लगा. निदान द्वारके बाहिर निकाला गया जब उस दुखिया का यह समय पहुंचा तब एक दिन अपने निर्दय स्वामीसे रोयके कहने लगा ए स्वामी! मेरा मन वैसाही है जैसा जुवा अवस्था में था परंतु अब मैं दुर्बलताके हेतसे आपकी सेवाके योग्य नहीं हूं. अब मेरा न्याव आपके हाथ है परंतु जो बलहीन होनेके हेतसेपीटना उचित है तो बूढ़ापें के कारन मार-डालना भी ठीक है.

उपदेश

२४ और २५ दृष्टांत का.

बिलासी और सच्चे सेवक को बुढ़ापे वा दुर्बलतासे छोड़देना वा और किसी रीतका दुःख देना ऐसे हेतसे कि फिर वुह किसी काम करनेके योग न रहे तो यह बड़ी कठोरता और कृतघ्नताई हैं.

२६ दृष्टांत

गदहे और बन मानुष और छछूंदरका.

एक दिन एक गर्धव और बन मानुष आपस में अपने बुरे भागको भींख रहे थे. गदहा रोता था कि उसको माथे पर सींग नहीं. और बन मानुष सोग कर्ता था कि उसको पूछ नहीं. इसमे एक छछूंदर यह उनका बृथा भींखना देखके बोल उठी चुप हो रहो काहेको झंखते हो धन्यबाद करो उस धनका जो तुम्हारे पास है. देखो कि मैं दुखिया छछूंदर तुमसे भी अधिक अभागी हूं जो आंख भी नहीं रखती हूं

२७ दृष्टांत

खरहे और मेड़क का.

एकबेर कितने खरहे आपसमे एकट्ठे होय अपने जीवन को झंखने लगे और कहने लगे कि हम सारे बनके पशुओंसे अशुभ और अदिष्टी हैं जो मनुष्य और कुत्ते और गिद्ध और लाखों जंतुके भयसे सदा भयवान और कंपित होय जीते हैं. क्योंकि वह जब चाहते हैं तब हमे आखेट कर्ते हैं और हमारे पास बिना भागने के कोई उपाय और उद्योग नहीं. इसलिये हमको चाहिये कि ऐसे बिपत्के जीवनसे अपनेको एकही बेर मारके मर जावें. संक्षेप इस बातको आपसमे अच्छी रीत ठाना और बिचारा और निदान यही मत ठहरी कि चलो हम सब बूड़ मरें. इसी बात पर सारे उठ खड़े हुए और एक भील की ओर जो वहां से निकट था

एकट्ठे होयके चले और उनकी भीड़ भाड़ देखतेही उसी भीलके छोटे बड़े मेंड़क जो तट पर थे सो सब अतिभय और व्याकुलतासे भट् पट कूदके भीलमे जाय छिपे इतनेमे एक खरहा जो उन सब खरहोंसे बड़ा बुद्धिवान और ज्ञानी था यह वृत्तांत देख बोला मित्रो हमको चाहिये कि थोड़ा धीरज धरें और एकही बेर क्रोध और शोक से अपने को न मारें. हमारा जीवन जो कठिन है परंतु इतना बिपत् का मारा नहीं है जैसा हम बूझते हैं इसलिये कि संसारमे और भी जीव हैं जैसे मेंड़क कि हमने अभी देखा जो हमसे बहुत डर्ते हैं जैसे हम औरों से डर्ते हैं.

उपदेश
२६ और २७ दृष्टांन्त का.

हमारे योग नहीं जो ईश्वर की आज्ञा वा दैवाधीन विषय में विपरीत बाद करें वा रोवें और भीखें क्योंकि सकल वस्तु जो जिसके योग है वही उसको दीगई है. अब हमको उचित है कि सब समय प्रसन्न रहें और उसका धन्यवाद करें.

२८ दृष्टांन्त
भेड़िये और बकरी और उसके बच्चेका.

एक बकरी जब भोरके समय चर्ने जाती थी तब अपन बच्चेको यही बचन कह जाती जब लग मैं न आऊं तब लग कभी द्वारको न खोलना. अकस्मात् एक भेड़िया इस बातको घरके पिछवाड़े सुन्ता था और बकरीके जातेही

उसी चीती वाली बोकरी द्वारपर पुकारने लगा कि बाड़ खोल तेरी माता भीतर आवे. पर यह बचा उसके छलसे सावधान था कहा पहले तुम अपनी दाढ़ी मुझे दिखाओ तिस् पीछे घरमें आओ.

परीक्षा.

ठग जो एक बातमें अपनेको छुपाता है पर दूसरे बचन से पकड़ा जाता है.

२८ दृष्टान्त

कुत्ते और भेड़ी का.

एक कुत्ते ने किसी भेड़ीपर कचहरी में भाषा पत्र दिया इस लिये कि इसने उसको कई मन गेहूं उधार दिया था और वह मुकर जाती है. इसमें अर्थीने रीतके समान भेड़िया और चील और गदहा इन् तीनों साखीसे अपना दाया उस पर ठहराया और प्रतिवादीको खरचा सहित रुपैया देना पड़ा. फिर अर्थीने अन्यायसे उसके देहके रोएं बेचवायके अपना रुपैया भर लिया.

सिक्षा.

जब साक्षी भूठो साक्षी देवें तो न्याय और विचार कैसे होवे. और सच् है कि जब विचार कठोरता और प्रबलतासे होवे अर्थात् बली और प्रबलकी रक्षा की जावे तो सत्यबादी और निरपराधी की ओर अवश्य अन्याय होगा.

२० दृष्टांत

गवांर और सर्प का.

किसी गवांरके बालकने एक सर्पकेऊपर जो उसके घरके पास छिपा बैठा था उस पर पांव धर दिया. तब सांपने क्रोध से उसे डसा और वह बालक तुर्त मर गया. गंवार संतान के शोक से तो कुछ और उपाय न कर सका, परंतु एक पाथर उठायके सर्पको मारा और उसके घावसे यद्यपि सांप नहीं मुरा पर घाव का चिन्ह उसके शरीरमें बना रहा. फिर थोड़े दिनके पीछे उस गंवारने चाहा कि उसके संग मित्रता और मिलाप करे. सर्प यह बातें न मानके कहने लगा कि जब लग तेरे बचेके अकस्मात् मृत्युका शोक मनमें है और पाथर के घाव का चिन्ह मेरे शरीर में रहेगा तब लग आपस में मित्रता कभी न होगी.

उपदेश.

हमको चाहिये कि बैरीके संग वा पुनः और और प्रतिज्ञा करने में अति सावधानी करें.

२१ दृष्टांत

लोमड़ी और सारस का.

एक बेर लोमड़ीने सारसका न्योता किया, और भांत २ के खाने की सामग्री रींधके सहनकों मे लाय धरी. और उसको आपही आप चाटने लगी और उस प्रधान पाऊन से कहने लगी तुम तो खाओ यह सब आपहीके लिये बना है. जब सारसने समझा कि मुझको इसने ठगा.

परंतु इस अपमान की बातको विषके समान पी गया और बिदाईके समय लोमड़ी से कहा कि मै ने तो दिनको तुम्हारे यहां खाया तुम आज सांझको मुझ दुखियाके घरमे ब्यालू कीजियो. पहले तो लोमड़ीने न माना पीछे सारसके बड़त कहें सुनेसे मान लिया. तब नाना प्रकार का भोजन लंबे गलेकी सिसीयोंमें धरा गया और उसको सारस अपनी लंबी चोंचड़ालके सहजसे निकाल निकाल खाता था. और कहता था ए बीबी बिना अमके जिस रीत अपने घरमें खाती हो उसी भांत यहां भी खाओ. लोमड़ी ने इस बातके भावसे ब्योलेकी गत बूझी और तुरंत वहांसे उठी और मनमें लजायके कहन लगी कि इस सांझके भोजन से वही सवाद पाया जैसा मेरे यहांके भोजन से उसने सुख पाया था.

परीक्षा.

जब कभी लोग उसी छोटे पयानेसे नापके देते जाते हैं कि जिससे वह दूसरोंको नाप देते थे तो वह बड़े निर्बुद्धि कहाते हैं.

३२ दृष्टांत

लोमड़ी और मूरत् का.

एक लोमड़ी किसी मूरतवाले की हाटमें जाय सारी मूरतों में से एक मूरतको कि जिस में उसके बनाने हारेने बड़ा काम कियाथा अतिही अचम्भेसे उलट् पुलट् कर देखने लगी. तिस पीछे यह कहा वाहवाह तू कैसी मन मोहनी

और पीयारी मूरत है परंतु बड़ा शोक है कि तू भीतर से बिना गूदेके और बाहिरसे बिना चावके है.

चेतना.

सुन्दतां और सुघड़ईसे सब ठांवमें कोई भागवान और धनवान बूझ नहीं पड़ता इस लिये हमको नहीं चाहिये कि घटको पर घटके समान जानें.

३२ दृष्टान्त

भुचंगेकी छवाये का.

एक भुचंगा जो अपनीही बड़ाई पर मतां था एक बेर कितेक रंगीले पंख अपने पंख पर लगायके और अपने को अति सुन्दर बनायके बड़े ठाठ और पियारसे इधर उधर दिखलाता फितां था और दूसरोंको छोटी दृष्टिसे देखता था. परंतु उसकी भांतके पंछी जो पहले उसको सुन्दर देखके डाह करें थे अंतको उसकी बनावट का थोरा बूझके उन रंगीले पंखमेंसे उसको उघाड़ा और जिन् जिन्के वह पंख थे सो उन सभोंने ले लिया. तब वह निर्बुद्धि अपनी अगली अवस्था देख अपने और पराए के सामे बड़तही नीच और बुरा ठहरा.

समाचार.

जब किसीको कंगालपन और अहंकार होता है तो उसको बड़तही अपमान करता है नहीं तो कंगली का सहना भी अच्छा देता है.

१४ दृष्टांत

चीउंटी औार माखी का.

एक बर चीउंटी औार माखीमे आदर मान औार सुख चैन के विषयमें झगड़ा ऊआ कि उन् दोनोंमें से इन दोनोंमें किसको अधिक लाभ होता है? पहले माखीने कहा कि संसार में ऐसी कौन ठांव सुख औार चैन की है कि जहां मैं नहीं पैठती वा वहांके लोगोंके संगमे मेरा मेल नहीं? सब तीरथ औार बैठकके दार मेरे लिये खुले हैं जहां चाहूं तहां सहजमें चली जाऊं. औार परमेश्वरके सारे बलिदान की ठांव में औार श्रेष्ठ लोगोंके भोजनके थाल पर बैठके मैं पहले चीखती हूं. तिस पीछे वह सब चखते हैं. औार बिना पैसेके ऐसा सुख भोग कर्ती हूं औार बिना श्रमके राजोंके टोप पर जा बैठती हूं औार औार जिस सुंदर स्त्रीके होंठको जब चाहूं तब चूम लूं. अब बोलो बीबी चीउंटी तुम्हारा आदरमान कैसा है? चिउंटी बोली! बड़ी तेरी बड़ाई औार भली तेरी गप. क्या तुझे इतनी भी बुद्धि नहीं कि निमंत्रनी औार उनके साथियोंमें कुछ बीच जाने तेरे अशुभ रूप औार अशुद्ध संगसे लोगोंको ऐसा घिन है कि दूरहीसे तुझको हांकके उड़ा देते है औार जहां तू आती है तहां लोगोंके सिर पर विपत् लाती हैं औार तेरे साथमें दुर्गंध है औार तेरी बऊतायत से मिर्गी औार मरी उत्पत्ति होती हैं औार यह जो तू बड़ाई कर्ती हैं कि मैं सुंदर स्त्रीके होंठको चुम्ती हूं तो इससे उसी दुर्गंधकी गंध

आती है जहां तू अभी बैठी थी. अब मेरा थोरा जो रहा सो तू जान्ती है कि हम लोग उसीसे जीते हैं कि जिस्को हमने श्रम और जीव प्रानसे एकट्ठे किया है. ग्रीष्मकालमें उद्योग और श्रमसे बटोर्ते हैं और शीत कालमें सुखसे खाते हैं न तेरे समान डामा डोलमें जीते हैं क्योंकि तुम सब छः महीने लग ठग पन् और झूठ और कुकर्मसे दिन काटती हो और छः महीने में कंगालपन और दरिद्रताके हेत से मर जाती हो.

उपदेश.

मनुष्यकी भागवानी इसीमें है कि सचाई और श्रमसे कमावे और आपसमें मिल जुलके खावे और ऐसा न होवें कि आपको लोभके हाथसे प्रत्येक ग्राह्य और वर्ज्जित विषय में डुबोवे. और लालचके मारे शुद्ध अशुद्ध का बीच न समझे.

२५ दृष्टांत

मेंड़की और बैल का.

एक बड़े बैल को पट्परमें चर्ते ऊए देखके किसी मेंड़की को ऐसा डाह ऊआ कि उसके लोहों जाय चिल्लाने लगी और अपने बचोंको बुलायके कहने लगी देखो यह कैसा बड़ा बैल है, परंतु मैं अपने को इससे भी बड़ा बनाती हूं. इसमें उस सम्भोगीने अपने मुहमें पवन भर्के और पेट फुलानेमें इतना बल किया कि पेट फट कर मर गई.

परीक्षा.

छोटे मनके लोग बहुत करके अपनेको बड़ा बूझते हैं और दूसरेको छोटा समझते हैं जो उनसे कोई बड़े पदका भी होवे और अंतको बुरे बनते हैं. सच है कि ऐसी बातों की चाह करनी जो हमारी पहुंच से दूर है उसमें बहुत करके हमारे नष्ट होने का हेत होता है.

३६ दृष्टांन्त

गर्दभ और भेड़िये का.

किसी गदहे के पांवमें अकस्मात् कांटा चुभा था और उसने एक भेड़ियेसे निवेदन किया कि वह अपने दांत से उसे निकाले परंतु निकालने के समय भेड़िये की कुछ बुरी वासना उस पर प्रकाश हुई. इसमें गदहेने ऐसी दुलत्ती उसके कनपटी पर लगाई कि भेड़िया चिंघाड़ मारता हुआ वहां से भागा.

सिक्षा.

सच है बुरेको बुराई आगे आती है. क्रिया बीजके समान है और पलटा उसका फल है और बुराबीज भला फल नहीं देवेगा.

३७ दृष्टांन्त

एक निर्बुद्धि जलपथगामी का.

एक मनुष्य जिसने कभी जलके पथमें भ्रमन नहीं किया था वह जहाज पर चढ़ा. अचानक ऐसी आंधी आई कि जहाजको एक थरथर डाल दिया परंतु सारे जहाजके लोग जो उस जोखमसे सावधान थे सो रोपुकार करतेथे

और वह मृत्युवत् होय परमेश्वर को स्तुति करता था. अकस्मात् जहाजको ऐसी ठांव पऊंचाया कि जिसमें धर्ती को फिर उसने देखा.

चेतना.

हमलोग मूरखता के हेतसे बऊत कर्के ऐसीवस्तुसे भलाई की आशा रखते हैं जो अंतको हमारे विनाश का कारन् होवेगा.

१८ दृष्टांत

घोड़े और गदहेका.

एक मोटा घोड़ा जो अच्छी काठी और लागसे सजा ऊआ और बड़ा अहंकारी था किसी दुखिया गर्धवको बाट में देखा कि वह भारी बोझसे लदा ऊआ धीरे धीरे जाता था. तब वह बऊत बड़ाईसे उसको कहने लगा ओ पाजीमुटिये हट्जा न होंतो अभीटापके तले मटिया मेलकर देता ऊं. तू इस सोनेके गहनेसे नहीं चिन्ता कि मैं कौनऊं और मेरे ऊपर कौन चढ़ता है? और जब वह मेरे ऊपर असवार होता है तब सारा राजोंका ठाठ मेरी पीठपर रहता है। दुखिया खर यह वचन सुन्तेही अलग हो गया और उसको देखके शोकसे अपने मनमें कहने लगा भलाहोता जो मेरी गत उसके सरीक होती और वह मेरीगत में फसता. इसी चाह में था. अकस्मात् एक दिन देखता क्या है कि वही घोड़ा एक कूड़ेकी गाड़ीमें जोता ऊआ है. तब गदहेने पूछा तुम्हारी यह क्या दशा है हाय क्या हो गया

घोड़ेने उत्तर दिया युद्धके दुःखसे मेरी यह दुर्दशा भई है और अगले दिन जो तुने मुझे देखा था तब मैं सेनापति की असवारी में था परंतु रन में बड़त घावलगे तब अंतको यह दशा भई है जो तुम देखते हो.

सिक्षा.

बड़ाई करने हारे अपनी मूरखता के कारन ऐसी वस्तुको अपनी बड़ाई का हेत बुझते हैं जो तुरत नष्ट हो जाती है और बड़ुतेरे निरुपाय कंगाल जो धनसे निरंस और उसकी बुराईसे चेत नहीं रखते हैं सो ऊपर की भड़क देखके उसकी अभिलाषा करते हैं.

२९ दृष्टांत

चमगुदड़ी और नेवले का.

एक नेवलेने किसी चमगुदड़ी को पकड़ा चाहा कि मार डाले. तब उसने नेवले से अपने प्रानदान के लिये प्रार्थना की नेवलेनें कहा मैंतो किसी चिड़ैया परभी दया नहीं करता चमगुदड़ीने उत्तर दिया तुम मेरा शरीर अच्छीरीतसे देखो मै तो चिड़िया नहीं बरन मूसेकी जात हूं. संछेप उस समय तो चमगुदड़ीने क्षमा चाह के अपना प्रान बचाया परंतु वही चमगुदड़ी बिपतके मारे फिर दूसरे नेवलेके हाथ आय फसी और व्याकुल होय नेवले से फिर अपने प्रान दानकी प्रार्थना की नेवलेने कहा मैं तो मूसभी नहीं छोड़ता. चमगुदड़ीने कहा मैं तो मूस नहीं हूं बरन पखेरूकी जात हूं चाहो तो

मेरा पंखदेखो. निदान इसी रीतकी चमाके हेतसे उस ठांवसे भी छूटी.

परीक्षा.

विपताके समय चौसानका ठिकाने रहना वा बूझसमझ का रहना बड़त करके हमें आपदासे रक्षा करता है.

४० दृष्टान्त

एकान्त रहने वाली चमगुदड़ीका.

कहते हैं कि एक समय पशु और पक्षीमें बड़ा युद्ध ज़ुआ था उस समय चमगुदड़ी दोनो दलसे अलग रही. जब देखाकि पशुगन की जित ज़ुई चाहती है तब तुरंत उनकी ओर आय मिली. परंतु अंतको ऐसा संयोग ज़ुआ कि पक्षियोंने फिर अपनी सेना बटोर कर एकही बेर धावा करके पशुके दलपर प्रबल ज़ुए. जब चमगुदड़ी ने यह गत देखी तब उन्हीके संग आय मिली परंतु पशुके पतिने उसको राज विद्रोहारी बूझके प्रतीकारकी आज्ञादी जिससे भली रीतसे चेत देके उसको देस निकाला देयो और वह निर्लज्ज दिन को उजाला देखनेसे निरास रहे.

परीक्षा.

जो कोई किसी लोगके संग बात चीत की सचाई से नहीं रहता उसको सब कोई बुरा जानेंगे.

४१ दृष्टान्त

भेड़िये और लोमड़ीका.

एक भेड़िया अनेक खानेकी सामग्री बटोरके सदा घरमें

रहने लगा और उसकी रखवाली करने लगा, पर एक लोमड़ीकी यही वासना थी कि उसके घरका भेद जाने. एक दिन भेड़िये से कहने लगी अजी मैं तुमको कई दिन से बाहेर कर्तें नहीं देखती. उसने कहा सच है बीबी लोमड़ी परंतु रोगके हेतसे कई दिनसे मैं घरमें रहता हूं और अब तुम्हारी कलोलसे मेरी यही आसा है कि तुर्त आरोग्य लाभ करूं. जब लोमड़ीने देखाकि उसका छल कर्ना अकारथ भया तब एक चर्वाहेके निकट जाय यह संदेसादि किया अमुक ठांवमे एक भेड़िया है आवो तुम्हे दिखाऊं. तब वह चर्वाहा उसके संग भेड़ियेके घर गया और उसको मारडाला. और लोमड़ी उसके घर दारकी अधिकारी भई परंतु थोड़े दिनके उपरांत उस चर्वाहे ने लोमड़ीको भी उसी रीतसे हना जैसे ऊंडारको नष्ट किया.

परीक्षा.

धन और पूंजी यह दोनों शंकायुक्त रहते हैं और धनवान सख भागी होवें अथवा विश्वास घातक परंतु सदा मृत्यु भय और कष्टमें बंद होते हैं.

४२ दृष्टांत

अहंकारी पाढ़े का.

एक पाढ़ा किसी नदी पर जल पीनेके समय उजसे जलमें अपनी परछांहीं को देखके कहने लगा जो यह दुबली पतली जांघें मेरे सुंदर सींगके मेल की होती तो मैं अपने सारे बैरियोंको अति तुच्छ और नीच बूझता.

और वह दुखिया उसी विचारमें था इतनेमें शिकार करनेहारे कुत्ते भौंके और उसी ओर को दौड़े. और उनको देखतेही पाढ़ा उस ठांवसे भागा और एक जंगली घटपटको छोड़ उन् कुत्तोंसे बहुत आगे पढ़ गया. परंतु जब वनमें पैठा तब अकस्मात् एक झाड़ीने उसके सींगोंको मोड़ कर फंसाया इतने में कुत्ते आन पहुंचे और उसमेंसे शिकारको मारडाला. पाढ़ा अपने मृत्युके समय यही बोलता था मैं बड़ा अभागा मूरख और बिना सावधान था जो अपने शत्रुको मित्र बूझता था और बंधुको बैरी समझता था, अर्थात् अपने सींको जिसने मुझे इतना बिगाड़ा बूझता है और पांव को जिसने मेरी रक्षा की थी बुरा जानता था.

उपदेश.

बहुी लोग हमारी मित्रताके योग हैं जो देखने में कंगाल और दरिद्र हैं और हमारे विपत्के समय हित करें व वैसे लोग हमारे योग हैं जो देखे में भले हैं और हमको आपदामें डालें.

४२ दृष्टान्त
सांप और रेतीका.

एक सांपने किसी लुहारकी हाटमें रेतीको खानेकी सामग्री बूझके इसका काटा कि उसकी जीभके कछु टपके लगा परंतु उस निर्बुद्धिने यह ध्यान किया कि वह लहू रेती से निकलता है तब जोभसे और भी चाटने लगा. निदान

जब थाकने थाकमें थक गया तब शीघ्र अपने दांतसे काटने लगा. जब दांत भी टूट गए तब केवल हाथ उसको छोड़ दिया.

उपदेश.

युद्ध और सामा करने में हम को यह अवश्य है कि पहले अपने और वैरीके बलकी परीक्षा करें तिस पीछे जैसा उचित हो वैसा करें.

४४ दृष्टान्त

ऊंड़ार और भेड़ी और कुत्तों का,

एक बेर ऊंड़ार और भेड़ीका युद्ध बहुत दिन तक था भेड़ोंकी रखवाली कुत्तोंके हाथ में थी तब तक भेड़ियां अपने बैरी पर प्रबल थीं, इतने में ऊंड़ारोंने इस बात को बूझके भेड़ोंके पास एक दूतको मेलका संदेसा देके भेजा. तब यही वचन ठहरा कि जबलग यह बात पूरी न पड़े और दोनों ओरसे बन्धक निर्बन्ध न किया जावे तब ऊंड़ारोंने अपनी रीत से अपने बच्चोंको भेड़ों के पास भेजा और उन्होंने अपने कुत्ते ऊंड़ारोंके पास पठाए जैसे ऊंड़ारोंने उनसे मांगा था. और उन्हीं दिनोंमें एक दिन अकस्मात् ऊंड़ार के बच्चे चिल्लाने लगे तब सारे ऊंड़ारोंने यह पुकार मचाई कि भेड़ोंने अपना नियम तोड़ा और अपने बचनके विपरीत हमारे बच्चोंको दुख दिया और इसी छलसे उन दुखिया भेड़ोंपर जो अपने रखवारे कुत्तोंसे उस समय अलग थीं उन पर टूट

पड़े और इस मूरखता और अचेतीका फल पाया जो अपने सहायताको बैरीके हाथ दिया था उनको दिया.

चेतना.

ऐसे लोगोंसे मित्रता और प्रेम की आशा रखनी बड़ी मूरखता है जो हमारे सदाके बैरी और शत्रु हैं.

४५ दृष्टांत

कुल्हाड़ी और बन का.

किसी मनुष्यने एक बड़े बनमें जायके उससे केवल इतनी बड़ी एक लकड़ी मांगी जिससे उसके कुल्हाड़ी का बेंट बने. उसकी प्रार्थना तो बहुत थोड़ी थी मानली परंतु जब बड़े रूखोंने देखा कि सारा जंगल उसी बेंटके कारन काटा गया तब शोक करके कहने लगे कि अब बिना धीरज के कोई दूसरा उपाय नहीं इस लिये कि हम पर यह बिपता हमारी मूरखतासे पड़ी.

उपदेश.

कोई बस्तु इससे अधिक मनुष्यको शोकमें नहीं डालती जिससे वह जाने कि अपनी बिपताका हेत आपही हुआ है.

४६ दृष्टांत

पेट और दूसरे अंग का.

एक बेर शरीरके सारे अंग एकत्र होयके पेटके संग बिवाद करने लगे. हाथ और पांव उनसब राज करके बिरोधी के श्रेष्ठ थे बरन उस बिवाद और उस झगड़ेके उत्पत्ति करने हारे थे. सब अंग के श्रेष्ठ होके उनके ओर कहके इसीरीत पेट की निंदा करने लगे. मित्र तुमसब बिचार

करो कौन हेत है जो हम अपनी सारी आयुदी सेवा और आधीनता में गवावें? केवल इसलिये कि इस निर्बुद्धि पेट को न तो हाथ के दुःख और न कष्ट का ध्यान है और न दूसरोंकी विपत् और न कष्टका चेत है अब क्यों पालिये और सारा दुःख उसके कारन उठाइए. और न केवल उसकी रक्षा और खिलाने पिलाने में सदा लगे रहिये बरन उसके बड़े भारी बोझको एक निमंत्रन के घरसे दूसरे के घर लिये फिरिये. ऊपर उसके जब पेट किसी रोग में पड़ता है तब हम दुःख-भोगते हैं इस लिये कि सदा उसकी सेवा में रहें और उसकी औषधी किया करें. और उसके दुःख संघमें हमको संग रहना चाहिये और भांत भांत की विपतामें हमको उसके कष्टका संग देना उचित है सो सबकोई जानताहै. इसलिये कि वह बड़त कर्म अपने संग आपही विपरीत कर्म करता है और दूसरोंके संगभी अपना बुरा सुभाव प्रकाश करता है. और इस-बातके हमारा तात्पर्य यह है जिसमें सारे मित्र और बन्धु जान्ते रहें जो अब हमसे यह दुःख और श्रम नहीं सहे जायंगे. अब पेट को उचित है कि अपना उपाव आपही करे. और इसमें सब अंगोने भी इसबात पर हठा किया. मुख कहने लगा में पेटके लिये एक ग्रास भी कदाचित् ग्रहन न करूंगा बिना उसके जो हाथ देवे. और दांतोंने क्रोध की कि हम कभी कोई वस्तु नहीं पीसेंगे बिना उसके कि हाथ इस चाकीमें डालें. थोड़े

दिनके पीछे हाथ पांव और बदन के सारे अंग बड़ी घबराहटमें पड़े और जब देखा कि उनका बल और शोभा दिन दिन घटती जाती है और हानि होती है और हाथ पांवही दुर्बल हो जाते हैं और आंख भी धुंधली होने और बोलनेके समय कांपने लग पड़ती है; निदान सब अंगने अपनी चूक और खोट मानी और चाहा कि फिर अच्छीरीत से अपने काममें लगें, परंतु बड़ा शोक है कि काम हाथसे जा चुका था और इस पछतावे से उनको कुछ लाभ न हुआ इसलिये कि पेट निराहार के हेतसे ऐसा निर्बल और असक्त हो गया था जो खिलाय पिलाय वह भी भला न हो सका तब सबके सब मरगये.

उपदेश.

राजाका बनाव और उसका बढ़ाव रयीयत से है जो सब विषय के लोग अपना अपना काज कर्म मन लगायके करें. और अपना भला सबकी भलाईके संग बूझें. और जो कोई इस हेतसे अपने कामको छोड़ेगा, जिसमें किसीका भला न होय तो वह आपही उसके घाटे बाधे का संगी होगा.

४७ दृष्टांत

लवा और उसके बच्चोंका.

एक गेहूंका खेत जो पकके काटवेके जोग हुआ था, उसमें एक लवेने बच्चे दिये थे. एक दिन जब वह चारेके लिये जाने लगा तब उन बच्चोंसे यह बात कह गया कि [illegible] मेरे

पीछे जो कुछ सुनो तो मनमें रक्खो और जब मैं आऊं तब मुझसे कहियो. जब वह फिर आया तब बच्चे कहने लगे कि खेतका स्वामी यहां आया था और अपने पड़ोसी को बुलाया है कि वह सब आवें और खेत काटें. इसमें लवा बोला कि अभी कुछ भय नहीं. दूसरे दिन बच्चों ने संदेसा दिया कि वह यहां फिर आया था और अपने मित्रोंको बुलाया है कि वह सब आवें और खेत काटें फिर लवा बोला भला अब लग कुछ भय नहीं. परंतु तीसरे दिन बच्चोंने फिर वह समाचार दिया कि आज खेतके अधिकारी और उसके बेटेने यह कहा है कि कल अपने आप इस खेतको काटें. तब लवेने कहा कि अब कोई उपाय करना उचित है इस लिये कि लवे के पड़ोसी और मित्रोंसे कुछ भय न था परंतु अब उसने जैसा कहा है उसी रीत से अपना काम करेंगा.

परीक्षा.

सब लोग अपना काम आपही भला करते हैं इस लिये कि दूसरोंको उसके काम की इतनी चिंता नहीं होती जितनी उसके मनमें होती है.

४८ दृष्टांत

बाघ और लोमड़ी का.

एक बाघ अकस्मात् पीड़ित भया इसमें जंगलके सारे पशु उसका रोग देखने आए परंतु लोमड़ी न आई तब बाघ अचंभित ऊआ और यह बात उसको लिख भेजी में बड़ा दुःखी हूं जो तू ऐसे समय मुझे देखने आवेगी तो मैं बड़ा

प्रसन्न होऊंगा, लोमड़ीने उस पातीके उत्तरमें निवेदन पत्रकी रीतसे लिखा वह दासी लोमड़ी वाक्यों अधीन अपने मनसे कर्ती है जिसमें परमेश्वर आपको तुर्त कुशल करे और यही आस रखती है कि उसके न आने का अपराध क्षमा होवे क्योंकि उसे निश्चय करके जान पाया कि जितने बनके पशु उसको देखने गए थे तिनके आने के पांवके चिन्ह तो बाटमें हैं परंतु आनेका चिन्ह नहीं.

उपदेश.

हमको उचित है कि छली और ठगके वचन और परनको भली रीत बूझें और उनके छलसे बचे रहें.

४९ दृष्टांन्त

सूअर और घोड़े का.

एक सूअर चहलेमें लोटता था अकस्मात् एक घोड़ा भी वहां जल पीने गया और दोनोंमें झगड़ा भया. तब घोड़ेने मनुष्यकी सहायता चाही जिसमें सूअरको मारे. मनुष्य उसके कहे पर सब अस्त्र लगाके घोड़े पर चढ़ा और उस ठांव में आके सूअर को मार डाला और उस कुबात घोड़ेके मनको प्रसन्न किया. तब घोड़ेने उसकी बड़त अस्तुत की परंतु जब घोड़ा बिदा होने लगा तब मनुष्यने कहा तेरा यहां और भी काम है और बड़े बड़े काम काज तुझसे लिये जायंगे इसमें उसको घुड़साल में लाय अगाड़ी पिछाड़ी बांधी. तब निर्बुद्धि अपनेको यह बूझ पड़ा शत्रु तो मारा पर मैं भी बानफसा.

उपदेश.

बहुत लोग छोटी आपदा दूर करने को बाहिर जाते है और उससे बड़ी विपत् घरमें लाते है. बहुतेरे लोग मूरखता से दूसरे को कष्ट देते है और आपभी विपत्में पड़ते है.

५० दृष्टांत

दो ठग और कसाई का.

दो ठग एक कसाई की हाट में गए और एकने किसी ढबसे मांसका टुकड़ा चुराके दूसरे को दिया. थोड़ी बेर के पीछे उस टुकड़े को कसाई खोजने लगा और जब न पाया तब उसने उन पर कलंक लगाया. परंतु जिसने न लिया था उसने सोंह खाई कि मेरे निकट नहीं है और जिसके पास था उसने भी किरिया खाई कि मैंने तो नहीं लिया. तब कसाईने उनको दुष्टता देखके कहा तुम ऐसी ठगाईसे मनुष्यके निकट बच सक्ते परंतु वह जो तुम्हारे हृदयको देखता है सब कुछ देख पड़ता है.

उपदेश.

जो कोई मनुष्य अपनी फुर्ती और छल से दूसरे को ठगता है पर वह ठगाई ईश्वरके निकट धरी जायगी और वह बहुत प्रतीकार पावेगा.

५१ दृष्टांत

कुत्ते और कसाई का.

एक कसाई किसी माहकके संग मांसका मोल कर रहा था

इतने में एक कुत्ता उसका एक टूक मांसका ले भागा. तब कसाई देख कहने लगा भला बचा अब की बेरतूने अपनी होड़ जीती पर आगे को तो कभी कुछ न ले सकेगा और मैं अपने मांसको ऐसी ठांव धरूंगा जहां तू न पऊंचेगा.

सिक्षा.

जो कोई अपना कुछ गवांके सचेत और सावधान होता है सो अपने घाटेसे लाभ कर्ता है.

५२ दृष्टान्त

बिल्ली और शुक्र देवता का.

एक जुवा पुरुष किसी बिल्ली को बऊत पियार कर्ता था और शुक्र देवतासे प्रार्थना की जिसमें उस बिल्लीकी काया पलटेवे और एक सुंदर नारीके समान बन जावे. फिर घड़ी भरमें वह बिल्ली बारह बरसकी अप्सराके तुल्य बन गई. और वही पुरुष जो नेह कर्ता था सो उसकी नई मूरत देखके अति प्रसन्न भया और उसका प्रेम दुगना होय उठा. उसी समय तुरंत खाट पर ले गया और सोए न थे इसमें देवता की यह इच्छा ऊई कि इसकी परीक्षा उचित है और अब इस शरीर में उसकी अगली बान पलटी है वा नहीं इले में एक मूसेको उस घरमें छोड़ दिया. बिल्ली मूसे को देख तुर्त सेजसे कूद मूसे पर झपटी तब शुक्र देवताने उसकी गत देख फिर बिलाई बनाई इस लिये कि उसकी काया और सुभावका विपरीत होना देवता को न भाया.

उपदेश.

मनुष्य जिस रीत की बनावट् से अपने रूप और वस्त्र को बदले परंतु अपनी बानका पलटाना बड़ा कठिन है.

५२ दृष्टांत

पिता और पुत्र का.

एक बड़े बुद्धिमान मनुष्यके कई संतान झगड़ाके और कुस्वभाव के. एक दिन उस बूढ़ बुद्धिमान ने एक गुच्छा पतली छड़ियों का मंगवाया और सब बेटोंसे भिन्न भिन्न कहा कि इस बंधे ऊए गुच्छे को पकड़ के खींचो और तोड़ो. तब सभोंने एक एक बेर अपने बलकी परीक्षा की तोड़ना तो बड़ा कठिन था पर कोई उसको निवाय भी न सका. फिर उनके पिताने कहा भला अब इस गुच्छे को भिन्न भिन्न कर एक एक छड़की परीक्षा अलग् अलग् करो. तब उन्होंने उसी रीत किया जिस रीत पिताने कहा था और प्रत्येकने एक एक छड़ीको सहजसे तोड़ डाला. तब पिताने यह बात कही देखो मेरे दुलारे यह परीक्षा तुम्हारे विवादके समान है सब एकत्र रहो तो विपदासे बचोगे और जो भिन्न रहोगे तो आपदामें पड़ोगे इसके अर्थ को भला जानो के करो.

शिक्षा.

जब तक जोरू लिये जुते रहते हैं बली और मोटे रहते हैं और सहज् वे बैरीके हाथ नहीं लगते. पर जब उनके मन की संमत अलग होती है तब निर्बल हो जाते हैं और शत्रु उनको तुरंत मार डालते हैं.

५४ दृष्टांत

बोझवाले ऊंटे गदहे और घोड़ेका.

एक गर्धब और अन्य बाटमें पास चले जाते थे, गदहा बोला र घोड़े मेरी सहायता कर और थोड़ा बोझ मेरी पीठ से अपने परले नहीं तो मैं बोझके मारे मर जाऊंगा. घोड़ेने न माना निदान गर्धब बोझकी तले बैठके मरगया. तब उसके स्वामीने खरकी खाल उधेड़ के उसका बोझ और चाम और सब सामग्री उस घोड़े पर लादी. अबघोड़ा अपने मनमें सोचता और कहता है कि यह सब बोझ मेरी दुर्भाग्यता और दुष्टताके हेतसे मेरे ऊपर पड़ा. इसलिये कि मैंने अपने दुखिया मित्र पर कुछ दया न की.

उपदेश.

प्रत्येक दयपतिको उचित है कि एक दूसरेकी सहायता करें तो सब सुखसे रहें.

५५ दृष्टांत

कोयलेवाले और धोबीका.

किसी धोबीको एक दिन उसके एक पुराने मित्र कोयले-वाले ने अति प्रसन्न होयके कहा कि आओ भाई हम तुम एकही घरमे बसें और आपसमें सुखसे दिन काटें. धोबीने ऐसी दया देख बड़त अस्तुत कर निदान यह कहा हम दोनोंका एक ठांव बसना भला नहीं इसलिये कि सब वस्तुओ मैं सारे दिनके दुःखमें उजला करूंगा वो तुम्हारे कोयलेके संग धर्मेसे तुर्त काली हो जायगी.

ज्ञान.

दोनों जने मिल कर बसने के लिये यह बड़ीरीत चौर भली चलन है कि पहले मनका हेत चौर वानकी समानता चौर सुभाव को देखें तिस पीछे मिलके बसने की इच्छा करे·

५६ दृष्टांत

चिड़ीमार चौर कपोत का.

एक चिड़ीमार ने कपोत को जोंहीं चाहा कि मारे. अकस्मात् उसका पांव एक सर्पके. ऊपर पड़ा उसने उसकी पिंडली मं डसा. तब वह चिड़ीमार ऐसा झिझका जिसमें वह निरपराधी कपोत उसके संधान से उड़ गया.

उपदेश.

अन्यायका पलटा बहुत करके ऐसे समय में मिलता है जब उसको अपने अन्यायका कुछ ध्यान नहीं रहता है तो मानों ईश्वर की चोरसे अन्यायीके लिये कष्ट होता है.

५७ दृष्टांत

तुरहीके पकड़े जानेका.

किसी समय एक सेना अकस्मात् हार गई. इतनेमें उसी चोर की तुरही वादीके हाथ लगी चौर वह लोग जब उसे पीटने चाहते थे तब उसने उनसे बिनती करके कहा अजी इस दुखिया को क्यों झूठों मारते हो मैंने न किसीपर शस्त्र उठाया चौर न किसीके दुःख देने की इच्छा की. तब एक उनमें से बोला कि तू अवश्य

मार डालेंने योग है. यद्यपि तु लड़ती नहीं परंतु सब लोगों को युद्ध के लिये उभाती है.

चेतना

जो अड़े बातके लिये दूसरोंको बुलाता है सो अति कुमात है और इसी हेतसे प्रतीकार के योग है.

५—दृष्टान्त

कुत्ते और भेड़ियेका.

एक निर्बल भेड़िये ने किसी मोटे कुत्तेको बाटमें चलते देखा. और अचंभित होय उससे पूछ ने लगा ए भाई कुत्ते, तुम्हारे सुखसे रहने का हेत क्या है. सो कहो? कुत्ते ने उत्तर दिया मैं चोर और डकैत के मारे अपने स्वामीके घर की रखवाली करता हूं. और वह उत्तम भोजन और ठांवसे हमें प्रसन्न रखता है. जो तुम मेरे संग चलो और मेरे समान काम काज करो तो तुमसे भी उसी रीत व्यवहार करेगा. तब भेड़ीया प्रसन्न हुवा और दोनों तुरंत वहांसे चले. परंतु वह दोनों गले मिले चले जाते थे इसमें भेड़िये ने कुत्तेके गलेमें पट्टेका चिन्ह देख पाया जहां से रोएं झड़ गए थे पूछा भाई तुम्हारे गलेमें यह चिन्ह कैसा है? कुत्तेने कहा कुछ नहीं यह केवल मेरे पट्टे वा सीकल का चिन्ह है. फिर भेड़िये ने कहा हाय जो सीकल और पट्टा गले में बांधना पड़ेगा. तो उसलाड़ दुलारके पट्टे से मेरे लिये बिन पट्टेके सूखा टुकड़ा भी भला है.

चेतना.

जो मनुष्य अपनी अनधीनता को तजके दूसरे की अधीनताई और सेवा करे सो बड़ा निर्बुद्धि और मूरख है इस हेतसे कि अनधीन कंगाल अधीन धनवान् से उत्तम है.

५९ दृष्टान्त.

एक गंवार और कुत्तों का.

एक बेर सीतकाल में एक दुःखिया गवांर खानेके लिये बड़ा कंगाल भया. निदान घबरायके पशुओंको मार मार खाने लगा. पहले तो भेड़ियों को नष्ट किया तिस पीछे बकरियों को. निदान भैंसोंको संहार करके खाने लगा. तिस परभी उसकी क्षुधा न गई. इसमे दुःखिया कुत्ते जो तब लग उसके हाथ से बच रहेथे आपस में कहने लगे अब इस ठांव का रहना कोई प्रकार भला नहीं इसलिये कि जब हमारे स्वामीने उन पशुओंको जिन्के रहते बड़ा लाभ होता था सबको संहार किया तो अब ऐसी आस नहीं है जो हमारे ऊपर दया करे.

समाचार.

बेबसी अखाद्यको खाद्य कर्ती है और उसमें कोई निषेध नहीं कर्ता है. और सच है कि बसकी गत और बेबसी की अवस्था इन दोनोंमें बड़ा बीच है परंतु पहले समय में हमारा बस चलता है चाहे करें वा न करें और दूसरे समयमें हमको कर्ना अवश्यक है और बिना किए. रहनहीं सके.

६० दृष्टान्त

गिद्ध और लोमड़ीका.

एक बेर गिद्ध और लोमड़ी में मित्रताका बचन अति कठिन परनके सहित भया. एक दिन जब लोमड़ी अपने भूखे बच्चोंके लिये चारा खोजने गई थी तो वह गिद्ध उसके बच्चोंपर झपटा और सबको एकही बेर ले गया. अकस्मात् उसी समय लोमड़ी घरमें आई और अपने उस शत्रु जो मित्रता दिखाने हारे गिद्ध का यह अन्याय देखा. तब उसने भय दिखायके उस अधर्मीसे कहा इसें का पलटा तुझसे लिया जावेगा. थोड़ी बेरके पीछे ऐसा सुयोग हुआ जो वही गिद्ध किसी बलिदान की ठांवसे एक मांसका टूक जो आगपर भुन रहा था झपटा मारके उठाय ले गया और अपने बच्चोंको दिया. अकस्मात् एक चिनगी ने जो उस् मांसके संग लग रही थी उसके घोंसले को जला दिया तब् उस्के बच्चे जो उड़ नहीं सक्ते थे सो आधे जल गए और वही लोमड़ी जो उस् ठांव में बैठी बुरा मनाती थी तिस्के मुहमें आय गिरे और वह तुर्त उन बच्चोंको निंगल गई और उनकी माताके जले हुए मनको फिर शोककी आगमें जलाया.

उपदेश.

जिस बांटसे हम दूसरों को तौलके देते हैं निदान हम भी उसी बांटसे तौलके पावेंगे. इस लिये हमको उचित है. कि दूसरों के संग वही कर्म करें जो हम चाहते हैं कि वह हमारे संग करें.

६१ दृष्टान्त

किसान और शुतुर्मुर्ग पक्षीका.

किसी किसानने हंसके लिये फंदा लगाया था. अकस्मात् एक शुतुर्मुर्ग पक्षी अपनी बिपताके उसी फांदेमें आय फसा. तब उस दुखियाने क्षमा चाहके यही कहा हम लोग सूधे और मनुष्यके भले चाहने हारे हैं और अपने माता पिता की सेवा मन लगायके कर्ते हैं और यह सब सच है. किसानने कहा मैं जान्ता हूं.

उपदेश.

जो हमको अपना मान बचाना है तो भलोंका संग अंगीकार कर्ना चाहिये क्योंकि कुकर्मीके संग रहनेसे बुरा करें वा न करें पर बुराईमें फसेंग और संसारके लोग उन्हींकी रीत हमको भी प्रतीकार देवेंगे.

६२ दृष्टान्त

चर्वाहेके ठठोल लड़केका.

एक चर्वाहेके सन्तानने यह बुरा अभ्यास किया था कि चराते चराते भेड़िया भेड़िया कर्के पुकार उठता था पर इस लिये नहीं पुकार्ता था कि उस ठांव सच मच भेड़िया आता था बरन् गांववालों के ठगने को. और इसी रीत जब झूठी चिल्लाहट् बेर बेर कर्ने लगा तब वहांके लोग जान गए फिर उसकी पुकार सुनके कोई दया नहीं कर्ता था और उसके चिल्लानेसे कोई नहीं सुन्ता था. निदान सच मच एक भेड़िया उसकी बकरि-योंके झुंडमें आया और उनमें हलचल डाली. तब उस

लड़केने बड़ी हाय हाय मचाई और भेड़िया भेड़िया करके पुकारा पर किसीने न सुना और न कोई उसकी सहायता करने आया क्योंकि सारे लोग यही जानते थे कि वह झूठी पुकारा करता है.

समाचार.

मिथ्यावादीके वचन की कोई प्रतीत नहीं करता है यद्यपि कभी सच भी बोले.

६२ दृष्टान्त

गिद्ध और भुजंगे पक्षीका.

एक गिद्ध किसी भेड़ियेके बच्चे पर आय पड़ा और घाव मार उठाय ले गया. उसका यह कर्म देख एक मूरख भुजंगेने भी इच्छा की कि उसी कर्म की परीक्षा एक भेड़िके बच्चे पर करे परंतु जब वह उस पर झपटा तब भुजंगे की थाप उसके रोएंमें ऐसी फस गई कि अपना छुड़ाना कठिन भया और उसको तो कौन ले जा सके निदान एक चर्वाहे ने उसकी यह दशा देख पकड़ लिया और उसके पंखको उपाड़के अपने बच्चोंको खेलनें के लिये दिया पहले तो बच्चोंने उसे देखके अति अचंभित होयके पूछा यह कौन चिड़िया है? उनके बापने कहा ए बेटा इसने पहले तो अपने को गिद्ध बूझा था पर अब उसको अच्छीरीत बूझ पड़ा कि वह केवल मूरख एक भुजंगा पक्षी है.

चेतना.

यह बड़ी मूरखता है जो मनुष्य ऐसे कर्मोंकी इच्छा करे

जिसके पूरन करनेकी बल नहीं रखता है क्योंकि अंत को नहीं कर सकेगा तो लज्जा पावेगा और विपत में पड़ेगा.

६४ दृष्टान्त

कुत्ते और बैलों का.

एक कुजात कुत्ता बैलोंके घास खानेकी ठांव में बैठा था. जब सारे बैल अपने समय से वहां घास खाने आए तब कुत्ता उनकी ओर भोंकने और दौड़ने लगा. अंतको यह कहा कि भूखों मर जाऊंगा पर इस ठांवसे कधी न टलूंगा और तुममेंसे किसीको इस घास खाने. न दूंगा. दुःखिया बैल अचंभित होय चले गये और जाते समय उस कुत्ते से कहा ए कुजात जन्तु तुझको कुछ भी अच्छा नहीं न तो तू खाता है न हमें खाने देता है.

उपदेश.

शत्रुता एक बुरा वृक्ष है और उसका फल यही है कि उसका गिरानेवाला दूसरोंकी बुराईके लिये अपने को बुराई में फसाता है.

६५ दृष्टान्त

भेड़ी और कागका.

एक कौवा भेड़ी की पीठ पर बैठके कांव कांव कर रहा था. इससे दुःखिया भेड़ीने उससे कहा कि एक छिन कुत्ते की पीठपर बैठके इसी रीत कांव कांव करो. कागने उत्तर दिया तुम्हारे बोलेका कुछ अचरज नहीं मैं तुमको कुत्तेसे

मकुत भला सूझता हूं इसलिये तुम पर बैठके चिल्लाता हूं और उस झगड़ालूके निकट नहीं जाता हूं.

उपदेश.

नीच और क्षुद्र लोगोंका यही कर्म्म है कि दुखिया पर अन्याय करें और बड़े लोगोंसे डरें.

६६ दृष्टान्त

ज्युपीटर और ऊंटका.

एक बेर कितेक पशु अपने आकार और रूप और चलन से उदास हुए और ज्युपीटर के सन्मुख आय भिन्न भिन्न दूसरे रूप और आकार की प्रार्थना की. इतने में ऊंटने यह निवेदन किया हमें भैंसके समान सींग दीजिये. और लोमड़ीने यह भाषा पक्ष दिया कि उसकी फुर्ती खरहे की रीत होवे. और खरहेने लोमड़ीके समान बुद्धि और चतुराई मांगी. और मोरने बुल् बुल् पक्षीके तुल्य मीठी बोली चाही. तब ज्युपीटर ने सबको उत्तर दिया जो प्रत्येक पशु एक एक गुन वा बड़ाई रखता है और वह बड़ाई जो उसमें पाई जाती है सो दूसरे में नहीं और वह बड़ाई उसीके योग है. अब यह भला नहीं होगा जो सर्वत्र बुद्धि और गुन एक ही पशुको दी जाय वा रूप की खास दूसरा आनन्द करे. और इस हैसने को ऊंटने अति उदास होयके प्रार्थना की थी सो ज्युपीटर ने न माना और जो दो कान उसको पहले आनके लिये थे सो उनको भी निकाल दिया.

उपदेश.

ईश्वरने जिस रीतको जनम दिया है और जैसी चतुराई और बुद्धि दी है उसी रीत चाहिये कि हम भी उसमें प्रसन्न रहें और अपना लाभ बूझें और दूसरेके बल और शक्ति और सुंदर सुरूप को देखके वृथा क्रोध न करें और न कुढ़ें.

६७ दृष्टान्त

लोभी भूम्यधिकारी का.

किसी दाता माळीके उपवन में एक अति सुन्दर सेव फल का वृक्ष था और उसको माळी सब वृक्षसे अधिक चाहता था. और उसका फल भी अति सवादिक और मीठा था इस हेतसे वह बरस बरस अपने भूम्यधिकारी को उसी फलकी डाली देता था. इसमें वह भूम्यधिकारी उन फलोंसें बड़ा प्रसन्न ऊआ और उसी गाछ को अपने उपवन में लैठाया. परंतु वह बड़ा वृक्ष उखाड़नेसे सूख गया तब वह लोभी ठाकुर पेड़ और फलसे निराश ऊआ.

चेतना.

लोभी अधिक लाभके लोभसे अपने मूल धनको भी गंवाता है. और सच है अप्रिय लोभ ऐसा कंटीला वृक्ष है जिससे आशा पूरन नहीं होती और मूल धनके जानेसे शोकी होता है. यही दोनों उसके सवादिक और मीठे फल हैं और उस लालची को सदा यही खाना होता है.

१८ दृष्टान्त
लोमड़ी और बकरी का.

एक लोमड़ी और बकरी दोनों एक ही संग किसी कूए में जल पीने गईं. पर बकरी का ऊपर आना बड़ा कठिन भया तब लोमड़ी ने कहा हमें यहांसे निकलने की रीत बूझ पड़ी तू अपने पिछले पांव पर ठाढ़ी हो और अगले पांवको कूए की भीत पर धर और अपने माथेको ऊंचा कर तो मैं तेरी सींगके सहारेसे बाहिर कूद जाऊंगी और तुमको अपनी सहायता से बाहिर निकालूंगी. मूरख बकरीने उसके कहनेसे आप उसी रीत खड़ी ऊई और ठगनी लोमड़ी उसके सहारे पर उस ठांव से निकल आई. पर सहायता करनेके पलटे में उस बकरी को। यही मेहणा दे उस ठांवसे चली गई जितनी बड़ी तेरी सींग है जो उसकी आधी बुद्धि भी होती तो तुझ को पहले बाहिर आनेका सोच होता तब भीतर कूदी होती.

उपदेश.

बुद्धिवान लोग पहले अंतको देखते हैं तिस पीछे कामको आरंभ कर्ते हैं.

१९ दृष्टान्त
कुक्कुट और तीतर का.

एक कुक्कुट लड़ानेहारे ने किसी तीतरको मोल लेके अपने लड़ाके कुक्कुटोंके संग छोड़ दिया जिसमें उनके संग खाता पीता रहे. पर कुक्कुटोंने मारके निकाल दिया

और अपना चारा और जब कभी उसको खाने न दिया
और यह बात उसके मनमें कठिन लगी तब उसने यह
ध्यान किया जो कुक्कुटोंने मुझे पराया और बिराना
बूझके इतना बैर किया है. पर थोड़े दिनके पीछे जब
उनसे ऐसा बूझ पड़ा कि वे सदा आपसमें झगड़ते हैं
और एक दूसरेको बड़ा दुःख देता है तब वह अपने
मनमें कहने लगा कि इस जात का अन्याय क्या मुझ
बिरानेके संग कुछ अचरज नहीं और ये तो आपस में
भी मार कुटाई कर्ते हैं.

चेतना.

बेलोग जो आपस में कच कच और झगड़ा कर्ते हैं उनके
बिरानोंको कभी मेल और मित्रता का भरोसा नहीं
पड़ता.

७० दृष्टांन्त

एक गप्पी भ्रमनकर्नेहारे का.

एक भ्रमी जो कितने दिन लग देस देस फिरा था जब घरमें
आया तब अपने सोहबतकी अनेक अच्छी अच्छी कहानी
लोगोंके सन्मुख बखान कर्ने लगा. उनमेंसे एक कहानी
यह थी कि मैं रोदस नाम टापू में गया था और उस
ठांवके लोग बाहु युद्ध कर्ने और कूदनेमें प्रसिद्ध हैं
और वहां मैं एक बेर इतना ऊंचा कूदा जो वहांके बड़े
कूदनेहारोंसे बारह हाथ अधिक ऊंचा उछला. इसकी
साखी वहांके लोग हैं इस लिये कि उन्होंने अपनी
आंखोंसे देखा है. इतनेमें एक जन उन सुननेहारोंमेंसे

जिनके सन्मुख वह गप हांक रहा था बोला हमको कुछ प्रयोजन नहीं जो रोदस में जाय वहांके साखियोंसे इस बातको पक्का करें आप इसी ठांवको रोदस समान बूझके कूदिये और हमें दिखलाइए.

परीक्षा.

डींग मारनेहारोंकी यही रीत है कि बड़ाई की बातें बहुत बोलते हैं पर कर नहीं सक्ते. और बहुतेरे गप मारते हैं कि हमने ऐसे ऐसे काम किये हैं और यह नहीं बोल सक्ते कि हम अभी कर सक्ते हैं.

७१ दृष्टान्त

एक ठठोलके प्रतीकार का.

एक अयोग ठठोल जो संसारकी अच्छी वस्तुसे ठठोली किया कर्ता था. एक बेर दल्फस नगरमें गया जहां यूनान देशियोंके अपालू ठाकुरका दर्शन होता है और चाहा कि उस देवतासे भी छल करे. तब उसने एक चिड़ियाको अपनी पिछोरीके भीतर छुपायके अपालूसे पूछा रे देवता मेरे हाथमें जीती वस्तु है वा मुई? और इच्छा उसके पूछने की यह थी जो वह देवता कहेगा वह मुई है तो चिड़िया जीवती दिखावेगा और जो जीवती कहेगा तो वह तुर्त हाथसे दबायके मार डालेगा और मुई ऊई दिखलावेगा. देवताने उसके छलको बूझके यह उत्तर दिया वह वही है जो तेरे मनमें आवे इस लिये कि इस चिड़ियाके मारने और जिलानेमें तेरा अधिकार है जो तू चाहे सो कर दिखलावे पर अपने

काम काज में तेरा अधिकार नहीं. यह बात कहते कहते वह हंसोड़ धर्ती पर गिर पड़ा और मर गया तब उससे लोगोंको बड़ा भय ऊआ.

मनोरथ.

लोग भ्रमके हेतसे अपने को भला बूझते हैं और दूसरे के अच्छा होने पर भी बुरा जान्ते हैं. परंतु ऐसी ही मूरखतासे विपतामें पड़ते हैं.

७२ दृष्टांन्त

एक स्त्री और कुक्कुटी का.

एक लोभी स्त्रीकी कुक्कुटी प्रति दिन एक अंडा देती थी. एक दिन यह ध्यान उसने किया जो मैं कुक्कुटीके चारे को बढ़ा दूं तो निश्चय है कि वह एकसे दो अंडे देवेगी. परंतु जब उस कुक्कुटीका चारा बऊत बढ़ गया तब उसने एक अंडा देना भी छोड़ दिया.

उपदेश.

हमको उचित है जो थोड़ी हो वस्तुसे धीरज धरके आनंद में रहें और अधिक लोभ न करें नहीं तो जो उपस्थित है सो भी लोप हो जावेगा.

७३ दृष्टांन्त

एक कुत्तेके काटे ऊए मनुष्यका.

एक मनुष्यको कुत्तेने काटा था लोगोंने उसको कहा एक रोटीके टूक को अपने घावके रक्तमें भिजायके उसी कुत्तेको दे. तब उसने उत्तर दिया भला भला तुम लोग चाहते हो कि सारे नगर के कुत्ते मुझको काटे इस

लिये कि वह कुत्ते जब आवेंगे इस मनुष्यको काटने से मना नहीं बरन् खाने को देता है तब निश्चय है कि सारे कुत्ते मुझे काटने को दौड़ेंगे.

शिक्षा.

जो हम बैरी का अपराध क्षमा करेंगे और उसको उचित दण्ड न देवे तो ऐसा भी न चाहिये कि ऐसे काममें हम उसकी सुहायता करें जो वह बेर बेर करे और हमें कष्ट देवे.

७४ दृष्टांत

पोठीमछली और सौल मछली का.

एक बेर पोठी मछली को सौल मछलीने बहुत दौड़ाया और चाहा कि तुर्त उसको धरके निंगल जावे. पर उसी समयमें अपना प्रान बचानेके लिये एक ऊंचे तीर पर उछल के सूखे में जाय पड़ी और सौल भी उसके पीछे जाय पऊंची तब उस ठांव दोनों मर्ने पर भई परंतु पोठीने प्रान छूटनेके समय सौलको मर्ते ऊए देखकै अपने मृत्युका कष्ट भूल गई और मर्ते समय यह बोली मैं तो मरी परंतु वैरीको ले मरी.

उपदेश.

मनुष्य जीते जीव जब वैरीसे प्रति हिंसा नहीं ले सक्ता है तब उसके मृत्युसे प्रसन्न होता है.

७५ दृष्टांत.

दो बैरियों का.

दो शत्रु एक जहाज में बैठे ऊए किसी ओर जाते थे.

एक उनमें से जहाज के अगले भाग में और दूसरा पिछले भाग में था. और बहुत दिन नहीं बीते थे अकस्मात् झड़ आया और जब वह जहाज डूबा जाता था तब उनमें से एकने नाविकके स्वामीसे पूछा पहले कौन भाग जहाजका डूबेगा? उसने कहा जिस ओर तुम्हारा शत्रु है. यह बात सुन वह प्रसन्न होय बोला धन्य परमेश्वर अब मै अपनी म्त्युसे पहले वैरीको मत देखूंगा.

उपदेश.

मनुष्य शत्रुताके हेतसे अति कठोर हो जाता है निदान वैरीको म्त्युसे संतुष्ट होता हैं और अपनी म्त्युकी सुध नहीं कर्ता.

७६ दृष्टांत

एक ज्योतिषीका.

एक ज्योतिषी तारे देख रहा था उसी समय गड़हे मे गिर पड़ा और अति श्रम कर्के उसमें से निकाला. तब एक मनुष्य ने उसकी यह दसा देखके पूछा अजी! भले चेतसे निकले. आप अब तारा देखना त्याग कीजिये और अपनी बाटमे जिस रीत धीरे धीरे जाते हो वैसेही जाइए और फिर गड़हे मे न पड़िये. क्योंकि यह बड़े शोककी बात है जो औरों के लिये हम उपाय करें और अपने वृत्तांत से अचेत रहें.

चेतना.

यह बड़ी मूरखता है जो हम पराएके कारज में ऐसे लगे हों जिसम अपने कामको भूल जावें.

७७ दृष्टांन्त

चिड़ी मार और कोयलका.

एक चिड़ी मार अपना जाल फैलाता था इसमे एक कोयलने उससे पूछा कि तू किस सोच मे है? उसने उत्तर दिया मैं एक नगर बनाता हूं. यह बात कहके उस ठांव से चला गया. और वह कोयलने उसकी बार्ता सत्य जानके दाना चुगे आई और जालमे फसी. जब चिड़ी मार आया तब कोयल बोल्ने लगी जो तुम्हारा नगर बसाना इसीरीत हैं तो वह निश्चय भर पूर होगा.

चेतना.

पराए काममें पैठने हारे बहुत दुःख भोगते हैं. वा बहुत लोग बैरीको पहचान नहीं सक्ते और उसके बचन को सत्य जानके उसी रीत कर्ते हैं और अंतको मर्ते हैं.

७८ दृष्टांन्त

बुध देवता और बटोहीका.

एक मनुष्य अति दूर देशजानेको था तब यूनान देशके बुध देवताकी मान्ता की जो कुछ मैं देश भ्रमन में इस बेर पाऊंगा उसका आधा तुमको चढ़ाऊंगा. किसीने अकस्मात् एक थैला खजूर और अनार का खोया था सो इसके हाथ लगा और खाने लगा. जब सकल सवादिक बस्तु खाय चुका तब केवल खजूरकी गुठली और दाड़िमकी छाल देवता सन्मुख लेजाय चढ़ाय दिया. और बोला ए ठाकुर देखो मैंने अपने परनको पूरा किया क्योंकि उन दोनों बस्तुमे से एककी छाल और दूसरेका

बोया मैंने तुम्हारी भेट चढ़ाई और मैंने पाया था उसका यह आधा भाग है.

परीक्षा.

कितेक लोगोंके बचनसे बूझ पड़ता है जो वह ईश्वरको मान्ते हैं परंतु उनकी चलनसे जान नहीं पड़ता. और उनकी मानता और भेट केवल मुखसे है पर मनसें नहीं. और जिस समय वह अपनी भेट और मान्ता चढ़ाने की इच्छा कर्ते हैं तो उस समय स्पष्ट बुझ पड़ता है कि मनसे नहीं चढ़ाते हैं.

७९ दृष्टांन्त

एक बालक और उसकी माताका.

एक लड़केने अपने संगके विद्यार्थी की एक पोथी चुराय अपनी माताके सन्मुख लाय धरी तब उसकी माता प्रेम कर्ने लगी परंतु उसका शासना न की. इस हेतसे उसके चोरीका सुभाव दिनदिन अधिक होने लगा. और जब बड़ा भया तब एक बड़ी चोरी में पकड़ा गया अंतको कचहरी में लाए और बिचारके प्रमान फांसी देनेकी आज्ञा दी गई. जब उसे ले चले तब उसकी माता रोते पीटते उस ठांव आई और उस अभागे पुत्रने माता को देखके बधिक से कहा जो आज्ञा होय तो मैं अपने मनकी बात माता से छिपायके कहूं. संक्षेप जब बालक इस छलसे अपना मुख उसके कानके निकट लया तब तुर्त माताका कान दांतो से काट लिया. यह गत देखके लोग उसको अति धिक्कार कर्ने लगे. तब वह

जुवा पुत्र बोला ए लोगो देखो मैं कैसी बिपता में पड़ा हूं. परंतु निश्चय कर्के मानो मेरी यह दुर्गत इस अभागी माताके कारन भई है. जो वह बाल अवस्था में चोरी कर्नेके लिये मुझे ताड़ना कर्ती तो अंत समय चोरीके कारन में इस सूलीके लग काहेको पहुंचता?

परीक्षा.

बाल अवस्था की कु सिक्षा संपूरन दुर्भाग्यताका मूल है.

८० दृष्टांन्त

एक चर्वाहे के बैपारका.

एक चर्वाहा अपनी बकरियों को नदीके तीर चरा रहा था इतने में जल की उज्ज्वलता देख सोभा देख अपने मनमें कहने लगा वह लोग बड़े उत्तम हैं जो ऐसे जल पर सदा आवा गमन कर्ते हैं. निदान उसको नदीके भ्रमन की बड़ी इच्छा हुई और बकरियों को बेच अंजीर फल मोल लिया और तुरंत जहाज पर लादके भ्रमन कर्ने चला. एक दिन अकस्मात् बड़ा भाड़ भया और जहाजको डूबने की जोखम हुई तब बैपारियों को संपूरन बनिज को वस्तु नदी मे फेंकनी अवश्यक हुई कि उसका प्रान बचे और जहाज बिपता से छूटे. पीछे उस दुखिया चर्वाहेने जिसकी सारी पूंजी मे वही अंजीर था सर्वस नदीमे डार दिया. और अंतको बनिज छोड़ फिर बकरी चराने लगा. एक दिन उसी नदीके तटपर बकरी चरा रहा था अकस्मात् जलकी उज्ज्वलता देख कहने लगा तुम और अधिक अंजीर मांगते हो?

उपदेश.

हमारे विषयमे सबसे अधिक वही बुरा है जो अपनी व्यवसाय को तजके ऐसा कर्म करें जिसका संपूरन कर्ना हमसे कठिन है.

८१ दृष्टांत

एक धनवान और बाघका.

एक धनवानने रातको स्वप्न मे अपने बेटेको देखा जो अहेर कर्नेकी बहुत इच्छा कर्ता था बाघने मार डाला. इसमें उस स्वप्न से उसके मनमें बड़ी शंका भई तब पुत्रको आखेट कर्नेसे निषेध किया और उसके चलने फिर्ने के लिये एक बड़ा सुंदर चित्रालय अपने भवनमे बनाया. और भांत भांत की छबि और चित्र प्रत्येक आकार के अहेरस्थान बनायके घरको सजाया. परंतु वह आखेट प्रेमी जुवा यही बूझा था कि यह क्रीड़ालय मेरे लिये कारागार है और मेरा पिता इसका रखवाला है. एक दिन उस चित्रालय को देखते देखते अकस्मात् उसकी दृष्टि एक बाघकी छबि पर पड़ी. और वह जान्ता था जो उसके बंद होनेका हेत उसी बाघका स्वप्न था इसमे क्रोध कर्के उसी बाघकी छबि पर एक मूका मारा. परंतु उसका मूका अचांचक उस लोहेकी कील पर जाय लगा कि जिसके संग वह बाघकी छबि भीतसे टंगरही थी. तब उसके हाथ में बड़ा घाव लगा और उसी हेतसे पीड़ित भया निदान मर गया. देखो

यह सर्वस पिताकी रखवाली कुछ काम न आई और उसका संतान बाघ ही के हाथों मारा पड़ा.

चेतना.

बड़त लोग अपनी मूरखता से नष्ट होते हैं और जिससे अधिक भय होता है उसके हाथमें पड़ते हैं.

८२ दृष्टांन्त

एक पूंछ कटी लोमड़ीका.

एक लोमड़ी जो जालमे फसी थी अंतको उसने यही भला बूझा जो पूछ को जाल में छोड़ दे और अपना प्रान बचावे. उसके पीछे बिना पूछ का दोष लोमड़ी को बुरा दिखाई दिया तब वह अपने जीवने से उदास भई. निदान उसको यही बूझ पड़ा जो अपनी जातके सकल श्रेष्ठ को बुलायके एक दिन उनके साम्ने यही उपदेश कथा पढ़ी. उसका वृत्तांत यह है अर्थात् पूछ अति तुछ वस्तु है और विशेष करके लोमड़ीयों के लिये यह महा निकृष्ट है. जब यह कथा समाप्त भई तब तुरंत एक जन उस जथे में से जो बड़ा बुद्धिवान था सो बोला हमे भला बूझ नहीं पड़ता कि इस कथा कहनेहारे की क्या इच्छा है? पूछ की बुराई का बखान करना भला है वा बिना पूछ के जो कुरूप दिखाई पड़ता है उस दोष को छिपाना भला है.

परीक्षा.

बड़तेरे उपदेश करनेहारे अपने लाभ के लिये उपदेश करते हैं.

८३ दृष्टान्त

एक लोमड़ी और कटीले वृक्षका.

एक लोमड़ीके पीछे कुत्ते लगे निदान भागके एक उपवनकी टट्टीमे जाय छिपी. और उस ठांव कटीला पेड़ था उस पर पांव धर्तेही लोमड़ीके पैर मे कांटा लगा. तब वह अति क्रोधित होयके उसको चाटने लगी और पीरके कष्टसे उस कटीले वृक्षको बुरा कहने लगी. तब वृक्षने कहा ए लोमड़ी! इतना कोप कर्ना उचित नहीं पहले मेरे कांटों को देखलेती पीछे मेरे ऊपर पांव धर्ती और मुझसे भलाई का भरोसा रखती इस लिये कि गड़ना और दुःख देना कांटेका सुभाव है.

लाभ.

लोमड़ी अर्थ ऐसे मनुष्य से है जो प्रथम जान बूझके अपने को आप बिपता मे डालता है और पीछे उसके हाथसे रोता है और निदान को निंदा कर्ता है.

८४ दृष्टान्त

लोमड़ी और बधिकोंका

एक लोमड़ी को बधिकोंने बहुत दौड़ाया था तब एक गांववाले से आसरा मांगा. उसने एक झोंपड़े की ओर सैन की और लोमड़ी उस ठांव जाय छिपी. बधिक लोग जो उसके पीछे दौड़े आते थे सो भी वहां आ न पहुंचे और उसी गांववाले से पूछा तुमने कोई लोमड़ी इस बाटसे जाती देखी है! उसने उत्तर दिया मैंने नहीं देखी परंतु जिस घर मे लोमड़ी छिपी थी उसी ओर

उंगलीसे सैन कर्ता था. बधिकोंने उसकी सैन को न बूझा और चले गए परंतु सैन को लोमड़ीने भीतके छेदसे देखा. और जब बधिक चले गए तिस पीछे लोमड़ी भी उस ठांव से निकलके चुपके चली जाने लगी. तब वह मनुष्य लोमड़ी से कहने लगा, ए लोमड़ी यह कैसा अन्याय है जो तू चुपके चुपके चली जाती है और बैरीके हाथसे बचनेका धन्यबाद नहीं कर्ती? लोमड़ीने उत्तर दिया सत्य है मेरे बचानेके लिये तुमने बधिकोंसे बऊतेरी भलाईकी बातें कहीं परंतु जो तुम उंगली से सैन न कर्ते तो मै अवश्य तुम्हारा धन्यबाद कर्के इस ठांव से जाती.

परीक्षा.

बऊतेरे लोग जैसा कहते हैं वैसा नहीं कर्ते.

८५ दृष्टांत

एक मूरत पूजने हारे और उसकी मूरतका.

एक मनुष्य किसी पुतलेको अपने घरमे लायके बड़ी प्रतीत से पूजता था. परंतु बऊत दिनके पीछे उसने यह बूझा कि जितना वह उसकी पूजा कर्ता है उतनाही अधिक दरिद्र हो जाता है. इसमे एक दिन अतिही क्रोध कर्के उस मूरत को एक पाथर पर पटक मारा और वह टूक टूक हो गई. परंतु उसमे से बऊत रुपैये निकले. तब वह पूजने हारा कहने लगा यह बड़ा अचंभा है कि इस कठोर मूरतकी मान्ता और पूजासे मेरे ऊपर

कुछ दया न ऊई और जब मैंने उसको तोड़ डाला तब उसमें से धन पाया.

परीक्षा.

संसारके लोग अपने मनोरथ के लिये पूजा करते हैं और जब अपनी कामना पूरी न होवे तब बुरा कहते हैं.

८६ दृष्टान्त

पिता और उसके पुत्रका.

एक गवांरने बऊत श्रम करके सुख चैनसे अपने दिन काटे थे. और उसकी इच्छा यह भई जो उसके पीछे भी उसीरीत अपनी जीविका पाया करें. इसमे मर्ते समय उसने अपने बचों को बुलायके कहा ए मेरे पियारे बचे मुझको यह उचित है जो मर्नेके पहले तुमसे यह बात कहूं. अमुक दाखके वृक्ष तले बऊत धन गाड़ा ऊआ है मेरे मर्नेके पीछे तुम उसको बऊत सावधानी से खोदियो. लड़को ने बापके शान्त होने के पीछे उस गड़े ऊए धनकी आसा पर दाखके वृक्षको कई बेर खोदा और एक कौड़ी भी न पाई पर अगली रितुमे दाखसे उनको बऊत लाभ दर्सा और पिताके बचनका अर्थ जो उसने मर्ते समय कहा था सो अच्छी रीत बूझा.

सिक्षा.

जो परामर्ष और उपदेश पिता अपने पुत्रोंके लिये कहके मर्ता है सो पैटक धन और पिता की धरोहरसे उत्तम है.

८७ दृष्टान्त

मछुआ और उसकी बांसुरीका.

एक मछुआ अपनी व्यवसायसे बांसुरी बजाने मे बऊत भला था एक दिन नदीके तीर पर बैठके बऊत अच्छी बंसी बजाई. परंतु एक मछली भी उसके निकट न आई. तब उसने बांसुरी को फेंक अप्ना जाल जल मे डाला और बऊत मछली फसी. परंतु जालमे मछलीका उछलना कूदना और उनका व्याकुल होना देखके मछुआ कहने लगा यह मछलियां बड़ी मूरख हैं. जब मैंने बांसुरी बजायके उनको प्रसन्न किया था तब कोई नहीं नाची कूदती थी और अब बिन राग और बाजनके सब नाचती हैं.

परीक्षा.

प्रत्येक काजके अंतमे भला वा उसका कुप्रज होना अप्ने कर्तब से संबंध है.

८८ दृष्टान्त

एक मछुएकी भागवानीका.

एक दुखिया मछुआ बड़ी बेरसे जलमे जाल फेंक रहा था पर कोई मछली उसमे नहीं फसती थी. अंतको निराश होय यह इच्छा की कि जालको निकाले और अपने घर जावे. इतने मे एक बड़ी मछली उसके जालमे आय पड़ी और उसके सारे दिनका श्रम वृथा न भया.

उपदेश.

धीरज धर्नेसे और सदाके सकल काज कर्ने से सिद्ध होता है और व्याकुलता से कुछ नहीं होता है.

८९ दृष्टांन्त

एक बूढ़े मनुष्य और यम दूतका

एक बूढ़ा लकड़ हारा एक बड़े लकड़ीके बोझ को दूर लग लेगया था. निदान अति निर्बल हो गया और उस गट्ठेको सिरसे नीचे डार दिया और अपनी इच्छासे यम दूतको बुलाने लगा तुरं आओ और मेरा कष्टनी-वारो. यम दूत उसकी बुलाहट सुन झट वहां आय खड़ा ऊआ और बूढ़ेसे पूछा हमे काहेको बुलाया था? तब वह दुखिया उसकी भयानक मूरत देख और उसके तुर्त आनेको बूझके बऊत घबराया और बेकल होय कहने लगा ए यम दूत दया कर्के इस बोझे को जो मेरे माथेसे गिरा है इसको उठाय देओ.

सिक्षा.

मनुष्य जो सहस्र कष्ट और दुःखमे पड़ा होवे तौ भी उस बुरे जीवनको मर्नेसे उत्तम बूझता है.

९० दृष्टांन्त

एक बन मनुष्यके राजका.

एक बाघके मर्नेके पीछे पशुओंमे इस बातका झगड़ा भया . अब उनमे से कौन उसकी ठांव बैठने के योग्य है. और कितने दावा दार उस बड़े राजकाजके लिये उपस्थित भए और कहने लगे हम उस राजके योग्य हैं. पर

अंतको एक बन मनुष्य जिसने सारे दलको अपने बरन बरनके मुंह बनाने और नाचने से प्रसन्न किया था सो उस राज के लिये माना गया. परंतु इस बातसे लोमड़ी अति कोपित और दुःखित भई और उस राजाके नष्ट करने की इच्छामे सदा पीछे लगी रही. और एक बेर राजा से यह कहा कि मैने एक ठांव मे बज़त बड़ा ऊआ धन पाया है और वह तुम्हारे राजमे है. निदान इसी छलसे उस बन मनुष्य को उस ठांव ले गई जहां गहरी खाई मे एक बड़ा फांदा लगाया था. यह सुन वह निर्बुद्धि बन मनुष्य उस ठांव आया और पांव धर्तेही झट फांदेमे फस गया और चिल्लायके कहने लगा ए कुजात लोमड़ी तूने अपने राजाको ठगा. लोमड़ी बोली ए मूरख राजा तुम दूसरोंकी रखवाली और रक्षा कर्ने का घमंड कर्ते हो और अपने फांदेको चीन नहीं सके.

परीक्षा.

जहां बन मनुष्य का राज है वहां लोमड़ी के समान उसके बज़त ठगने हारे होवेंगे.

६१ दृष्टान्त

अहंकारी खच्चरका.

एक खच्चर खाय खाय बज़त मोटा भया था और अपनी मोटाई को देख सदा बड़ाई कर्ता था कि मैं बड़े बापका बेटा और कुलवंत ह्रूं. एक दिन कहने लगा कि मेरा पिता घुड़ दौड़के पट परका शीघ्रगामी और बड़ा प्रसिद्ध एक घोड़ा था. परंतु जिस गदहीके औरस का था

अकस्मात् उसी समय उस ठांव रेंगने लगा. और सकल के पशु पटपर उसके जनमको जान्ते थे सो सब हंसने लगे. तब उस निर्बुद्धिको बूझ पड़ा जो उसका बाप गर्धव था.

परीक्षा.

नीच लोग दारिद्र अवस्था से जब धन वा श्रेष्ठता का पद पाते हैं तो बहुत करके अपने छोटे घराने और दुखिया नाते वालोंसे दबते और लज्जित होते हैं.

६२ दृष्टांत

कुत्ते और भेड़ियेका.

एक कुत्ता अपने स्वामीके द्वार पर पड़ा सोता था. इतने में एक भेड़ियेने उसको मार डालने की इच्छाकी. तब कुत्तेने बहुत बिनती से उसको कहा मैं बड़ा दूबर हूं और मेरा शरीर केवल ठठरी है मांसका नाम नहीं. परंतु कई दिनके पीछे मेरे यहां निमंत्रण होवेगा तो निश्चय मुझको मोटा करेगा. और जब मैं इस मतसे कुछ भला होऊंगा तब मैं अपने को तुम्हारे लग भेंट चढ़ाऊंगा उस समय मुझे चाहो मारो चाहो खाओ. भेड़ियेने उसका कहा माना और उसको छोड़ दिया. पर कई दिनके पीछे उसी कुत्तेको अपने घरमें देखके कहने लगा, तुम अपना बचन पूरा करो. कुत्ता बोला सुनो भाई जो और कभी मुझको द्वार पर अचेत सोता पाओ तो कदाचित् निमंत्रणके परन से मुझ को छोड़ आसाके वशमें मत पड़ियो.

उपदेश.

हमको चाहिये जो निसदिन सोते जागते अकस्मात् की आपदासे डर्ते रहें और सदा सचेत रहें.

६२ दृष्टांत

एक बाघके आशक्त होनेका.

एक बाघ किसी गवांर की जुवा कन्या पर बावरा भया और उसके पिताको बिवाहका संदेशा भेजा. तब उस दुखिया पिताने उस डरौने पशुसे भयमान होयके अवश्य अंगीकार किया परंतु यह बोधकी पहले उसके नख काटले और दांत उखाड़े आयं. तो वह सुकुमार कन्या उससे निडर होवे और स्वामी और स्त्रीका प्रेम अच्छी रीत बढ़े. उस पागल बाघने यह सब बोध-मानी तिस पीछे लड़की के पिता से ब्याहकी प्रार्थना की. और जब उसने बाघको बिना नख दांतके देखा तब तुर्त एक मोटी लकड़ी उठाय ऐसी मारी जिसमे बाघका प्रेम और आशक्त सब बिसर गया.

परीक्षा.

जो अधिक प्रेमसे बावरा होता है प्रेम उसको आंखों को अंधा कर्ता है निदान उसको न अपना धन न मान सूझ पड़ता है औ न उसको दुःख सुख की कुछ चिंता रहती है. और कभी ऐसा होता है कि उसी प्रेम और बावरे पनमे उसका प्राण भी जाता है.

—

६४ दृष्टान्त.

एक बाघिन और लोमड़ीका.

एक लोमड़ीने बाघिनकों ठठोली से कहा तू एक भोजमे केवल एकही बचा देती है. बाघिन ने उत्तर दिया सत्य है परंतु वह बाघका बचा है.

चेतना.

वस्तु का आदर भाव और मोल योग्यता और गुनसे होता है न उसकी गनितके हेतसे होता हैं.

६५ दृष्टान्त

कुक्कुटोंकी लड़ाईका.

दो कुक्कुट गोबरके ढेरे के कारन आपस मे युद्ध कर्ते थे. जब उनमेंसे एक हारा और भाग कें कोनेमे जाय छिपा तब दूसरा जो जीता था सो एक छात पर बैठ अपने जय होनेका समाचार देनेके कारन बेर बेर डेने भाड़ पुकारने लगा. इतने में एक बड़ा गिद्ध उसको अपनी थापमे उठाय लेगया. तब उस हारे कुक्कुटने झट कोनेसे निकल के उस ढेरेको अपने अधिकार में लिया. और उस जीते हुए कुक्कुट की कुक्कुटियों को पकड़ अपने निकट लाया.

सिद्या.

बुद्धिवान यद्यपि अपने बैरी पर जय होता है परंतु मूरखों की रीत धिक्कार नहीं कर्ता और बूझता है जो संसार सदा एक समान नहीं रहता प्रत्येक समयमें भांत भांतके रंग पलटता है.

९६ दृष्टांत

एक हिरनके बच्चे और पाढ़ेका.

एक हिरनके बच्चेने पाढ़ेसे पूछा हमें बड़ा अचरज होता है जो तुम कुत्तेको देखतेही तुरंत भागते हो. तौभी तुम उससे शरीरके अधिक बली और अस्त्र धारी हो और उस दुखियाके पास कोई शस्त्र नहीं तो कौन हेत है जो तुम उससे ऐसा भय कर्तेहो। पाढ़ेने उत्तर दिया तुम्हारा कहा सत्य है और मैं भी अपने मनमें बहुत कर्के यही कहता हूं परंतु इसका कारन मुझे बूझ नहीं पड़ता तिसपर भी बहुत बेर मैंने इच्छासे मनको पोढ़ा किया है कि न भागूं पर उस भौंकने हारों का शब्द सुनके मेरा पांव डग जाता है और भागनेके बिना कोई उपाय बन नहीं पड़ता.

चेतना.

यह बहुत बेर हमें बूझ पड़ा है जो यह काम हमारे कर्ने योग्य है परंतु कर नहीं सके. और यह भी जान्ते हैं जो कारम आदी कर नहीं सक्ते परंतु हम उसको कर्ते हैं. इसी हेतसे हमारा नाम क्रिया हीन विद्वान भया है और हमे विद्याका जानना वृथा हुआ है.

९७ दृष्टांत

जूपीटर और मधुमाखीका.

एक मधु माखीने थोड़ा मधु जूपीटरके सन्मुख भेटकी रीत से लाके धरा. तब जूपीटरने अति प्रसन्न होय ग्रहन कर माखीसे कहा जो जो भली वस्तू चाहेगीसो

तुभको मिलेगी. मांछीने यही प्रार्थना की मैं जिस ठांव डंक मारूं उसका गुन मार्ने हारे विषके समान होवे. जूपीटरने उसकी प्रार्थना को सारे कष्टिके कष्टका हेत बूभा माछी पर क्रोध किया और कहा कि यह अनुचित प्रार्थना कभी ग्रहन न होयगी. परंतु आगे को बूभ समभके अपना डंक किसी वस्तु पर मारियो. और जो तू अपने डंकको ऐसे अंगमे जिसका बेधा है छोड़ेगी तो जीती न रहेगी.

लाभ.

ईश्वर न करे जो अन्यायीके हाथ में प्रबल होवे वा दुःखदायी को उत्तम पद मिले.

९८ दृष्टांत.

मधुमाछी और मधुकी कलसीका.

एक बेर अनेक मधुमाछी एकत्र होय एक मधु कलसी में जाय पड़ीं और अधिक लोभसे इतना मधु खाया जो उस ठांव से उनको निकलने की शक्ति न रही. और जब मधु कलसीमे डूबने लगीं तब उनको यह बात अच्छीरीत बूभ पड़ी जो अधिक खानेका गुन और मूरखता का फल अंतको ऐसाही होता है.

उपदेश.

जब किसीको खाने पीनेकी चाह अधिक होती है तब बिन मृत्युके उसकी मुक्ति नहीं.

९९ दृष्टान्त

एक कुवे और अबाबीलका.

किसी कुवेने अबाबीलको निकलते और उड़ते शीत का ऋतु बूझकी अपनी कथा और गोदी को जो शीतकालमे ओढ़ना था उसे बेच डाला. क्योंकि कुवेने अबाबीलके निकलने से बूझ लिया कि ग्रीष्मकाल आया परंतु विपरीत भया और ठंढी बयार चलने लगी और कठिन शीत पड़ने लगी. तब वह निर्भय हुवा जिसने अपना शीत वस्त्र बेच खाया था निदान शीतके कष्टसे मरने लगा. और अकस्मात् उसी अवस्था मे अबाबीलको देख कहने लगा. तू बड़ा अभागा और अशुभ था जो विपरीत ऋतु मे उड़ा और मुझको भी अपने संग नष्ट किया.

चेतना.

निर्बुद्धि और अचेत लोग अपने को उपदेश नहीं करते हैं. वरन अपनी भूल चूक को दूसरे पर धरते हैं.

१०० दृष्टान्त

मर्कूरी और बढ़ईका.

एक बढ़ईके हाथसे उसका बसूला अकस्मात् नदीमें छूट पड़ा तब उसने यूनान देशी मर्कूरी देवताके निकट जो शिल्प कारों का देवता था जाय सहायता की प्रार्थना की जिसमे अपना बसूला फिर पावे. मर्कूरीने उस दुखिया को भरोसा देनेके लिये उस नदीमें डुबकी मारी और सोनेका बसूला निकाल उसको देने लगा. तब उस सच्चे बढ़ईने कहा यह बसूला मेरा नहीं.

इतने मे मर्क्यूरीने फिर डुबकी मार एक चांदीका बसूला निकाला. सोभी उसने न लिया। और बोला यह भी मेरो नहीं. संतोष उस देवताने तीसरी बेर एक और बसूला निकाला उसकी मूठ काठ की थी. तब बढ़ईने कहा यही मेरा बसूला है. निदान इस सत्याचार से मर्क्यूरीने प्रसन्न होय उस बढ़ई को सोने रूपे और लकड़ीके बेंटवाले तीनों बसूले दिये. यह बात सारे नगरमे फैली. और एक नीच धूर्त यह बात सुन उसी विषयमे अपने भागकी परीक्षा करने चला. और अपना बसूला जान बूझके नदीमे फेंक उसके तटपर बैठ रोने लगा और मर्क्यूरी को स्मरन करने लगा. इसमे मर्क्यूरीने अच्छी रीतसे डुबकी लगाय एक सोनेकी मूठ का बसूला नदीसे काढ़ उसको पूछा तेरा यही बसूला है? उस लोभीने अति प्रसन्न होय हाथ बढ़ायके कहा महाराज यही मेरा बसूला है. तब मर्क्यूरीने जो उसकी झूठी कामना को जान्ता था धमकाय के कहा ए कुजात लोभी तू हमें ठगने आया है? मैं तेरे मनका सारा भेद जान्ता हूं. यह कह के उसको निकाल दिया और बसूला न दिया.

उपदेश.

कोई २ संसारमे लोग ईश्वरको ठगने जाते हैं पर अंतको आपही ठगे जाते हैं.

१०१ दृष्टान्त

लोमड़ी और दाखका.

एक भूखी लोमड़ी अचांचक किसी दाखके उपवनमें जाय पड़ी. और उसके पक्के और रसीले दाखको देखके बड़ी अभिलाषी भई. और बड़ी बेर लग मचानकी ओर थाप मार्ती रही जिसमें किसी रीत ऊपर चढ़े. परंतु ऊपर जाय के भी फल न पाया तब बक्षत कूदने फांदने लगी. सो भी कुछ काम न आया. निदान जब बेबस भई तब क्रोध करके उस ठांवसे यही कहते कहते चली गई. यह दाख सारे कच्चे और खट्टे हैं और कदाचित् खानेके योग्य नहीं.

उपदेश.

हमको चाहिये कि निर्बल और उदास न होवें. और जब अपनी अभिलाषा से निरंस होवें तो निरास होय क्रोध करके उस बस्तुको बुरा न कहते हैं जो हमारे चाहत की थी पर हमारे हाथ न आई.

१०२ दृष्टांत

ऊंड़ार और बाघका.

एक ऊंड़ार और बाघ एकच होय आखेटको निकले. जब थोड़ी दूर गए तब भेड़िया बोला क्या तुम भेड़ोंका शब्द नहीं सुन्ते? थोड़ा तुम यहां ठहरो मैं तुम्हारे लिये एक अच्छा अहेर लाता हूं. यह कहके भेड़िया चला गया निदान एक भेड़ साल देखा जहां बक्षत भेड़ियां थीं. परंतु उसका द्वार बंद था और चारों

ओर से कुत्ते रखवाली कर रहे थे इसलिये भेड़िये से कुछ बन न पड़ा. अंतको लज्जित होय बाघके निकट फिर आया ओर कहने लगा मैंने बहुत भेड़ियां देखीं पर बिना खाए बड़ी दूबर ओर मृत्युवत् हो रहीं थीं इसलिये मेरा मन अहेर करनेको न चाहा.

परीक्षा.

मनुष्यका यही सुभाव है जब किसी उत्तम वस्तुसे निराश होता है तब अपने मनकी बूझके लिये उसकी निंदा बखान करता है.

१०२ दृष्टान्त

एक बालक ओर सर्पका.

एक बालक बाम मछरीको जलमे खोजता था. अकस्मात् उसके हाथ में एक सांप आ गया लड़केने उस सर्पको बाम मछरी बूझा ओर अति प्रसन्न भया. तब सांपने उस अचेतको जताया जो तू अपना जीवन चाहता है तो अपने हाथको मेरेसे दूर रख. क्योंकि जो तू जान बूझके मेरे ऊपर हाथ लगावेगा तो अंतको पछतावेगा.

सिक्षा.

अचेती ओर मनोरथ के काज को थोरा अवश्य बूझा चाहिये ओर जो घाट बिना सावधानीके प्रकाश होवे उसको भनो न चाहिये ओर जो काम इच्छासे कोई करे उसको भनो चाहिये.

१०१ दृष्टान्त
लोमड़ी और दाखका.

एक भूखी लोमड़ी अचांचक किसी दाखके उपवनमें जाय पड़ी. और उसके पक्के और रसीले दाखको देखके बड़ी अभिलाषी भई. और बड़ी बेर लग मचानकी ओर थाप मार्ती रही जिसमे किसी रीत ऊपर चढ़े. परंतु ऊपर जाय के भी पाल न पाया तब बऊत कूदने फांदने लगी. सो भी कुछ काम न आया. निदान जब बेबस भई तब क्रोध करके उस ठांवसे यही कहते कहते चली गई. यह दाख सारे कच्चे और खट्टे हैं और कदाचित् खानेके योग्य नहीं.

उपदेश.

हमको चाहिये कि निर्बल और उदास न होवें. और जब अपनी अभिलाषा से निरंस होवें तो निरास होय क्रोध करके उस बस्तुको बुरा न कहते हैं जो हमारे चाहत की थी पर हमारे हाथ न आई.

१०२ दृष्टान्त
ऊंड़ार और बाघका.

एक ऊंड़ार और बाघ एकत्र होय आखेटको निकले. जब थोड़ी दूर गए तब भेड़िया बोला क्या तुम भेड़ोंका शब्द नहीं सुन्ते? थोड़ा तुम यहां ठहरो मै तुम्हारे लिये एक अच्छा अहेर लाता हूं. यह कहके भेड़िया चला गया निदान एक भेड़ साल देखा जहां बऊत भेड़ियां थीं. परंतु उसका द्वार बंद था और चारों

और से कुत्ते रखवाली कर रहे थे इसलिये भेड़िये से कुछ बन न पड़ा. अंतको लज्जित होय बाघके निकट फिर आया और कहने लगा मैंने बहुत भेड़ियां देखीं पर बिना खाए बड़ी दूबर और मृतुवत् हो रहीं थीं इसलिये मेरा मन अहेर कर्नेको न चाहा.

परीक्षा.

मनुष्यका यही सुभाव है जब किसी उत्तम वस्तुसे निरास होता है तब अपने मनको बूझके लिये उसकी निंदा बखान कर्ता है.

१०३ दृष्टान्त

एक बालक और सर्पका.

एक बालक बाम मछरीको जलमे खोजता था. अकस्मात् उसके हाथ में एक सांप आ गया लड़केने उस सर्पको बाम मछरी बूझा और अति प्रसन्न भया. तब सांपने उस अचेतको जताया जो तू अपना जीवन चाहता है तो अपने हाथको मेरेसे दूर रख. क्योंकि जो तू जान बूझके मेरे ऊपर हाथ लगावेगा तो अंतको पछतावेगा.

सिक्षा.

अचेती और मनोरथ के काजको थोरा अवश्य बूझा चाहिये और जो घाट बिना सावधानीके प्रकाश होवे उसको भनो न चाहिये और जो काम इच्छासे कोई करे उसको भनो चाहिये.

१०४ दृष्टांत

एक चिड़ीमार और तीतरका।

एक चिड़ी मारने तीतरको धरा था तीतरने कहा जो तू मुझे छोड़ देवे तो मैं अपनी भांतके अनेक पक्षियोंको लाय तेरे जालमे फसाऊंगा. चिड़ी मारने यह बात सुन क्रोध करके उत्तर दिया यह कभी न होगा. और ऐसे नीचको कभी न छोड़ूंगा जो अपना प्राण बचानेके लिये अपनी जातके संग बुराई किया चाहता है.

उपदेश.

दूसरेके संग बुराई करनी ऐसी औगुन है जिसमें बुरे लोग भी उससे अप्रसन्न होते हैं और उसके करनेहारेको धिक्कार करते हैं.

१०५ दृष्टांत

कच्छप और खरहेका।

एक शीघ्र गामी खरहेने कच्छपको बाटमें जाते ऊपर देखके उसे तुच्छ जानके कहा मैने अपने जनममें तुझ ऐसा धीरे चलने हारा और बोदा पशु नहीं देखा. जब लग तू धीरे धीरे एक दो पैंड़ चलेगा तब लग मैं तुझ से कई कोस आगे निकल जा सक्ता हूं तू बड़ाही ढीला है. तब कछपने उसको उत्तर दिया यद्यपि तेरे साम्ने मैं बड़ाही ढीला और बोदा दिखाई पड़ता हूं पर मेरी इच्छा यही है जो तेरे संग अवध करके तेरे संग चलूं. संक्षेप एक दूरकी ठांव ठहराई गई और उन दोनों में से वहां लग कौन तुरंत आ सक्ता है. और लोमड़ी इस विषयकी

मध्यस्थ मानी गई. इस में वह दोनों एकही समय में उस निर्णय किये ऊए स्थान से चले. और खरहा एकही सांसमें बऊत आगे बढ़ गया और कछूप को छोटा करनेके लिये एक झाड़े के नीचे जाय यह ध्यान लगाय सो रहा कि जब वहां लग कछूप आवेगा तब मैं तुरंत उठ के उस से आगे निकल जाऊंगा. और अचेत पड़ा सोता था अकस्मात् कछूप उस ठांव आ पऊंचा. और उसको उसी ठांव सोते ऊए छोड़ अपने धीरे पैरोंसे उसी अवधके निशाने लग जाय पऊंचा और होड़ जीती परंतु उसका सहकर्मकारी न जगा.

उपदेश.

बड़ा बुद्धिवान जो उतावला होयके दौड़े और मुंहके भल गिर पड़े उससे वह निर्बुद्धि उत्तम है जो सदा एक समान काममे रहे.

१०६ दृष्टांन्त

सेव और गोबरके पोंड़वाले फूलका.

एक बेर बड़े बहाव में किसेक सेव और गोबर दोनों एक नदी की ओर बहे जाते थे. गोबरका पोंड़ सेवकी ओर देख बेर बेर शोकसे पुकारता था मेरे भागमें सेवके संग जाना न भया.

परीक्षा.

जो लोग अति नीच और अयोग्य हैं सो बऊत बड़ाई करते हैं और अपने को श्रेष्ठ बूझते हैं और दूसरोंके उत्तम करमको अपनो और संबंध करते हैं.

१०७ दृष्टान्त

एक अंधा मूषक और उसकी माताका.

एक अंध मूस अपनी मातासे कहने लगा। माता कोंग सुगंध आती है जिससे मेरा भेजा महक गया. और थोड़ी बेर भई तो फिर पुकार उठा कैसी चिल्लाहटका शब्द मेरे कानमे आता है. यह सुनके उसकी माता अप्रसन्न होय बोली बचे तूने आयको मेरे सम्मुख बड़ा अपमान किया. पहले मैं यही जान्ती थी जो तू केवल सूर दास है अब बूझ पड़ा कि तुझमें सूंघने और सुनेकीभी शक्ति नहीं.

चेतना.

यह सच है कि मनुष्य अनेक प्रकारके दोषमें लिप्त हैं परंतु जो अपने दोषको अधिक कह सुनके प्रकाश न करें तो दूसरे लोग कदाचित् उनका दोष बूझ नहीं सक्ते हैं.

१०८ दृष्टान्त

मधुमाखी तीतर और किसानका.

एक मधुमाखी का दल और तीतरका दोनों अति पियासे होय जल खोजते उड़ए एक किसानके ताल पर आय पड़ंचे. और यह आज्ञा मांगी कि जल पीके हम सब अपनी तृषा बुझावें. और तीतरोंने यह कहाकि उसकी अनुतके पलटेमे हम सब तुम्हारे दाखके उपवनको कोद देवेंगे. और माखियोंने कहा जो हम चारों ओर से तुम्हारे उपवनकी रखवाली करेंगे. तब किसानने उत्तर

दिया यह दोनों काम हमारे कुत्ते और बैल करते हैं तुम्हारी सहायता हमें आवश्यक नहीं और हमारा दाम हमारे अपने लोगों को सिखाना न पड़ाए जो.

शिक्षा.

हम अपने ही लोगोंके संग भलाई नहीं कर सकें तो पराए की खोज पीछे कर सकोगे.

१०९ दृष्टांत

एक मनुष्य और एक पिस्सूका

एक मनुष्यको पिस्सूने अब फेर फिर दुःख दिया जब निरुपाय होय यूनान देशी जुपीतर् देवताके निकट जाय सहायता मांगी. देवताने उसपर कुछ दया न की. परंतु अब पिस्सू पकड़ा गया तब वह मनुष्य अधिकताई से कहने लगा ए जुपीतर् जो तूने ऐसे थोड़े अन्याय में मेरा उपकार न किया तो बड़े अन्यायमें कदाचित् तेरी कृपाका भरोसा मैं नहीं रखूंगा. जुपीतरने उत्तर दिया सत्य है और तुझ ऐसे नीचको उचित है जो बड़े कठिन काज में मेरी कृपाका भरोसा रक्खा करे. क्योंकि तूने ऐसे सहज काम में मेरे से उपराने की प्रार्थना की थी.

उपदेश.

ऐसा मनुष्य जिस में थोड़ा भी संतोष नहीं उससे हम कभी ऐसी आशा नहीं रखते जो वह थोड़ी वा अधिक विपता से बचेगा वा दुःख न पावेगा.

११० दृष्टांन्त

दो स्त्रीवाले पुरुषका.

एक अधेड़ मनुष्यके केस आधे कचे और आधे पक्के थे और ऐसे समय में उस नें बड़े नेहसे दो ब्याह किये. एक तो उसके समान बैसकी थी जैसे उसकी बहन. और दूसरी बऊत छोटी सो उसकी कन्याके समान. और दोनों मिलके सदा उसकी सेवा मनसे कर्ती थीं. और उसके केसों को सुधार्ती और बंधी कर्ती थीं. परंतु बड़की उसके कचे केसों को सदा चुन्ती थी जिसमें उसका स्वामी बूढ़ा दिखाई पड़े और छोटकी पक्के केसों को उखेड़ती थी जिसमें वह पुरुष उसकी बैस का बूझ पड़े. निदान वह दुखिया थोड़ेही दिन में उन दोनों स्त्रीके कर्तूत से सिर मुंडा हो गया.

परीक्षा.

यह अति कठिन है जो मनुष्य दोनो ओर के बैर में अपने घाटे बिना एक का मेल करे. वा ऐसी नाव जो दो ओर की जाने हारी होय उसमें पग धर्ना अपने को आप नष्ट कर्ता है.

१११ दृष्टांन्त

जल के खोजने हारे मेड़कका.

एक बेर दुर्भिक्ष समय में दो मेंड़क जल खोजने निकले. और खोज कर्ते कर्ते उनको एक बड़ा गहरा कूप मिला जिसमें जल अनेक था. तब एक दूसरे से कहने लगा आओ इसमें कूदें. परंतु दूसरे ने उत्तर दिया तुम्हारी

इस बात से हमें कुछ भया बूझ नहीं पड़ता है. जो इसका मन सूख जाय तो हम ऐसे गहरे कूपसे कैसें निकसेंगे.

उपदेश.

प्रत्येक कारजके आदि से उसके अंतको बूझना चतुराई का चिन्ह है. और उतावले अंत को पछताते हैं.

११२ दृष्टांत.

कुत्ते और कुक्कुट और लोमड़ीका.

एक कुत्ता और कुक्कुट दोनों मिल परदेस को चले. जब रात होती तब कुत्ता पेड़के खोहेंमें रहता और कुक्कुट उसकी डाली पर सयन करता. एक बेर रातको जब कुक्कुटने अपनी बान पर शब्द किया तब एक भूखी लोमड़ी उसी वृक्ष के तले आय बैठी. और अपने हाथ और मुख को इस भरोसे पर चाटने लगी कि मैं आजका भोजन अति सवादिक से खाऊंगी. निदान वह दमनक की मौसी उस कुक्कुट के पंखकी चमक और सुंदर बरन का बखान करने लगी. और उसके पीछे कुक्कुटके सुर्ता के शब्द की अस्तुत प्रारंभ की. फिर अपने अमका बखान किया. मेरा अति सुभाग है जो ऐसे भागवानके दर्शन करीं और गले से लगती. तब कुक्कुट यह सुन के बोला भया जो तुम्हारी यह अभिलाषा है तो पहले द्वारी से कहो कि वह किवाड़ खोले तब तुम्हारी कामना पूरी होयगी. लोमड़ी को तो कुत्ते की रखवाली का कुछ भेद न था इसलिये कुक्कुटका कहा माना. और कुत्तेने झट लोमड़ी को मार डाला.

उपाय

जिस समय हमको ऐसे मनोंके संग युक्त करनी पड़े कि जिनके संग हम मन से नहीं मिलें उस समय हमारी निर्बलता का परामर्श करो है जो बन पड़े तो उनको उनसे बड़े बलवानोंके संग मिला दीजिये और आप अलग हो रहिये।

१११ दृष्टान्त

चमगीदड़ और कांटे और बगला.

एक चमगीदड़ और कांटे और बगला इन तीनोंने एकही भाग में व्यापार करने का वचन और करार किया. और चमगीदड़ने उस साझे में ऐसा रुपैया लाय दिया जितने की उसकी सामर्थ्य थी. और कांटेने उस व्यापार में कई थान कपड़े. और बगले ने कई मन सीसा उस वणिज में दिया था. निदान इन तीनों वणिकोंने व्यापार का सब जहाज में लादा और नदी की ओर चले. अकस्मात् एक ऐसी उलटी बयार चली जिस में वह जहाज मारा पड़ा. परंतु यह तीनों साझी बचि गये और दुःख पायके उस भंवर से बचे. उसी समय से दुखिया चमगुदड़ी ने जो दिन को कभी बाहिर नहीं निकलती थी और अचानक उस पर यह विपत्ति पड़ी तब बहुत डरी कि उसका महाजन उसको न पकड़े और कांटा भी उसी दिन से एक एक का आंचल पकड़ता था जिसमें उस कांटेके पलटे में और कुछ पावे. और बगला प्रत्येक नदीके तीर दृष्टि किये पड़ा फिरता था

जो किसीरीतसे पीतल के बासन का संधान तट पर पावे कदाचित् नदी की लहरों से बहां आय लगे होवे.

उपदेश.

किसी वस्तु से लोगोंके मन में इता दुःख नहीं होता है जैसा धन, और सामग्री के घाटे होवे से मन को कष्ट होता है. और मनुष्यको कोई वस्तुसे इतना शोक नहीं होता है जितना अर्थ की हानिसे होता है.

११४ दृष्टांत

लवा और वधिक का.

एक दुखिया लवा विपतका मारा एक वधिक के फंदे में आय फसा. और जैसे वधिकने उसको मारा वैसेही लवा विनति कर कहने लगा. ए निर्दय तू मुझे केवल एक क्षुद्र अपराध से मार्ता है तेरे दो चार दाने खाए हैं. सो भी उस समय में जब भूख से मर्ने लगा. चिड़ी मारने उत्तर दिया तूने अपनी आग बुझाने के लिये मेरा दाना खाया है अब मैं अपने क्रोधका अग्नि निर्वाह कर्नेके लिये तुझको नष्ट कर्ता हूं.

चेतना.

संसारका सब काम काज मनोरथके संग लगा हुआ है.

११५ दृष्टांत

एक कृपिन का.

एक अभागे कृपिनने अपने सर्वस्व अठावे को बेच सोना मोल लिया और उसको गजा कें धर्ती में गाड़ दिया. फिर प्रति दिन उस ठांव में जैसे कोई समाधिस्थ का

फेरीकर्ता है उसी रीत जाता. इसमें एक कंगाल पुर्तीका पड़ोसी उसकी भेदकी खटकन से बूझ गड़े हुए सोने को उस ठांव से खोदके लेगया और जब दूसरे दिन वह सूम गड़हे के लग आया. तब इस चोरी को बूझ बड़ा मलीन भया और रोने पीटने लगा. तब उसके एक मित्रने उसकी चिन्ताके हुए देखके कहा. ए बंधु बिना हेत काहेको उदास हुए रोते हो? जब तू अपने को सोनेका अधिकारी बूझता था उस समय उस सोने से तुझे और कोई लाभ न था. बिना इस ध्यान के जो वह तेरा है अब उसी गड़हे में उस सुवर्ण की ठांव तू एक पाथर धरके यही ध्यान किया कर जो तेरा धन वही है.

।दोहा। जो धन में अधिकार न भोग।
वा को जानो पाथर योग।

चेतना.

जो अशुभ धन आपको कष्ट देवे और हमारे कोई काज में न लगे तो वैसे धनको न रखना भला है. वा कोई दूसरी वस्तु जो हमारे काम न आवे वा उसके होते हमें कुछ सुख न दर्से तो ऐसे का न होना भला है.

११६ दृष्टांत

एक काले पाढ़ेका.

एक काला पाढ़ा बधिकों के भय से सूखे की ओर कभी नहीं जाता था. और सदा नदीके तट पर चर्ता और भयसे कांपके सूखे की ओर देखता. और काली आंख को

नदी की दिशा न रखता इस लिये कि उस ओर किसी
रीति की शंका न थी. परंतु बड़ा शोक है कि जिसको
उसने अपना शरन स्थान बूझा था उसी ठांव एक
नाव पर से ऐसा शर अकस्मात् उसको आय लगा और
यह कहके तुरंत मर गया. हाय. जिस दिशा को मैंने
निर्भय बूझा था उसी ओर से मेरे मृत्युका हेतु
उत्पत्ति हुआ और जिस ओर मैं से अधिक भय करता
था उससे हमें कोई कष्ट न हुआ. अब ऐसे समय में
मेरे भरोसेका हेतु यही है जो उपाय मे मैं अपने आप
किया वा जो मेरे से बन पड़ा था उस में कुछ घाट
न किया.

उपदेश.

इस संसार में सैकड़ों अनोखी विपत हम पर आती हैं
और उसका कोई उपाय हमसे नहीं होता है तोभी
हमको उचित है कि जहां लग अपने को बचाय सकें
वहां लग घाट न करें, तो निदान को पछतावे के दुःख से
मुक्ति पावें और जो अपने से न होय सके सो भगवान
को सौंपें.

११७ दृष्टान्त

एक पाढ़े और बाघका.

एक बधिकने पाढ़े का बहुत पीछा किया तब वह आकुल
होय उस समय अपना प्राण बचाने के लिये एक बाघ के
घर में घुस गया. और जब अन्यायी बाघके थाप में
मरने लगा तब पछताय के यही कहता था. हाय मैं

अभागा एक शत्रुके भयसे भागके दूसरे वैरी के

हाथ में आन पड़ा जो उससे भी अधिक बलवान और

अन्यायी था.

परीक्षा.

अनेक लोग व्याकुलता अथवा मूरखता के हेतसे सपंको

सहाई और शत्रुको मित्र बूझते हैं और छोटे वैरीके

भयसे बड़े शत्रुके स्थान में आसरा लेने जाते हैं सो

मारे जाते हैं.

११८ दृष्टांत

बकरी और दाखका.

एक बकरी को बधिकोंने बहुत दौड़ाया था. निदान वह

दाख के उपबन में जाछिपी और दाखके पत्तोंके आसरे में

बधिकों के कष्ट से बची; परंतु उसी समय उसने

बधिकों का दूर जाना बूझके दाखके पात चबाने लगी.

और जिस डालीके नीचे उसकी सींग ढंपी थी वही

डाली खाय गई. तब इसी हेत से एक बधिक ने जो

पीछे रह गया था उसने बकरी को देखके तुर्त दूसरे

बधिकों को पुकारा निदान वह सब उस पर टूट पड़े

और मार डाला. उस समय बकरी रोय रोय के यही

कहती थी मैं कृतघ्नी ने अपने योग्य प्रतीकार पाया इस

हेत से कि अपने सहायक को नष्ट किया जिसने मेरी

रक्षा की थी.

उपदेश.

ऐसे लोग बहुत कर्के अपना प्रतीकार पाते हैं जो अपने भले

कनहारेवी संग उपकार के बदले में अपकार करते हैं और अपने सहायक की बुराई सोचते हैं.

११९ दृष्टांत

गर्दभ और बाघ और कुक्कुट का.

एक बेर कुक्कुट और गर्दभ दोनों एकत्र होय घट घर में चर्ते थे अकस्मात् एक अन्यायी भूखा बाघ गदहे की ओर आया. तब कुक्कुट गर्दभ की यह विपत देख अपने शूरमा-पने से चिल्लाय के पंखको भाड़ने लगा और खुर भय से कांपके और ढेंचने लगा. बाघ कुक्कुट का ऊंचा शब्द सुन के तुरंत उस ठांवसे एक ओर चला गया. और उस निर्बुद्धि गर्दभ ने यह ध्यान किया कि जो कुक्कुट की भयानक चिल्लाहट् सुनके बाघ भागा और उसी चिंतासे मूरख गदहेने थोड़ी दूर तक उसका पीछा किया और जब बाघ और गर्दभ दोनों कुक्कुट की चिल्लाहट से दूर गए तब बाघने पीछे फिरके उस निर्बुद्धि को टूक टूक किया.

परीक्षा.

कादर लोगों का यही सुभाव है जो लैरी का सामना नहीं कर सक्ते हैं परंतु उसको डराने की इच्छा कर्ते हैं.

१२० दृष्टांत

एक माली और उसके कुत्ते का

एक माली का कुत्ता अकस्मात् कूपमें गिर पड़ा माली दया कर्के उस कूपमें उतरा और चाहा हाथ बढ़ावे तो उसके सहारेसे कुत्ता बाहिर निकले और ऐसा न होय

अभागा एक शत्रुके भयसे भागके दूसरे बैरी के
हाथ में आय गया जो उससे भी अधिक बलवान और
अन्यायी था.

परीक्षा.

अनेक लोग आकुलता अथवा मूरखता के हेतसे सर्पको
सहाई और शत्रुको मित्र बूझते हैं और छोटे बैरीके
भयसे बड़े शत्रुके स्थान में आसरा लेने जाते हैं सो
मारे जाते हैं.

११८ दृष्टांत

बकरी और दाखका.

एक बकरी को बधिकोंने बज़त दौड़ाया था. निदान वह
दाख के उपबन में जाछिपी और दाखके पत्तोंके आसरे में
बधिकों के कष्ट से बची; परंतु उसी समय उसने
बधिकों का दूर जाना बूझके दाखके पात चबाने लगी.
और जिस डालीके नीचे उसकी सींग छपी थी वही
डाली खाय गई. तब इसी हेत से एक बधिक ने जो
पीछे रह गया था उसने बकरी को देखके तुर्त दूसरे
बधिकों को पुकारा निदान वह सब उस पर टूट पड़े
और मार डाला. उस समय बकरी रोय रोय के यही
कहती थी मैं कृतघ्नी ने अपने योग्य प्रतीकार पाया इस
हेत से कि अपने सहायक को नष्ट किया जिसने मेरी
रक्षा की थी.

उपदेश.

ऐसे लोग बज़त कर्के अपना प्रतीकार पाते हैं जो अपने भले

कृतघ्नलोग सदा उपकार के बदले में अपकार करते हैं और अपने सहायक की बुराई सोचते हैं.

११९ दृष्टांत

गर्दभ और बाघ और कुक्कुट का.

एक बेर कुक्कुट और गर्दभ दोनों एकत्र होय घट घर में चरते थे अकस्मात् एक अन्यायी भूखा बाघ गदहे की ओर आया. तब कुक्कुट गर्दभ की यह विपत देख अपने सूर्मापने से चिल्लाय के पंखको झाड़ने लगा और खुर भय से कांपके और रेंगने लगा. बाघ कुक्कुट का ऊंचा शब्द सुन के तुरंत उस ठांवसे एक ओर चला गया. और उस निर्बुद्धि गर्दभ ने यह ध्यान किया कि जो कुक्कुट की भयानक चिल्लाहट् सुनके बाघ भागा और उसी चिंतासे मूरख गदहेने थोड़ी दूर लग उसका पीछा किया और जब बाघ और गर्दभ दोनों कुक्कुट की चिल्लाहट से दूर गए तब बाघने पीछे फिरके उस निर्बुद्धि को टूक टूक किया.

परीक्षा.

कायर लोगों का यही सुभाव है जो बैरी का सामना नहीं कर सकते हैं परंतु उसको डराने की इच्छा करते हैं.

१२० दृष्टांत

एक माली और उसका कुत्ता

एक माली का कुत्ता अकस्मात् कूपमें गिर पड़ा माली दया करके उस कूपमें उतरा और अपना हाथ बढ़ाया तो उसके सहारेसे कुत्ता बाहिर निकले और ऐसा न होय

जो वह मर जावे, परंतु उस मूरख कुत्तेने यह बूझा जो माझी और भी डुबाया चाहता है तब उसने उंगली में काटा. माझी उसके कुकर्म से अप्रसन्न होय बाहिर निकल आया और कुत्तेको उसी मत में छोड़ कहने लगा मैंने तो उत्तम पलटा पाया इस हेतुसे कि जो निर्बुद्धि उपकार का मान कुछ नहीं बूझता है ऐसे के संग मैंने भलाई करी कष्ट पाया.

उपदेश.

उपकार दो ठांव में अपकार के समान होता है एक तो ऐसे के संग जो हितकारी के भले को नहीं बूझता है दूसरा उसके संग जो हितकारी से संपूरन अचेत है.

१२१ दृष्टान्त

सांप और केकड़ा.

एक बेर सर्प और केकड़े में बड़ी मित्रता भई. केकड़ा तो सचा और मनका शुद्ध था इस लिये अपने मित्र को उपदेश की रीतसे कहने लगा भाई सीधी बाट चलो और टेढ़ा चलना छोड़ दो. परंतु सांप अपनी चलन से चलता था बिना टेढ़ी चलन के दूसरी चाल नहीं जान्ता था. अंतको केकड़ेने उसकी टेढ़ी चालसे अप्रसन्न होय मित्रता तज दी. और थोड़े दिनके पीछे उसको मुआ हुआ और सीधा पड़ा देखके कहने लगा, ए मेरे तिर्छे चालके मित्र तुम्हारी कभी यह मति न होती जो तुम अपने जीते ऐसे सीधे होते जैसे मरेंके पीछे देख पड़े.

उपदेश.

बुरे लोग भलों का उपदेश कदाचित् नहीं मान्ते और बुराई नहीं छोड़ते हैं अंतको उसीसे मारे जाते हैं.

१२२ दृष्टांन्त

चर्वाहे और भेड़ियेके बच्चेका.

कीसी चर्वाहे ने एक भेड़ियेका बच्चा पाया और घरमें लाय के अपने कुत्तोंके संग पालने लगा. इसी रीत वह बच्चा उनकी संगत् में खाय पीय के बड़ा भया और जब सब कुत्ते भेड़िये के आखेटको जाते तब वह भी उनके संग जाता. और किसी समय ऐसा संयोग होता जो भेड़िये भाग जाते और कुत्ते भाग जाते और कुत्ते उनका पीछा न पाते परंतु घरका पाला भेड़िया उनके पीछे चला जाता था और अपने भाई बंधु में जाय उनको लूट का साझी होता तिस पीछे फिर अपने चर्वाहेके लग आता. और जब कभी उस ठांव झंड़ारों के आखेट से निरंस रहता तब इस ठांव आयके किसी भेड़ीको जो अपने झुंड से दूर जाय तितर बितर हो गई है उसको धरके खाता. और इसीरीत सदा नष्टकर्ता. निदान एक बेर उसके स्वामीने देखा जो वह एक मोटी भेड़ी को फाड़के खा रहाथा. तब बिना पूछे पाछे उस् बिश्वास घातीके गले में डोरीबांध के टांग दिया और मारडाला.

उपदेश.

ऐसे सुभाव को निश्चय करके नीच और अशुभ कहना उचित

है जिसमें पावना और गिरूका लक्षण उत्पति नहीं होता और नीचके मनमें उपदेश प्रवेश नहीं करता.

१२३ दृष्टान्त.

बाघ और लोमड़ी और हुंडार का.

एक बेर बाघ जो सारे तृणाहारी और मांसाहारी पशुओं का राजा था रोगी भया. तब उसकी प्रजा और बन की सेना पीड़ा का लेखा पूछने आई परंतु लोमड़ी नहीं आई. इसमें कुसात भेड़ीयेने घात पायके लोमड़ी के विषय में निंदा आरंभ की. अब मैं आपके सम्मुख सत्य निवेदन करताहूं लोमड़ी जब ऐसे समय में महाराज के पद पंकज से दूर रही है तो यह केवल अहंकार और गर्व का हेत है. परंतु लोमड़ी भेड़ीयेके निंदा करने का संदेसा पाय बाघ के सम्मुख आय उपस्थित भई. और बाघ को अपने ऊपर अति क्रोधित पाय बड़ी बिनति और चिरौरी से निवेदन किया. ऐसे समय इस दासी के सम्मुख न आनेका कारन यह था जो मैं आपकी पीड़ाका समाचार पायके बड़ी सोच में रही जो किसी ठांवसे औषध दुर्लभ इस रोग के योग मेरे हाथ लगे. अब परमेश्वर की कृपा और आपके भाग से एक अति परीक्षित औषध बड़ी खोजसे बूझ पड़ी है. बाघने अति हर्षित होय के पूछा वह कौन औषध है? उसने उत्तर दिया जो भेड़ीयेका चाम उसके शरीर से निकाल चाम पुरलेक के तत्ता तत्ता महाराज के अंग पर चारों ओर लगाया जावे तो निश्चय है जो जलदी आपको

शीघ्र आरोग्य होवे. भेड़ीयेने जब यह गतदेखी जो बाघ ने लोमड़ीके उपाय को अतिही ग्रहण किया तब तुर्त उस ठांवसे पधारा. परंतु लोमड़ी ने बड़ी फुर्तीसे बाघ के सब मंत्री और प्रधानों को कहके तुरंत उसका संपूरन चाम उधेड़वाया. उस समय उस भेड़िये ने दूसरे निंदा करनेहारोंके कानमें धीरेसे कहा मैंने यह काज सारे निंदकों के कारन बड़े भय और उपदेश का किया है कि वह लोग उसको देखें और सुर्त करेंगे और इसके पीछे अपनी जातके विषय में उसको न होते निंदा करके राजा का मन उसके ऊपर कभी कोपित न करेंगे.

सिक्षा.

निंदक लोग अति नीच और कुजात होते हैं और जब उनकी निंदा और कलंक लोगोंके सन्मुख प्रकाश हो जाता है और वे अपने उचित फल पाते हैं तब उन लोगों को बड़ा हर्ष होता है.

१२४ दृष्टान्त

एक मदमाते और उसकी स्त्रीका.

एक स्त्रीने अपने स्वामी को जो सदा मतवाला होता था एक बेर बड़ी अचेतीसे मृत्युवत् हो गया था. उसको उठाय के एक सूनी गोर में धर आई. और जब उसने जाना जो वह चेत में आया होगा उस समय फिर स्त्री उस ठांव जायके गोरस्थानके द्वार को ठक ठकाने लगी. वह मतवाला पुरुष गोरके भीतरसे बोला कौन है? उसकी ओर न एक भयानक शब्द करके उत्तर दिया

मैं अमुक मनुष्य हूं जो मुर्दों का आहार सदा खाता है इसमें मतवाला कहने लगा ईश्वरके निमित्त अन्न को रखके थोड़ी दारू लाओ. हमें बड़ा अचरज होता है उस मनुष्य से जो हमारा मन पहचान्ता है कि मेरे निकट बिना मदके खाने को लाए. तब वह स्त्री ऐसे शब्दसे बोलने लगी जिसनें वह पुरुष उसको चीन्हे हमें अब बूझ पड़ा जो तेरा रोग औषध से कभी भला न होगा और बुरा प्रतीकार पावेगा इस लिये कि जिसको तू बड़ा मित्र बूझता है वही तुझे तुरंत नष्ट करेगा, अब हमें यही शोक है कि तू अपनी मृत्युके पहले मुझको दूसरे लोगोंके अन्नका मंगता करेगा.

सिक्षा.

यह प्रसिद्ध है जो कु सुभाव अति नीच वस्तु है और जो मनुष्य बुरे सुभाव में बंद होता है उसकी प्रकृत बिना मरे नहीं छुटती है.

१२५ दृष्टांत

काले काग और हंस का.

एक काले कौवे ने यह ध्यान किया जो जंगली हंस की सारी भलाई और सुंदरता का हेतु एक यह है जो वह बहुत करके अपने को जलसे धोता है दूसरा उसका आहार एक उत्तम प्रकार का है. काग की इच्छा भई जो आप भी उसके चलन को अंगीकार करे तो वह भी वैसा ही हो जावे. निदान इसी रीत उसने अपनी जात के आहार बवहार को तज के सदा नदी की ओर झील के

तीर पर रहने लगा और अपने पंखको धोने लगा. जब थोड़े दिन बीते तो उसको यह बूझ पड़ा जो सदा पंखों को धोनेसे और जल में बस ने से हमें जाड़ की पीड़ा होवे-गी और मेरे पंख अब लग उज्जल न भये वरन कालेही रहे. अंत को वह काग उसी रोग में मर गया.

चेतना.

अपनी मूल प्रकृति और ईश्वरके दिये ऊए सुभाव को पलट ने का ध्यान करना अति मूर्खता है.

१२६ दृष्टांत

अबाबील और काग का.

एक काग सुंदरता के विषय में अबाबील पक्षीके संग विवाद कर रहा था. निदान काग ने यह कहा जो तुम्हारी सुन्दरता केवल एक बसंत कालमें है परंतु मेरी सुघड़ाई और सुंदरताई नित्य की है जो एक बरस तक समान रहती हैं.

उपदेश.

जो सुन्दरता तुरंत जाती रहे उससे सदा की सुघड़ाई उत्तम है.

१२७ दृष्टांत

बुलबुल और चम्गुदड़ीका.

एक मधुर शब्द का बुलबुल पिंजरेमें बंद था. रात को कहानी कहता और सारे दिन चुप रहता. किसी चम-गुदड़ीने उस से पूछा कि तू जिस रीत रात को बोलता है उस रीत दिन को क्यों नहीं कहता है? बुलबुल ने उसका

उत्तर यह दिया मैं दिनको गाते डर पकड़ा गया इसी हेतसे यह उपदेश मागा जो दिनको गाना उचित नहीं तब अममुदड़ीने उत्तर दिया तुझको बंद होनेके पहले यह बात अंगीकार कर्नी उचित थी अबतो फंस चुका और इस बचाव से तुझको कौन गुन दर्शेगा? इस लिये कि तुझ को इससे अधिक कष्ट में बंद होना न होगा.

उपदेश.

हम लोग उस समय उपदेश मान्ते हैं जब हमें उससे कोई फल नहीं होता है.

१२८ दृष्टांन्त

एक बालक और घोंघों का.

एक बालक जब घोंघों को भूना तब वे सब भुन्ने के समय व्याकुलता से रोय पुकार कर्ते थे? और बालक प्रसन्न होता था और जब वह कठोर भोजन कर्ने बैठता तब उनके संग यही बात चीत कर्ता जो तुम लोग अति रसिक पक्षी हो इस लिये कि जिस समय तुम्हारा घर जलता था तब तुम राग गाते थे.

उपदेश.

दुःखी और उपद्रवित को बनायके हंसना बड़ी शत्रुता और कठोरता है.

१२९ दृष्टांन्त

दो विदेशी और मुहरों की थैलीका.

दो परदेशी एकत्र होय चले जाते थे. अकस्मात् एकने राह में

एक थैली पड़ी ऊई देखके उठाय ली और दूसरे से कहने लगा देख मैंने मुहरों की थैली पाई. उसने उत्तर दिया कदाचित् ऐसा न कह जो मैंने पाई वरन ऐसा कह कि हमने पाई. इसलिये कि हम दोनों जने आपस में भ्रमन के संगी हैं. तब वह मनुष्य कहने लगा. भाई ईश्वरके लिये छमा कर यह थैली मैंने पाई. अवश्य यह मेरा धन है. संछेप ये दोनों आपस् में विवाद कर रहेथे इतने में एक चिल्लार मचउठी देखो ए चोर हैं जिन्हों ने बाट् में मुहरों की थैली चुराई है. इस चिल्लाहट्के सुन्ते ही थैली पाने हारा शोककर्के कहने लगा भाई हम अब नष्ट ऊए. उसके साथीने उत्तर दिया कदाचित् मत्कह जो हम नष्ट भए वरनमैं नष्ट ऊआ इस हेतसे कि जब मैं पानेमें तेरा साझी न था तो तू अब कभी ऐसा ध्यान मत कर जो मैं तेरे दुःखका साझी होऊंगा.

परीछा.

मनुष्य की रीत है जो दुःख में साझी और अपने दुःख का संगी ढूंढ़ता है परंतु दूसरों को धन का साझी नहीं कर्ता.

१३० दृष्टांत

दो मेंड्कों का.

दो मेंड्क एक पड़ोस में बस्ते थे. पर एक उन में से बड़े ताल में रहता था और दूसरा एक सड़ी छिछली खाई में बस्ता था. ताल के मेंड्क ने जब देखा कि उसके

पड़ोसी का जल सूखने लगा तब दया करके चाहा जो उसको अपने ताल में ले जावे जिस ठांव वह भांत भांत के चैन और सुख से दिन निबाह कर सक्ता है. खाई के मेंड़क ने तो अपने पड़ोसी के प्रेम की कथा बूझी तोभी कहने लगा जो मुझे पुराने घरकी बड़ी माया है मैं कभी उसको तज नहीं सक्ता. निदान ऐसी दया उत्पत्ति करके हारी बातों को न मानने का फल यह मिला जो एक गाड़ीवान अपनी गाड़ीको उसी सूखी खाई से हांके लिये जाता था. और वह निर्बुद्धि मेंड़क उसके पहिये के नीचे दब के मर गया.

परीक्षा.

काई कोई लोग ऐसे माठे और निर्बुद्धि होते हैं जो वे खाई में गाड़ीके नीचे दबके मर जायंगे परंतु अपने बाप दादे के अशुभ ठांव को छोड़ दूसरी ठांव नहीं जावेंगे.

१३१ दृष्टांन्त

मधुमाखी और उसके रक्षक का.

एक चोर मधुके उपबन में आया जहां माखी को पालते हैं और उस समय उसका रखवाला वहां उपस्थित न था इसलिये केवल उन छत्तों को चुराय ले गया. जब उसका अधिकारी उस ठांव आया और उस वृत्तांत को देख खड़ा होय संधान कर रहा था. इतने में मधुमाखियां झुंडका झुंड मधु भरी ऊई बाहिर से अपने घर में आईं. और जब उन्होंने अपने छत्ते न पाए तब सबके सब एकत्र होय उसी अधिकारी पर टूटीं. निदान वह

झुंझलाय के बोला ए माखियो तुम बड़ी बिना सावधान और धन्यवाद हीन हो. तुम सभोंने उस लुटेरे को कुछ न छेड़ा जिसने तुम्हारे घर बार को नष्ट किया. और मैं तुम्हारी भलाई की चिंता में पड़ा ऊआ था जो किसी प्रकार से तुमको रक्षा करूं और तुम्हारे घाटे को सुधारूं सो तुमने अपने बिष भरे डंकों से मुझे नष्ट किया.

परीक्षा.

बऊत बेर ऐसा संयोग होता है जो ढीठ और निर्बुद्धि लोग अपने मित्रों को बैरी बूझके दुःख देते हैं.

१३२ दृष्टांत

एक मुर्गाबी पक्षी का.

एक डर्पोक मुर्गाबी ने अपनाघर एक नदीके तीर बिल में बनाया जिसमें लोगोंके उत्पात से अपने बच्चोंको रक्षा करे और सुखसे रहे. परंतु जब वह अपने बच्चोंके कारन चारा खोजने बाहिर गई थी उसी समय बड़ी आंधी आय उसके घोंसले और बच्चोंको उड़ाय ले गई. और जब उसने आयके घरका नास देखा तब हाहाकार करके कहने लगी मैं ऐसी अभागी हूं जो एक बिपत्के भयसे भागके दूसरे काल के मुंह में जाय पड़ी.

उपदेश.

बऊत लोग थोड़े कष्टके भयसे इस कारन भागते हैं कि अपनी रक्षा करें परंतु उससे भी अधिक बिपतमें अपनेको

फसाते हैं और कुम्भीर के मुख को अपने आसरे की ठांव बूझते हैं.

१३३ दृष्टांत

एक मछुए और उसके पड़ोसीका.

एक मछुएने मछली धर्नेके लिये जाल डाला. और जब उसके समेटनेका समय आया तब वह लाठीसे जल को पीटने लगा तब मछलियां भाग के जालमें आय पड़ीं. यह देख के उसका एक पड़ोसी धिक्कार कर्ने लगा वह कैसा अन्याय है जो तू सारे जलको इसी रीत गदला कर्ता है हम कैसे पीयेंगे? मछुएने उत्तर दिया बिना दो बातके बन नहीं पड़ता वा तुम्हारे जलको गदला करूं नहीं तो अपनी जीविका और व्यवसाय को तजूं अब कहिये कौन काज करूं और कौन न करूं.

चेतना.

यह बड़ी अभाग्यता और शत्रुता है जो हमारा अवश्यक कारज दूसरे के घाटेका हेत होवे अथवा किसी काम का कर्ना और न कर्ना दोनों अपने लाभ की हान करे.

१३४ दृष्टांत

बनमानुष और डाल्फिन मछलीका.

एक बनमानुष और किते लोग एक जहाज पर चढ़ेथे अकस्मात् आंधीसे जहाज डूबने लगा. और जब सब लोग अपने प्राण की रक्षाके लिये सिर पीटते थे तब समुद्र की डाल्फिन मछली जो बड़ी प्रसिद्ध और डूबते मनुष्यको बचाती है उसने बनमानुष को मनुष्य की जाति बूझके

अपनी पीठ पर डाल तीर की ओर चली. और जब
बनमानुष निर्भय पीरियस भूमके लग पज़ंचा तब
डाल्फिन ने बनमानुष से पूछा क्या तू यूनान देशका है?
उसने उत्तर दिया मैं सदा से यूनान के घराने का हूं.
जब डाल्फिन ने पूछा तुम पीरियस को चीन्हते हो? तब
बनमानुषने यह ध्यान किया कि पीरियस किसी मनुष्य
का नाम है और वह बज़त फुर्ती से बोल उठा मैं उसको-
अच्छी रीत जान्ता हूं वह मेरा बड़ा मित्र है. यह
सुनके डाल्फिन बनमानुषके निर्लज्जपन से इतनी अप्रसन्न
ज़ई जो तुरंत उसकी जांघतले आपको खैंच लिया तब
वह छत्रिम यूनान देशी उसकी पीठसे गिर पड़ा और
डूब गया.

उपदेश.

विपत् और कलंक बज़त करके झूठे और छत्रिम लोगोंके
भाग में होती है.

१३५ दृष्टांत

मर्क्यूरी और मूरत बनाने हारेका.

एक बेर मर्क्यूरी देवताने इच्छा करके अपना भेस मनुष्यके
समान किया और एक बड़े प्रसिद्ध मूरत बनानेहारे की
हाट मे यह बात बूझने गया जो लोग उसको कैसा जान्ते
हैं और उसका मान और मर्यादा उनके निकट कितनी
है. पहले मूरतवाले से ज्युपीटर की मूरत का मोल पूछा
तिस पीछे जूनो की मूरतका भाव किया. उसने पुतलों
का मोल कहा. इतने में मर्क्यूरी ने अपनी मूरतको देखा

जो उसीके सरीखे सकल तिस बीर देखा उस मूरत के अंगमें अच्छी रीति से चित्र किया था. तब अपने मनमें कहा यह मेरी प्रति मूरत है बीर इसमें मेरे सारे लक्षन पाए जाते हैं. तो मैं ज्युपीटर का दूत हूं बीर यह सब शिल्पकार का पालनेहारा परंतु वे सारे मेरे आधीन हैं. मुझको यह ध्यान पड़ा जो इस मूरत का मोल बीस गुन अधिक मांगेगा. फिर मर्क्यूरी ने उससे पूछा इस देवता की मूरतका क्या नाम है? मूरतवालेने कहा तुम बड़े भले मनुष्य बूझ पड़ते हो अब तुम इन दोनों मूरतोंका मोल लो बीर इस पुतले को मैं तुमको सेंतमें देऊंगा.

सिच्छा.

इस बातका जानना हम को उचित है जो हमारे परोसी हमको कैसा बूझते हैं वा उनकी दिष्टिमें हमारा कैसा भाव बीर मान है बीर वे सब हमारे अनेक वृथा व्यवहार बीर दुर्गुनको त्याग करा सके हैं.

१२६ दृष्टान्त

एक अहेरिक बीर रखवाले कुत्तोंका.

एक मनुष्यने दो कुत्ते पाले थे. एकको अहेरके लिये बीर दूसरे को घरकी रखवाली के कारन. अहेर करनेहारा कुत्ता मटपट से जो कुछ आखेट करके घरमें लाता था घरका कुत्ता उस में साझी होता था. एक दिन अहेर करनेहारा कुत्ता क्रोध करके बोला यह कौन हेत है जो मेरे दुःख बीर श्रमकी वस्तुमें दूसरा साझी होवे? तब

घरके कुत्तेने उत्तर दिया तुम्हें इस बातको बूझना चाहिये जिस समय तुम अपने स्वामीके मन प्रसन्न कर्नेके लिये और लाभके कारन आखेट कर्ते हो उस समय मैं सबकी भलाई के लिये घरकी रखवाली कर्ता हूं.

उपदेश.

यद्यपि हम लोगोंका काम काज भिन्न भिन्न होवे पर हम सब मिलके एक दूसरे को लाभ दर्सा सक्ते हैं और सभों के कामसे अधिक लाभ होय सक्ता है.

१२७ दृष्टांन्त

झंडार और बकरी के बच्चेका.

एक कुजात भेड़िया एक दुखिया बाट भटके झुण्ड बकरी के बच्चेको धर्नेकी इच्छा से पीछे दौड़ा. अब उस निरुपाय ने कोई आसरा और बचाव न पाया तब उसकी ओर फिरा और कहने लगा मैं बूझता हूं जो मेरी मृत्यु तेरे हाथ में है और मुझे निश्चय है जो तू मारेगा और खावेगा. अब मैं चाहता हूं जहां लग होय सके तहां लग आनन्द और प्रसन्नता से मरूं इस लिये मैं बिनति से कहता हूं कि तू एक राग मगन होयके गा पीछे मुझे हनियो. मूरख भेड़ियाने तो इस बात को न बूझा और धोखे में आयके बड़े बलसे गला फाड़के गाने लगा. और उसका सुहाना सुर सुनके आखेट कर्नेहारे कुत्ते झुंड के झुंड आय पड़े. तब बकरीके बच्चेने उस ठांवसे भागके अपनी बाट ली. और भेड़िया अपने मनमें सोचने लगा जो यह बिपत् मेरी ही मूर्खता से मेरे ऊपर पड़ी

क्योंकि मैं जिस काम को नहीं जान्ता था उसी में पैठा.

उपदेश.

हमको सदा बचाव कर्ना और समझके चलना चाहिये इस कारन जो जो अपने सिमाने से कभी पांव वाहिर न धरें और ऐसे काम में हाथ न डालें जिसकी योग्यता हमारे में नहीं.

१३८ दृष्टांन्त

मूरख गवैयेका.

एक कुशब्द गानेहारा अपनी कोठरी में बैठके सदा गाने को चालना कर्ता था. थोड़े दिन पीछे उसको अपनी विद्या और निपुनता पर ऐसा निश्चय ऊआ जो अब सभामें जायके इस गुन का प्रकाश किया चाहिये. इसी रीत एक दिन एक बड़े मेलेमें जायके बड़े गर्वसे अपने सुरको साधने लगा और उस ठांव भांत भांत के राग जान्नेहारे गवैये एकट्ठे भये थे. परंतु उस ठांव के लोगों के उसके बुरे सुर और कचे पनसे ऐसी घिन भई जो उसको हंसी करके उस करके उस ठांव से निकाल दिया.

चेतना.

हमारी चाल ढालको हमारे पड़ोसी की आंख कान हमसे उत्तम देखते और सुन्ते हैं. वा हमारे दोष को दूसरे लोग अच्छी रीतसे जान्ते हैं.

१३९. दृष्टांन्त

कुक्कुट और चोरोंका.

एक किसान के घरमें कितेक चोर आए. परंतु एक दुवरे कुक्कुटके बिना और कुछ न पाया. तब वह निरुपाय कुक्कुट अपने छुटने के कारन अनेक प्रमाण के बखान कर्ने लगा. और उसका बड़ा प्रमान एक यह था मैं भोर के समय इस कारन लोगों को जगाता हूं जिस में वह तुरंत उठें और अपने काम काज में लगें. इतना सुन एक उन चोरों मे से क्रोध कर्के बोला ए निर्बुद्धि पाजी ऐसे वृथा प्रमान से तेरे लिये चुप रहना भला था क्या तू नहीं जान्ता जो तेरी असुभ बानी लोगों को जगाती है और हमारे काम को माटी मे मिलाती है. और तेरी ही चिल्लाहटके शब्द से हम लोग पकड़े जाते हैं और फांसी पड़ते हैं.

परीच्छा.

जो बात भले मनुष्य ग्रहन कर्ते हैं और सचों को भली भाती है सो नीच लोगों को बुरी बूझ पड़ती है.

१४० दृष्टान्त

काग और कूकुर का.

एक समय एक छोटे मनका काग यूनान देशी मिन वॉ देवीके मंदिर आगे बल चढ़ा रहा था. इतने में एक कुत्ता उसको कहने लगा तू वृथा इस देवी की पूजा कर्ता है क्योंकि वह तुझ से बड़ी घिन कर्ती है और तू सारे शुगूनियों के निकट दुर्दुरा और अति

बुरा है. कौवे ने उत्तर दिया मुझ को इस मनुष्यके रहते उचित है जो देवी की पूजा मे अधिक कक उद्योग करूं तो वह किसी रीत मेरे ऊपर दया करे.

शिक्षा.

झूठी श्रद्धावाले वा अल्प बुद्धि लोग ज्ञान और बुद्धि की बातों को नष्ट करते हैं.

१४१ दृष्टांत

काग और सांप का.

एक सर्प बैठा हुआ धूप ताप रहा था अकस्मात् एक डोम काग उसको उठाय ले गया. इतने में सर्पने उसके कंठ और शरीर में लिपटके उसको भली रीत घायल किया तब वह निर्बुद्धि काग पछताने लगा निदान अपने को आप धिक्कार करने लगा. मैं अतिही निर्बुद्धि हूं जो कया ऐसे बिष भरे जंतु को कष्ट दिया.

उपदेश.

जो कोई बिना अपना लाभ और घाटा बूझे किसी वस्तु में हाथ लगाता है सो बहुत करके अपने मिथ्या कर्म का प्रतिकार पाता है.

१४२ दृष्टांत

ऊंडार और भेड़ी का.

एक ऊंडार को कुत्तेने काटा था और वह अति निर्भय होय अपने घाव को चाट रहा था. एक भेड़ी उस ठांव पर रही थी. इतने मे ऊंडार किसीसे उसको

कहने लगा जो तू अपने पर दुःख सहे और एक बूंद जल की उस नाले से मुझे लाय देवे तो मैं अपने खाने पीने की चिंता करूं. भेड़ी ने उत्तर दिया हांजी मैं तुम्हारा सुभाव जानती हूं तुम चाहते हो जो कोई तुम्हें जल लाय देवे सो अपने शरीर का मांस भी तुमारे अहार के लिये उपस्थित करे. तो स्पष्ट बूझ पड़ता है कि आप मुझसे जल और अहार दोनों चाहते हो.

उपदेश.

कुजात और अन्यायी के संग कृपा और भलाई करनी बिना बुराई और जोखिम के नहीं.

१४२ दृष्टान्त

खरहे और लोमड़ी और गिद्ध का.

एक बेर कितेक दुखिया खरहे अपने पुराने बैरी अर्थात् गिद्धों के संग लड़ते लड़ते अपने आप आतुर होय रहे थे तिस पर भी गिद्धों की यही वासना भई कि किसी रीत से एक ही बेर उन सभों को नष्ट करें. इस लिये जो सब लोमड़ी खरहों के पड़ोस मे बसती थीं तिन को गिद्धोंने अपनी मित्रता करने का संदेसा पठाया. लोमड़ीयोंने उनका मनोरथ बूझ के स्पष्ट उत्तर दिया कि हम तुम्हारी मित्रता से कभी मुह न फेरते जो दुखिया खरहोंकी निर्बलता और सचाई और तुम्हारे दुराचार और अन्याय भली रीत नहीं जानते होते.

उपदेश.

जब लग किसी मनुष्य का व्यवहार भली भांत से बूझ न पड़े तब लग उसके संग मित्रता करनी उचित नहीं.

१४४ दृष्टांत

लोभी के काया पलटने का.

एक लोभी किसान सदा अपने पड़ोसियों का अनाज और आटाला चुराय के अपने खत्ते में बटोरता था. ज्युपीटर-ने इस करतूत को जानके उस छिछोरे पर ऐसा कोप किया जो तुरंत उसका चिउंटी का रूप बना दिया. परंतु ऐसा कष्ट और प्रतीकार पाय के भी उस अभागे ने अपनी बुरी बान न तजी और कोई भला गुन न सीखा बरन चिउंटी का जनम पाय के भी उसी रीत चोरी करता रहा.

उपदेश.

जो कोई बुरी बान मन में पड़ गई तो उसका पलटना अति कठिन है.

१४५ दृष्टांत

एक टूटे जहाज के अटकल करनेहारे का.

कई जने नदी के तीर फिरते थे. अकस्मात् उनको यह देख पड़ा कि कोई वस्तु नदी मे उनकी ओर बही चली आती है पहिले उन्होंने यह बूझा कि एक बड़ा जहाज है पीछे यह समझा कि छोटा है. और जब वह अति निकट आय पऊंचा तब उन्होंने उसको यह बूझा कि एक छोटी नाव है. परंतु अंत को यही निश्चय

ऊआ जो केवल थोड़ा कूड़ा बहता ऊआ आता है. तब वह आपस में कहने लगे जो हम बड़े भरोसे से इस ठांव आस लगाए खड़े थे कि कोई बड़ी वस्तु होवेगी सो अंतको कुछ भी नहीं निकली.

उपदेश.

हम लोग कितेक वस्तु को बऊत करें दूरही से देखके बऊत भला ध्यान करते हैं और उनको कुछ का कुछ बूझते हैं. पर जब उनको निकट से निश्चय करके देखते हैं तब हम अपनी चूकको स्वीकार करते हैं.

१४६ दृष्टान्त

एक जंगली और घरेलू गर्द्धव का.

एक घरेलू गदहा एक हरियल पटपर में कंचन की झूल पहने ऊए बड़े ठाठ और गर्भ से चर रहा था. इतने में एक बन बासी गर्धव उस सुजात के चमते दमके पहरावे को देख कहने लगा ए भाई मुझे तुम्हारी धनवानो और भागवानी देखके बड़ी डाह होती है. इतना कह चला गया. पुनि थोड़े दिनके पीछे बनके गदहेने घरेलू गर्धव को देखा कि एक भारी बोझ के नीचे बड़ा कष्ट पाय रोय रहा है और एक जन कठोली छड़ी लिये बड़ी दुर्गत से उसको हांके लिये जाता है. तब बनके गर्द्धव ने उसके निकट आय यह कहा हाय इसी दुःख के कारन जिसको मैं देखके अब तुम पर मोह करता हूं सो सब पहिले तुम्हारे ठाट ठमक का परिधान था जिसको देख मैं जलता था.

उपदेश.

यह मनुष्य की अति दुर्भाग्यता है कि दूसरों की गति का देखके क्रोध और दाह से जलता है और अपनी उपस्थित अवस्थासे अप्रसन्न होता है.

१४७ दृष्टांत

एक झूठे कल कहनेहारे का.

एक मनुष्यने अपनी अवस्था केवल लंपट पन में गवांई थी. अंतको एक साधु जनके निषेध करने से किंचित् भयमान भया. और इसके अधिक एक बेर ज्वर ने भी उसको अच्छी रीत डराय और कालकी मूरत उसके सम्मुख लाय उपस्थित की. तब उस भ्रष्ट ने परन किया कि मैं अपने व्यवहार को कल लग सवारूंगा परंतु जब ज्वर छूट गया तब अपनी अवस्था का सुधर्ना फिर दूसरे कल पर डाला. और इसी रीत कल पर कल पर्कोख लग बढ़ने लगा तोभी अपनी सुगति का कुछ पीछा न किया. तब उस सज्जन ने कहा भाई हमें बड़ा दुःख भया कि मुझ ऐसे निरभिलाषी का उपदेश तुमको कुछ फलदायक न भया. अब मैं तुम से यही कहता हूं कि अब तुम्हारा कल कभी नहीं आवेगा. और न तुम उसको कभहीं आते देखोगे. अब भी जो तुमको भला कर्म कर्ना है सो करो. और जो तुमने वचन और परन तोड़ा है तो उसका पलटा तुमको अच्छी रीत सूझ ना चाहिये कि जो समय बीता है सो फिर हाथ नहीं आवेगा. अब कल का दिन कदाचित् हमारे

बस में नहीं और यही श्वास जो चढ़ता है इसको हम अपना कह सक्ते हैं?

उपदेश.

मनुष्य का चाहि शब्द वृथा है जब लग उसके समान सुकर्म न किये जावें.

१४८ दृष्टान्त

गर्धव और मेड़क का.

एक अभागा गर्धव भारी बोझके नीचे किसी नीची भूमि में गिर पड़ा जहां अनेक मेड़क थे और हल्ला बिलकने और रोने लगा जानों उसका कलेजा टूक टूक हो गया था. यह दुर्गत देख एक मेंड़क बोला ए निर्मोही और अप्रसन्न गर्धव इस ठांव तुझको रोय पुकार करने से कौन गुन दसैगा? टूक सुर्त कर कि सैकड़ों मेंडक जो मेरे अपने नाते के थे तिन को तूने नष्ट किया है. अब इस हांपने और रोने से तेरे विषय में यही उत्तम है कि इस कष्ट से अपने और हमारे को मुक्त करने का उपाय करके इस ठांव से चलाजा.

उपदेश.

जिस समय हम देखें कि दूसरे लोग बड़े कष्ट में फसे हैं तो हमको उचित है कि क्षुद्र क्लेशको अपने ऊपर सहैं.

१४९ दृष्टान्त

एक घायल गर्धव और काग का.

एक घायल गदहा जो किसी पटपर में सुख से चरता था एक कुजात काग उस पर आय बैठा. और उसके

घाव पर चोंच मारने लगा. तब वह दुखिया उसकी ओर देखा. इतने में एक अश्व सेवक जो उसी ओर जाता था सो गदहे की अवस्था देख हंसने लगा. तब अकस्मात् एक डंडार भी उसी ठांव आय उपस्थित हुआ और यह वृत्तान्त देखा कि कौवा मांस खाय रहा है और अश्व सेवक हंसता है तब बोला यह बड़ा अन्याव है. इस समय जो कोई भेड़िया कौवे की गवं होता तो अभी मारा पड़ता परंतु अब जो कौवा यह अन्याव कर रहा है तो लोग उसको देख हंस रहे हैं.

उपदेश.

पक्षपात और मूर्खता हमको बड़ी चूक में डालती हैं. बरन दुःख और कष्ट का हेत होता है.

१५० दृष्टांत

बाघ और लोमड़ी और खरहा.

एक खर और लोमड़ी ने बाघको देखा. लोमड़ी मारे त्रासके कांपने लगी परंतु अपना प्राण बचाने के कारन उसको यह छल सूझा तब धीरे धीरे बाघ के निकट जाय स्तुति नम्रता से प्रनाम करके निवेदन किया. ए राजा मैं तेरे निकट इस कारन आई हूं जो तुम्हारे आसरे में जीऊं और सेवा में रहूं. पर जो राजा की इच्छा मेरे संगी गर्दभ की ओर होवे तो मैं अभी उसका उपाव करूं. बाघने कहा भला. तब लोमड़ी ने गदहे को किसी मिससे एक गढ़हे में फसाया. इस में बाघने जब लोमड़ी को अकेला पाया तो पहिले उसीको नष्ट करके

आहार किया. पुनि मर्धन को गड़ह में खाने गया परंतु उस गर्त से बाघ बाहिर नहीं आया था कि अकस्मात् व्याधियोंने उसको देखा और तुपक से मार डाला.

चेतना.

जिस गन्नी से हम दूसरों को नाप के देते हैं उसी गन्नी से हमें भी वे लोग नापके देवेंगे. वा जैसा जो कर्ता है सो तैसा पाता है.

१५१ दृष्टांत

कुक्कुटी और अबाबील पंछी का.

एक मूर्ख कुक्कुटी किसी विषवाले सर्प के अंडों की सेवनें बैठी. इतने में एक बुद्धिवान अबाबीलने उसकी मूर्खता देख कहा, ए अभागी निर्बुद्धि क्या कर्ती है? तू अपने शत्रु को आप अंडों से बाहिर निकाल्ने चाहती है. कुक्कुटी ने उस मोहने उपदेश की ओर कुछ ध्यान न किया परंतु थोड़े ही दिन में अपनी मूर्खता का फल और उपदेश न मानने का प्रतीकार पाया.

परीक्षा.

बहुत बेर ऐसा भया है कि श्रेष्ठों ने जारजों की पालना की है और मूर्खोंने भले चाहने हारों का उपदेश न सुनने के हेत से अपने को आप नष्ट किया है.

१५२ दृष्टांत

कपोत और काग का.

एक कपोत अपने संतानों के अधिक उत्पत्ति का अहंकार

कौवे के सम्मुख कर रहा था. कागने उत्तर दिया इसमें बड़ा अचरज है कि तू अपने संतान की वृद्धि का वृथा गर्व कर्ता है. क्योंकि वे दुखिया अपनी बाल अवस्था ही में लाखों प्रकार को बिपत् और संकट में पड़ते हैं. कितेक हांड़ियों में रींधे जाते हैं और अनेक लोहे की सींक पर भूने जाते हैं और सैंकड़ों संबोसों में तले जाते हैं. तो इस में मैं अनेक कारण तेरी दया और मोह का देखता हूं परंतु तेरा गर्व और बड़ाई का हेत देख नहीं पड़ता.

चेतना.

माता पिताके संतान बहीं भले गिने जाते हैं जो अपनी भली अवस्था में भले कर्म से माता पिता के मनको आनंद कर्ते हैं.

१५३ दृष्टान्त

जूपीटर और चर्वाहे का.

एक चर्वाहे का बछवा खो गया था पर किसी ठांव उसका संधान नहीं लगा. तब चर्वाहे ने जूपीटर के सम्मुख आय प्रार्थना की और रोय के कहने लगा कि जिस चोट्टे ने मेरा बछरा चुराया है तिसको तू मुझे कृपा कर्के दिखा देवे तो मैं एक पशु बकरे कारण तेरे निकट भेट चढ़ाऊंगा. इतना कह चला गया और देखता है कि उसी समय एक बाघ जिस ने उसके बछवे को नष्ट किया था सोई उसके निकट आया चर्वाहा उसकी भयमान मूर्ति को देखते ही घबराया. और जूपीटर

के सन्मुख अति विन्ती कर निवेदन किया, हे महाराज? मैं अब लग अपनी मान्ता को बिसरा नहीं परंतु जो चोर तूने दिखाया तो अब मैं बछवे के पलटे में एक बड़ा पशु तुझको भेंट चढ़ाऊंगा जो तू मुझे इसके अन्यायी दांतों से रक्षा करे.

सिक्षा.

जो हमारे मनोरथ सदा संपूरण होवें तो वही कामना बहुत करके हमको नष्ट करेगी.

१५४ दृष्टांत

मच्छड़ और बाघ का.

किसी बाग में बाघ टहल रहा था इतने में एक मशक ने अकेले युद्ध कर्ने का संदेसा भेजा और बाघ ने अंगीकार किया. तब मच्छड़ उसकी नाक में पैठ गया और ऐसा दुःख दिया कि बाघ ने अति कोपित होय अपनी थाप से आपको बकोटा निदान उस लड़ाई से हार मानी. और मशक उस बड़ी जीत और प्रसिद्ध जय से अति प्रसन्न होय उस ठांव से उड़ गया. परंतु जब बड़े गर्व से उड़ा जाता था तब अकस्मात् एक मकड़ी के जालमें बंद भया और उस छोटे कीट ने कुटकी का अहेर किया. पर इस लाज ने उसको मृत्यु से भी अधिक कष्ट दिया. क्योंकि ऐसे बली बाघ के युद्ध से जयी भया था और अंत को एक क्षुद्र मकड़ी के जाल में आय फसा.

उपदेश.

जब दुर्बल बड़े बलवान महा अहंकारी को दुःख देते हैं तब अपनी बड़ाई और बल को माटी में मिलाते हैं.

१५५ दृष्टान्त

कपोत और छबि का.

एक कपोत ने किसी छबि को देखा जिस की पछांईं कांच के भीतर से बहते जलकी भांत देख पड़ती थी तब उसने यह जाना कि निश्चय जल है. और तुरंत उड़के इस लिये उस छबि पर आय पड़ा कि उससे अपनी पियास बुझावे परंतु छबि के कांच से बड़ी चोट खाय के भूमि पर गिर पड़ा और पकड़ा गया.

उपदेश.

हम बहुत करके अनेक लोभ के हेत से अपने कारज को बूझ नहीं सके हैं और अंत को मारे जाते हैं.

१५६ दृष्टांन्त

बाघ और मेंडुक का.

कहते हैं कि एक बाघ किसी बन मे अहेर ढूढ़ता फिर्ता था उसी समय अकस्मात् एक अचंभित बानी उसके कान मे पड़ी. इले में नाहर चौकस होयके आस पास देखने लगा और यह ध्यान किया कि इस ठांव कोई पशु उसके समाना का है बरन उसके संग युद्ध किया चाहता है वा कोई दूसरा जंतु है. इस में बड़ी शंका भई तब जान पड़ा कि वह चिल्लाने हारा जंतु एक दुखिया दादुर है जो एक बिल से निकल के बाहिर आता है.

चेतना.

हमको उचित है कि पर्छांईं को देख बड़े जोखिम का आम्ना साम्ना कर्ने के कारन अपना मन पोढ़ा करें. और छोटे कामों में न घबरावें बरन बड़े कामों को चेत के सहित पूरन करें.

१५७ दृष्टांत
मोर और काग का.

एक समय सारे पखेरू आपस में एकत्र होय यही बिचार कर रहे थे जो अपने में से एक को राजा बनावें. निदान मोर की शोभा और सुंदरता देख सकल पक्षी अति प्रसन्न भए और बोह कर्के उसी को राज दिया. पीछू एक कौवे ने सभा के लोगों से यह कहा कि बड़े काज को अच्छी भांत से बूझ के किया चाहिये क्योंकि जब हमारे उपर उकाब वा शाहीन पक्षी अहेर कर्ने के लिये झपटेंगे तब यह मोर हमारी रक्षा नहीं कर सकेगा. फिर सोच समझ के सभोंने काग की कथा मानी और दूसरे पक्षी को राज के लिये ठहराया.

उपदेश.

हम को चाहिये कि दूसरे उत्तम काज के लिये स्थापित कर्ने मे केवल उसके ऊपर के आकार को न देखें बरन उसकी योग्यता और चतुराई को देखें.

१५८ दृष्टांत

बाघ और गर्धव और लोमड़ीका.

एक बेर नाहर और खर और लोमड़ी ये तीनों एकत्र होय आखेट को गए और यात्रा के समय यह परन किया कि जो अहेर हाथ लगे उसके तीनो भाग समान बांट लेवे. अकस्मात् एक सुंदर हृष्ट पुष्ट कुरंग को अति श्रम से उन्होंने धरा औ हना और गदहा तो उसके भाग करने के कारन ठहराया गया था सो उसने वचन और परनके प्रमान तीनों अंश भिन्न किये और अति सिष्टाचार से बाघ के निकट निवेदन किया कि जिसको आप की इच्छा होय उसे पहिले उठाय लीजिये. जब नाहर को गर्धव का बांटा करना मन में न भया तब सब अंश ओं की समानता देख अति कोपित भया और उस निर्बुद्धि खर को झुंझलायके हना और टूक टूक किया. फिर लोमड़ी की ओर मुख फेरके आज्ञा की तू तो बड़ी चतुर है और विधि जानती है भाग लगाने में नहीं चूकेगी. इस अहेर का अंश कर लोमड़ी तो ऐसे सिंह राजा के मन से अति सावधान थी सर्वस अंश को बटोर बाघको सोहीं लाय उपस्थित किया और किंचित् चाम और हाड़ जो डार देने के योग्य था सो अपने लिये धरा. बाघ उसके भाग से अति प्रसन्न भया और कहन लगा कि मैं तेरी रीत से बड़ा आनंद भया तूने यह न्याव और विचार कहां से सीखा? लोमड़ी ने उत्तर दिया गर्धव की मृत्यु से.

उपदेश.

हम को चाहिये कि दूसरों की आपदा को देखें और आप सावधान होवें.

१५९ दृष्टांत

ऊंड़ार और बकरी के बचेका.

एक ऊंड़ार को किसी मेमने ने मेंढ साल से बाहर जाते ऊए देख लाखों गारी उसके कुटुंब और भेड़िये को दी. तब ऊंड़ार सब बुरी भली सह दांत पीस के कहने लगा ए मेमना हाय जो मैं तुझको इस घर के बाहर देखता तो तुझ को भली रीतसे प्रसन्न करता.

परीक्षा.

विपता से बचना कायरों को घमंडी और साहसी करता है.

१६० दृष्टांत

जूपीटर और गर्धंब का.

एक खर किसी मालीके ठिग अनेक दिनताईं थोड़े मासिक में बऊत काम काज करता था. निदान जूपीटर के सोहीं आय भाषा पत्र दिया कि गदहे को दूसरे ठाकुर के निकट सौंपें. जूपीटर ने उसकी प्रार्थना पत्र पढ़के एक कुम्हार के निकट सौंपा जिसके यहां वह दुखिया गर्धंब और भी अधिक कष्ट में पसा और फूल फल साग पात के पलटे में उसको इस ठांव माटी और खपरा ढोना पड़ा. फिर जूपीटर से और हो स्वामीकी प्रार्थना की. तब जूपीटर न गर्धंब को एक चमार के बस समर्पण किया. पुनि उस नए ठाकुर

को पाय के वह निरुपाय गदहा अति सोगी और अप्रसन्न भया और रोयके कहने लगा हाय मैं अभागा अगले ठाकुरों के हाथ से केवल कठिन काम काज और भारी बोझ के हेत से रोता था. परंतु अब मुझ को इन दुःख धन्धों से अधिक और भी चिंता भई न जानूं मेरा स्वामी कदाचित् मेरा चाम उतार के बिकावे.

उपदेश.

जो लोग अपनी उपस्थित गत से प्रसन्न नहीं होते बरन सदा नई ठांव और नए धाम की अभिलाषा करते हैं सो अधिक दुःख और कष्ट में पड़ते हैं.

१६१ दृष्टांत

एक ठकुरायन और उसकी दासी का.

एक सुशील ठकुरायन का यह काज था कि नित भोरे कुक्कुट के शब्द करने के समय अपनी युवा दासियों को टेरतीं. जब उन सभों से इसी रीत प्रभात का जगना न सहा गया तब आपस में परामर्श करके कुक्कुट को मार डाला. क्योंकि उन्होंने यह समझा था कि वही अभागा कुक्कुट हमारी सुशील ठकुरानी को चैतन्य करके हमारे ऊपर यह बिपत डाल्ता है. परंतु यह उपाय उन का कुछ काम न आया बरन उनके ऊपर अधिक कष्ट भया कि वह गृहस्थिन उस प्रात समय जगाने हारे कुक्कुट के मारे जाने के कारन बहुत करके भूले भटके से आधी रात वा पीछे पहर उठती और उनको जगाय सब की मीठी नींद को खोती.

उपदेश.

बहुत करके एक की चूक दूसरे की ओर बाट देखाती है वा छोटी आपदा से बचने का उपाय बड़ी आपदा में डालता है.

१६२ दृष्टांत

उकाव अर्थात् अहेरी पक्षी विशेष और उल्लूका.

एक उकाव जो सकल पक्षीयों का राजा है उसने चाहा कि अपनी प्रजा मे से जो देखने में भली और सुहागी है उसको एक बड़ा काज देवे. इसी भांत सारे पखेरुओं को आज्ञा भई कि अपने बच्चों को उकाव के सन्मुख लावें. सब भांत के पक्षी अपने २ सन्तानों को उसके ढिक लाए और अपनी अपनी बारी से उनका गुन बखान करने लगे. अंतको जब उल्लूकी बारी पहुंची तब वह अति मलीन होय और ऊंचला ऊचा आकार बनाय उकाव के सोहीं जाय कहने लगा जो सुंदरताई और सुचरित्र और चक्षा मुह और पंख की शोभा से उत्तम पद होने का हेत होवे तो निश्चय मेरे युवा पुत्र बाल चाल में सभों से उत्तम हैं और तुमारे मंत्रियों के पहिले पद में गिने जायंगे क्योंकि वे सब ठीक मेरी छबि से हैं.

सिक्षा.

जिस ठांव में अपनी प्रशंसा आप बखानी जावे तहां अनेक मिथ्या बूझ पड़ता है. वा जो कोई अपने दोषसे अचेत है सो दूसरे को बुरा बूझता है.

को पाय में वह गिरगाय मदहा अति सोगी और
अप्रसन्न भया और रोयके कहने लगा हाय में अभाग
अव्वे ठाकुरों के हाथ से केवल कठिन काम काज और
भारी बोझ के हेत से रोता था. परंतु अब मुझ को ह
दुःख धन्धों से अधिक और भी चिंता भई न जानूं मेर
स्वामी कदाचित् मेरा चाम उतार के बिकावे.

उपदेश.

जो लोग अपनी उपस्थित गत से प्रसन्न नहीं होते वर
सदा नई ठांव और नए धाम की अभिलाषा कर्ते हैं से
अधिक दुःख और कष्ट में पड़ते हैं.

१६१ दृष्टान्त

एक ठकुरायन और उसकी दासी का.

एक सुशील ठकुरायन का यह काज था कि नित भो
कुक्कुट के शब्द कन के समय अपनी युवा दासिय
को टेर्ती. जब उन सभों से इसी रीत प्रभात का जग
न सहा गया तब आपस में परामर्श कर्के कुक्कुट क
मार डाला. क्योंकि उन्होंने यह समझा था कि व
अभागा कुक्कुट हमारी सुशील ठकुरानी को चेत
कर्के हमारे ऊपर यह बिपत डालता है. परंतु य
उपाय उन का कुछ काम न आया वरन उनके ऊपर
अधिक कष्ट भया कि वह गृहस्थन उस प्रात समय
जगाने हारे कुक्कुठ के मारे जाने के कारन बकल
कर्के भूले भटके से आधी रात वा पीछे पहर उठती और
उनको जगाय सब की मीठी नींद को खोती.

उपदेश.

बहुत करके एक की चूक दूसरे की ओर बाट देखाती है वा छोटी आपदा से बचने का उपाय बड़ी आपदा में डालता है.

१६२ दृष्टांन्त

उकाब अर्थात् अहेरी पक्षी विशेष और उल्लूका.

एक उकाब जो, सकल पक्षीयों का राजा है उसने चाहा कि अपनी प्रजा मे से जो देखने में भली और आछी है उसको एक बड़ा काज देवे. इसी भांत सारे पखेरूओं को आज्ञा भई कि अपने बचों को उकाब के सन्मुख लावें. सब भांत के पक्षी अपने २ सन्तानों को उसके ढिग लाए और अपनी अपनी बारी से उनका गुन बखान करें लगे. अंतको जब उल्लूकी बारी पऊंची तब वह अति मलीन होय और ऊंचका ऊचा आकार बनाय उकाब के तोर्ही जाय कहने लगा जो संदताई और सुंदरिन और चलन सुभ और पंख की शोभा से उत्तम पद होने का हेत होवे तो निश्चय मेरे पुत्र सुभ बोल चाल में सभों से उत्तम हैं और तुमारे मंत्रियों के पहिले पद में गिने जायंगे क्योंकि वे सब ठीक मेरी छवि से हैं.

शिक्षा.

जिस ठांव में अपनी प्रशंसा आप बखानी जावे तहां वह मिथ्या बूझ पड़ता है, वा जो कोई अपने दोषसे और टबरे को बुरा बुझता है.

त
और
गिनी
थ करके यही
लग अपने
न न

१६३ दृष्टांन्त

सीता वृक्ष और बेतका.

एक बेर सीता वृक्ष और बेत इन दोनों में बड़ा झगड़ा भया सीता वृक्ष बेत की दुष्टता बखान कर्ने लगा कि तू अति निर्बल और कंपित है जो प्रत्येक पवनके झकोरे से हिलनेलगता है और मैं बड़े झाड़ में सदा डटा खड़ा रहता हूं बरन आंधी को अति तुच्छ बूझता हूं. इस बातके थोड़े दिन पीछे एक बड़ा झाड़ आया तब निर्बल बेत ने प्रमान कर सीता वृक्ष के सन्मुख माथा नवाया और जब वायु का झोका बीता फिर अपनी ठांव आ रहा और उसको कुछ भी कष्ट न हुआ. पर वह अहंकारी वृक्ष जिसने बड़े पोढ़े पन से उस अंधड़ का सामना किया था सो जड़ मूल से उखड़ गया और शाखा पल्लव उसका सकल नष्ट भया.

सिक्षा.

अहंकार कर्के अपने को माटी में मिलावे उससे वह उत्तम है कि आपदा के सन्मुख माथा नवाय के बड़ाई पावे.

१६४ दृष्टांन्त

चिउंटी और टिड्डे का.

एक समय चिउंटियां सीतकाल में अपने भंडार की थाथी निकाल धूप दे रही थीं इतने में एक भूखा टिड्डा कुछ भीख मांगने गया. चिउंटियों ने उस निर्बुद्धि को उत्तर दिया कि तुझ को ग्रीषमकाल में अपना व्यवहार और

पूंजी बटोरनां उचित था इस लिये कि शीत में इस रीत भीख मांगने की अवस्था न होती. टिड्डा बोला तुम तो जानते होगे मैं ग्रीष्मकाल में बैठा न था बरन प्रत्येक ऋतु मे राग गाता था. तब पिपीलिकाने प्रत्युत्तर दिया. भला पूरे बरस लग सुख चैन से रहो और जिन तालों पर ग्रीष्म काल में नाचते थे उन्हीं तालों पर जाड़े में नाचो.

उपदेश.

टाला और फक्कड़पन पूरा बिपता का मूल है.

१६५ दृष्टांन्त

वृषभ और अजा का.

एक बैल को बाघने धर्ने की इच्छा कर्के दौड़ाया था. वह किसी अजा के घरकी ओर भाग सरन लेने गया. बकरी दारे पर खड़ी होय सींग से निषेध कर्ने लगी. वृषभ यह देख बोला तू बड़ी अन्यायी और निर्मोही है कि एक निरुपाय दुखिया को आसरा देनेके कारन बरजती है. अजा ने उत्तर दिया मैं इस बात को भली रीत बूझती हूं जो तुमको भीतर आने की आज्ञा दूं और नाहर की आपदा अपने सिर पर धरूं तो मूर्ख गिनी जाऊंगी.

उपदेश.

आश्रित और अपने के बिषय में अपने को सत्य कर्के यही चाहिये कि जहां लग अपना बस चले तहां लग अपने घरना गत दुखिया की सहायता में कदाचित् न्यून न

करे. परंतु ऐसा यत्न किया चाहिये कि जिस में अधिक रक्षा से अंत को कई हेत अपने घर के नष्ट होने का होवे और अपने से जिता बन पड़े उता पड़ोसी का उपकार करे. पर इता भी न चाहिये कि उनके कारन अपना घर डुबावे.

१६६ दृष्टांत

दाई और कु सुभाव वाले बघेला.

एक ऊंड़ार अहेर ढूंढ़ते ढूंढ़ते किसी के द्वार पर जाय पऊंचा जहां एक बूरी बान का लड़का चिक्कार कर रहा था. और उसको दृदा बचे को धमकाय रही थी कि चुप रह और कहा मान नहीं तो भेड़िये के सम्मुख फेंक देऊंगी. ऊंड़ार यह मंगल समाचार सुनके बड़ी बेरताईं उसके बार पर ठाढ़ा रहा. निदान वह बालक दाईके समझाने से ऐसा चुप हो गया कि दृदा प्रसन्न होय के उसका गुन गाने लगी और बोली अब जो भेड़िया इस ओर आवे तो हम मार के उसका भेजा निकाल डालें. ऊंड़ार यह चर्चा सुन निरास ऊआ और तुरंत वुद वुदाय अपनी गैल चला गया.

सिक्षा.

भले सुभाव वालों के संग मीठा बचन कहा चाहिये और बुरी बान वालों को अवश्य धमकाना उचित है तो वे सोधी बाट से चलें.

१६७ दृष्टांत

कच्छप और गिद्धका.

एक मूर्ख कूर्म भूमि पर चलने से सदा मलीन होता था फिर बड़ी अभिलाषा भई कि पखेरू की भांत पवन पर उड़े. इसी रीत एक दिन बड़ी बिन्ती से एक गिद्ध को कहा जो उस को उड़ने की विद्या सिखलावे उसने कछुप को इस मिथ्या मनोरथ से निषेध किया. परंतु वह जितना उसको हटाता था उतनी उसकी चाह अधिक होती थी. अंत को गिद्धने उसकी लालसा पूरन करने के लिये धर्ती से उठाय बहुत दूरताईं अकास पर ले गया और वहां से छोड़ दिया तब कमठ वहां से एक पथराव में गिर के अंत को चकनाचूर हो गया.

उपदेश.

अल्प साहसी को अधिक अभिलाषा करनी अतिही बुरा है क्योंकि अंत को वही वासना उनके नष्ट करने का हेत होता है.

१६८ दृष्टांत

केकड़ों की माता और उसकी बेटीका.

एक जारज कन्या को उसकी माता कहने लगी, ए बेटी ईश्वर के लिये सूधी चाल चलनी सीख और कुचाल त्याग कर. कन्याने उत्तर दिया ए कबलामयी माता पहिले तो आप सीधी चाल चलके मुझे दिखला- वो तो तुझे चलने डर देखके उसी रीत से पीछे मैं भी चलूं.

चेतना.

कर्तव्य हीन विद्वान का उपदेश मन में प्रवेश नहीं करता बरन ठठोली का हेत होता है.

१६९ दृष्टांत

सूर्य्य और वायु का.

एक बेर सूर्य्य और वायु में बड़ा विवाद भया कि दोनों में कौन अधिक बल रखता है. निदान दोनों ने मिलके यही बिचारा कि जो कोई इस बटोही का जो पवन और भास्कर के सन्मुख से जाता है पोथी को अपने बल से उतरवाय लेवे वही हम दोनों में बड़ा पराक्रमी है. इसी वचन और बाद पर पहिले वायुने एक बड़ा भाड़ उत्पत्ति किया कि जिस में एक ओर से जल की बौछाड़ बड़े बेग से उस पथिक को मार्ती थी. और एक दिशा से ओले की गोलियां उस पर बरसती थीं. और जब वह निरुपाय यात्री बहुत भीगता और शीत खाता था तब बसन को भली भांत से अपने देह पर लपेट के चला गया. फिर रविने अपना काज आरंभ किया और धीरे धीरे ऐसी धूप और तपन उसके ऊपर पड़ी कि उस पथिकने अपनी पोथी मारे ग्रीष्म के व्याकुल होय डारदी और एक तरु की छांह तले जाय छिपा.

उपदेश.

सुशील जन पर कठिन वचन से कोमल वाणी अधिक प्रवेश करती है. वा सभी अपने को आप श्रेष्ठ बूझते हैं पर काम पड़े पर समझा जाता है.

१७० दृष्टान्त

गदहे की बनावट का.

एक गर्धब बाघ का चाम पहिन भेस उलट के बन में लोगों को भय दिखाता था. थोड़ी बेर लग तो उस बहुरूपिये ने लोगों के मन में बड़ी आशंका डाली. जिस ओर जाता था लोग उस को देख के भागते थे. परंतु एक बेर जो उस मूरख के मन में यही समाई कि बाघ का शब्द भी किया चाहिये पर सिंह के समान नहीं गर्जा बरन गर्धब की भांत उसके गले की बानी निकली. उस शब्द के सुनतेही बनके सारे जन्तु जो पहिले भाग गए थे सो फिर उसके चहूं ओर आए. और उसके बड़े कान को देखतेही चीन्हा कि यह खर है. निदान सब उस पर टूट पड़े और बाघंबर छुड़ाय लिया और भली रीत से अपमान किया·

चेतना.

मंगनीका घूंघट किंचित् परीक्षा के पवन से उड़ जाता है उस समय हमारा मुख जैसा है उसी रीत देख पड़ता है. और हमको लोगों के पास भली भांत अपमान कर्ता है. वा अनेक लोग मूर्खता से ऐसे व्यवहार की इच्छा कर कष्ट भोगते हैं जो अपने किये से कभी होय न सके और अंत को लाज पाते हैं.

१७१ दृष्टान्त

दादुर की चिकित्सा का.

एक निर्बुद्धि दादुर किसी दुर्गंधवाले ताल के तीर पर

को पाय के वह गिलमाय गदहा अति सोगी और अप्रसन्न भया और रोयके कहने लगा हाय मैं अभागा अगले ठाकुरों के हाथ से केवल कठिन काम काज और भारी बोझ के हेत से रोता था. परंतु अब मुझ को इन दुःख धन्धों से अधिक और भी चिंता भई न जानूं मेरा स्वामी कदाचित् मेरा चाम उतार के सिझावे.

उपदेश.

जो लोग अपनी उपस्थित गत से प्रसन्न नहीं होते बरन सदा नई ठांव और नए धाम की अभिलाषा करते हैं सो अधिक दुःख और कष्ट में पड़ते हैं.

१६१ दृष्टांत

एक ठकुरायन और उसकी दासी का.

एक सुशील ठकुरायन का यह काज था कि नित भोरे कुक्कुट के शब्द करन के समय अपनी युवा दासियों को टेरतीं. जब उन सभों से इसी रीत प्रभात का जगना न सहा गया तब आपस में परामर्श करके कुक्कुट को मार डाला. क्योंकि उन्होंने यह समझा था कि वही अभागा कुक्कुट हमारी सुशील ठकुरानी को चैतन्य करके हमारे ऊपर यह बिपत डालता है. परंतु यह उपाय उन का कुछ काम न आया बरन उनके ऊपर अधिक कष्ट भया कि वह गृहस्थिन उस प्रात समय जगाने हारे कुक्कुट के मारे जाने के कारन व्याकुल करके भूले भटके से आधी रात वा पीछे पहर उठती और उनको जगाय सब की मीठी नींद को खोती.

उपदेश.

बहुत करके एक की चूक दूसरे की ओर बाट देखाती है वा छोटी आपदा से बचने का उपाय बड़ी आपदा में डालता है.

१६२ दृष्टांत

उकाब अर्थात् अहेरी पक्षी विशेष और उल्लूका.

एक उकाब जो सकल पक्षीयों का राजा है उसने चाहा कि अपनी प्रजा मे से जो देखने में भली और छाजी है उसको एक बड़ा काज देवे. इसी भांत सारे पखेरुओं को आज्ञा भई कि अपने बच्चों को उकाब के सन्मुख लावें. सब भांत के पक्षी अपने२ सन्तानों को उसके ढिक लाए और अपनी अपनी बारी से उनका गुन बखान करने लगे. अंतको जब उल्लूकी बारी पहुंची तब वह अति मलीन होय और ऊंघता ऊपा आकार बनाय उकाब के तीर्ह्णी जाय कहने लगा जो सुंदरताई और सुचरित्र और चक्षा मुह और पंख की शोभा से उत्तम पद होने का हेत होवे तो निश्चय मेरे युवा पुत्र बाल चाल में सभों से उत्तम हैं और तुमारे मंत्रियों के पहिले पद में गिने जायंगे क्योंकि वे सब ठीक मेरी छवि से हैं.

सिक्षा.

जिस ठांव में अपनी प्रशंसा आप बखानी जावे तहां अनेक मिथ्या बूझ पड़ता है. वा जो कोई अपने दोषसे अचेत है सो दूसरे को बुरा बूझता है.

१६३ दृष्टांन्त

सीता वृक्ष और बेतका.

एक बेर सीता वृक्ष और बेत इन दोनों में बड़ा झगड़ा भया सीता वृक्ष बेत की छुद्रता बखान कर्ने लगा कि तू अति निर्बल और कंपित है जो प्रत्येक पवनके झकोरे से हिलनेलगता है और मैं बड़े झाड़ में सदा डटा खड़ा रहता हूं बरन आंधी को अति तुच्छ बूझता हूं. इस बातके थोड़े दिन पीछे एक बड़ा झाड़ आया तब निर्बल बेत ने प्रमान कर सीता वृक्ष के सन्मुख माथा नवाया और जब वायु का झोका बीता फिर अपनी ठांव आ रहा और उसको कुछ भी कष्ट न हुआ. पर वह अहंकारी वृक्ष जिसने बड़े पोढ़े पन से उस आंधड़ का साम्ना किया था सो जड़ मूल से उखड़ गया और शाखा पल्लव उसका सकल नष्ट भया.

सिक्षा.

अहंकार कर्के अपने को माटी में मिलावे उससे वह उत्तम है कि आपदा के सन्मुख माथा नवाय के बड़ाई पावे.

१६४ दृष्टांन्त

चिउंटी और टिड्डे का.

एक समय चिउटियां सीतकाल में अपने भंडार की थाथी निकाल धूप दे रही थीं इतने में एक भूखा टिड्डा कुछ भीख मांगने गया. चिउंटियों ने उस निर्बुद्धि को उत्तर दिया कि तुझ को ग्रीष्मकाल में अपना व्यवहार और

पूंजी बटोर्नी उचित था इस लिये कि शीत में इस रीत भीख मांगने की अवस्था न होती. टिड्डा बोला तुम तो जान्ते होगे मैं ग्रीष्मकाल में बैठा न था बरन प्रत्येक ऋतु मे राग गाता था. तब पिपीलिकाने प्रत्युत्तर दिया. भला पूरे बरस लग सुख चैन से रहो और जिन तालों पर ग्रीष्म काल में नाचते थे उन्हीं तालों पर जाड़े में नाचो.

उपदेश.

टाला और फक्कड़पन पूरा बिपता का मूल है.

१६५ दृष्टांन्त

वृषभ और अजा का.

एक बैल को बाघने धर्ने की इच्छा कर्के दौड़ाया था. वह किसी अजा के घरकी ओर भाग सरन लेने गया. बकरी द्वारे पर खड़ी होय सींग से निषेध कर्ने लगी. वृषभ यह देख बोला तू बड़ी अन्यायी और निर्मोही है कि एक निरपराध दुखिया को आसरा देनेके कारन बरजती है. अजा ने उत्तर दिया मैं इस बात को भली रीत बूझती हूं जो तुमको भीतर आने की आज्ञा दूं और नाहर की आपदा अपने सिर पर धरूं तो मूर्ख गिनी जाऊंगी.

उपदेश.

आश्रित और अपने के विषय में अपने को सत्य कर्के यही चाहिये कि जहां लग अपना बस चले तहां लग अपने सरना गत दुखिया की सहायता में कदाचित न्यून न

करे. परंतु ऐसा यत्न किया चाहिये कि जिस में अधिक रक्षा से अंत को कोई हेत अपने घर के नष्ट होने का होवे और अपने से जितना बन पड़े उतना पड़ोसी का उपकार करे. पर इतना भी न चाहिये कि उनके कारन अपना घर डुबावे.

१६६ दृष्टांत

दाई और कु सुभाव वाले बच्चेका.

एक ऊंड़ार अहेर ढूंढ़ते ढूंढ़ते किसी के द्वार पर जाय पऊंचा जहां एक बूरी बान का लड़का चिक्कार कर रहा था. और उसको ददा बच्चे को धमकाय रही थी कि चुप रह और कहा मान नहीं तो भेड़िये के सन्मुख फेंक देऊंगी. ऊंड़ार यह मंगल समाचार सुनके बड़ी बेरताईं उसके बार पर ठाढ़ा रहा. निदान वह बालक दाईंके समझाने से ऐसा चुप हो गया कि ददा प्रसन्न होय के उसका गुन गाने लगी और बोली अब जो भेड़िया इस ओर आवे तो हम मार के उसका भेजा निकाल डालें. ऊंड़ार यह चर्चा सुन निरास ऊआ और तुरंत बुद बुदाय अपनी गैल चला गया.

सिक्षा.

भले सुभाव वालों के संग मीठा बचन कहा चाहिये और बुरी बान वालों को अवश्य धमकाना उचित है तो वे सोभी बाट से चलें.

१६७ दृष्टांत

कच्छप और गिद्धका.

एक मूर्ख कूर्म भूमि पर चलने से सदा मलीन होता था फिर बड़ी अभिलाषा भई कि पखेरू की भांत पवन पर उड़े. इसी रीत एक दिन बड़ी बिन्ती से एक गिद्ध को कहा जो उस को उड़ने की विद्या सिखलावे उसने कछुप को इस मिथ्या मनोरथ से निषेध किया. परंतु वह जितना उसको हटाता था उतनी उसकी चाह अधिक होती थी. अंत को गिद्धने उसकी लालसा पूरन करने के लिये धर्ती से उठाय बहुत दूरताई बतास पर ले गया और वहां से छोड़ दिया तब कमठ वहां से एक पथराव में गिर के अंत को चकनाचूर हो गया.

उपदेश.

अल्प साहसी को अधिक अभिलाषा करनी अतिही बुरा है क्योंकि अंत को वही वासना उनके नष्ट करने का हेत होता है.

१६८ दृष्टांत

केकड़ों की माता और उसकी बेटीका.

एक आरज कन्या को उसकी माता कहने लगी, ए बेटी ईश्वर के लिये सूधी चाल चलनी सीख और कुचाल त्याग कर. कन्याने उत्तर दिया ए कलखामयी माता पहिले तो आप सोधी चाल चलके मुझे दिखला- तो तुझे चलने डर देखके उसी रीत से पीछे में भी चलूं.

चेतना.

कर्तव्य हीन विद्वान का उपदेश मन में प्रवेश नहीं करता बरन ठठोली का हेत होता है.

१६६ दृष्टांत

सूर्य्य और वायु का.

एक बेर सूर्य्य और वायु में बड़ा विवाद भया कि दोनों में कौन अधिक बल रखता है. निदान दोनों ने मिलके यही विचारा कि जो कोई इस बटोही का जो पवन और भास्कर के सन्मुख से जाता है पोथी को अपने बल से उतर्वाय लेवे वही हम दोनों में बड़ा पराक्रमी है. इसी बचन और बाद पर पहिले वायुने एक बड़ा भाड़ उत्पत्ति किया कि जिस में एक ओर से जल की बौछाड़ बड़े बेग से उस पथिक को मार्ती थी. और एक दिशा से ओले की गोलियां उस पर बरस्ती थीं. और जब वह निरुपाय यात्री बहुत भीगता और शीत खाता था तब बसन को भली भांत से अपने देह पर लपेट के चला गया. फिर रविने अपना काज आरंभ किया और धीरे धीरे ऐसी धूप और तपन उसके ऊपर पड़ी कि उस पथिकने अपनी पोथी मारे ग्रीष्म के व्याकुल होय डारदी और एक तरु की छांह तले जाय छिपा.

उपदेश.

सुशील जन पर कठिन बचन से कोमल बाणी अधिक प्रवेश कर्ती हैं. वा सभी अपने को आप श्रेष्ठ बूझते हैं पर काम पड़े पर समझा जाता है.

१७० दृष्टान्त

गदहे की बनावट का.

एक गर्दभ बाघ का चाम पहिन भेस उलट के बन में लोगों को भय दिखाता था. थोड़ी बेर लग तो उस बहुरूपिये ने लोगों के मन में बड़ी आशंका डाली. जिस ओर जाता था लोग उस को देख के भागते थे. परंतु एक बेर जो उस मूरख के मन में यही समाई कि बाघ का शब्द भी किया चाहिये पर सिंह के समान नहीं गर्जा बरन गर्दभ की भांत उसके गले की बानी निकली. उस शब्द के सुनतेही बनके सारे जन्तु जो पहिले भाग गए थे सो फिर उसके चहुं ओर आए. और उसके बड़े कान को देखतेही चीन्हा कि यह खर है. निदान सब उस पर टूट पड़े और बाघंबर छुड़ाय लिया और भली रीत से अपमान किया.

चेतना.

संगती का घूंघट किंचित् परीक्षा के पवन से उड़ जाता है उस समय हमारा मुख जैसा है उसी रीत देख पड़ता है. और हमको लोगों के पास भली भांत अपमान कर्ता है. वा अनेक लोग मूर्खता से ऐसे व्यवहार की इच्छा कर कष्ट भोगते हैं जो अपने किये से कभी होय न सके और अंत को लाज पाते हैं.

१७१ दृष्टान्त

दादुर की चिकित्सा का.

एक निर्बुद्धि दादुर किसी दुर्गंधवाले ताल के तीर पर

जाय ऊंचे सुर से बोलने लगा कि मैं बड़ा निपुन और कर्तव्य वाला वैद हूं और सब भांत की पीड़ा और रोग की औषध कर सक्ता हूं. इतने में अनेक जन्तु यह कथा सुन उसके पास आय बटुरे. उन में एक वृद्ध चतुर लोमड़ी भी दमनक के भांत की थी. उस झूठे मेंडक के अंग पर पीले पीले चिन्ह देख अति क्रोधित मन से कहने लगी ए मिथ्यावादी दावादार तू कैसे ऐसा कुशब्द और कुरूप पायके वैदाई करने की आशा करता है? कि दूसरों के दुःख और रोग को मैं चंगा कर सक्ता हूं. पहिले तुझको उचित है कि तू अपनी चिकित्सा कर और वैदक विद्या को अपने रोग पर चलावे करे. तो हम सब बूझ सकें कि तेरी निपुनता इस विद्या में कैसी है.

उपदेश.

जिस विषय में हम अपना भला नहीं कर सक्ते हैं और उसी कारज में दूसरे के चंगा करने का दावा करते हैं तो हमारी वही कहावत होगी। सूरदास अपने घर बैठो आंधर बाट बतावे.

१७२ दृष्टांत

एक कुजात कुत्ते का.

एक मनुष्य के पास अधिक सुंदर कुत्ता पाला ऊका था और दूसरों को दुःख देता तिस पर भी सुन्दरता के हेत से उसका स्वामी उसको त्याग नहीं कर सक्ता था इस लिये उस भले मनुष्य ने उस कूकर के गले में एक

भारी घंटा बांध दिया था जिस में लोग दिन को उस के
काट खाने से सावधान रहें. परंतु इस बुरी बान के
कुत्ते ने उस घंटे को सुंदर का चिन्ह बूझा सो उस के
ठाकुर ने उस को दिया था और दूसरे कूकरों के
निकट उस की बड़ाई करता था. निदान एक दिन
उस के किसी मित्र ने कहा कि तू अति मूर्ख है जो
इस आपदा के चिन्ह को अपनी प्रतिष्ठा का हेत बूझता
है. क्योंकि तेरे स्वामी ने तेरा कु सुभाव बूझने के
लिये इस घंटे को गले में बांधा है जिस में लोग
तुझ से डरें.

चेतना.

अनेक लोग ऐसे मूढ़ हैं जो अपने दोष को गुन का हेत
बूझते हैं.

१७२ दृष्टान्त

दो मित्र और भालू का.

दो मित्र एकत्र होय भ्रमन करने को जाते थे. उन्हों ने
आपस में यह मेल किया था कि जो कभी कोई बिपत्
पड़े तो एक दूसरे की सहायता और सपेक्षता से मुंह
न मोड़ें अचानक एक भालू उन को मिला जिस से
कोई उपाय बचने का न देख के एक उन में से तुरंत
वृक्ष पर चढ़ गया और दूसरे ने आप को धर्ती पर
औंधा गिराय बड़े दुःख से अपनी स्वास को मूंदा. तब
वह रीछ अपनी नाक को उस के मुख और कान के
लग लाय के सूंघने लगा फिर उस को मृत्युवत जान के

छोड़ गया और उस को कुछ न छेड़ा. भालू के जाते ही जो वृक्ष पर भागा था सो उतर आया और ठठोली कर के अपने बंधु से पूछने लगा कि तेरे कानमें इस काले भल्लु ने चुपके से क्या कहा? उसने उत्तर दिया कि भालू ने मुझे यह उपदेश किया है कि ऐसे कपटी के संग कभी मित्रता न कीजियो जो विपत् काल में अपने मित्र को त्याग कर के भाग जाते हैं.

परीक्षा.

सांचे मित्र भले स्वर्ण के समान हैं जिस को आग में गलाने से कुछ नहीं घटता है.

१७४ दृष्टान्त

एक महत गंजे का.

जिस समय गंजे सिर के दोष ढापन करने के लिये केशों का टोप बनाय सिर पर धरते थे उन्हीं दिनों में एक भला मनुष्य इस इच्छा से केशों का टोप पहनता था जिस से यह बूझ पड़ता कि निश्चय उस के सिर पर बाल हैं. एक दिन यह संयोग भया कि यह अपने मित्रों के संग असवार होय के बाहर गया. और अकस्मात् एक ऐसा झोंका पवन का बहा कि उस का टोप सिर से उड़के अलग जाय पड़ा. तब सब लोग उसके सिर को देख हंसने लगे. परंतु वह श्रेष्ठ भी उन के संग हंसने लगा और विचार करके बोला कि ए मित्र ठठोली और उपदेश की ठांव और समझने की बात है.

अच्छा है खोकर उस भेड़ की टोपी की रक्षा कर सकता है जो अपने सिर के केशों की रक्षा करने न सका.

शिक्षा.

किसी मित्र का मन रिझाने और ठठोली के समय अपने बचाने के लिये यही उत्तम उपाय है हम भी उस के संगी हो जावें.

१७५ दृष्टान्त

माटी और तांबे की हांडी का

एक समय किसी जल की बाढ़ में माटी और तांबे की हांडी दोनों समीप समीप बही जाती थीं. तांबे की हांडी माटी की हांडी को अपने ओर देख कहने लगी तू काहे को इतना भयमान होती है मैं तुझ को कुछ कष्ट और दुःख कभी नहीं दूंगी. उसने उत्तर दिया सच है जानो कि तू मेरा कष्ट नहीं चाहती परंतु यह प्रत्यक्ष है कि यह बहाव मुझ को तुझ पर फेंक दे वा तुझ को मुझ पर दे मारे तो दोनों भांत से इस दुःखी पर विपत् पड़ेगी.

शिक्षा.

चित्त और स्वभाव में बड़ी भेद से मित्रता की समानता वा अधीनता होती है क्योंकि मन पराए के संग को कदाचित् नहीं चाहता वरन दोनों का जीव एक होने से सहोदर से भी अधिक प्रीति होती है.

१७६ दृष्टान्त

बुरे और भले भाग का.

एक टूट पूंजिया बैपारी जो थोड़े से दिनों में बड़ा धनी

और माली उस का सदा गर्व से कहता कि मेरी माया ऐसी है जैसी चतुर और बुद्धिमानों के भाग में होती है. क्योंकि यह बपौती नहीं है बरन मेरी ही कमाई की है और मेरी ही चतुराई और चौकसी का फल है, पर यह महाजन धन संचय करने के पहिले जैसी चपलता और दरिद्रता से दिन काटता था यहां तक कि उस के धन की हानि होने लगी और घटती जाती रही. और ऐसी आपदाओं के आने से जब मोटा जहाज की लूट और महा निर्धनता अधिक भई तब वह निरुपाय बैपारी सब बिध थकने लगा. निदान ऐसी दुर्दशा में वह दुखिया यों रोता था कि हाय यह कैसा दुर्भाग और बुरा ग्रह है. अकस्मात् वहीं उसी ठांव उसका भाग भी छुपा खड़ा था सो इस के धिक्कार का बचन सुन कहने लगा तू बड़ा नीच और छली है कि सारी भलाई को अपनी ओर खींचता है और बुराई को मेरी ओर.

परीक्षा.

बहुत करके ऐसा संयोग होता है कि लोग जब किसी संकट में पड़ते हैं तो ईश्वर ही को दुर्वचन कहते हैं और जब भलाई और मान संसार में पाते हैं तब यही कहते हैं कि हमने अपने भले ढब और चतुराई से पाया है.

१७७ दृष्टांत

सारस और मोर का.

एक समय सारस और मयूर एक ही ठांव में थे मोर ने अपनी पूछ फैलाय के अपने साथी से कहा कि तुम भी ऐसी सुंदर छवि के पंख का पंखा दिखाय सक्ते हो? सारस बोला सच है कि तुम्हारे पक्ष नैनो में भले देख पड़ते हैं परंतु बालकों के खिलौने के सिवा और किसी काम में नहीं आते हैं, अब तुम जो मेरे सरी का काम कर सक्ते हो तो करो. यह कह सारस ऐसा ऊंचा पवन पर उड़ गया कि उसकी ओर अचरज से देखते २ मोर की आंखें दुःख ने लगीं.

उपदेश.

लोगों की बड़ी मूर्खता से ऐसी बातें उपजती हैं क्योंकि वे ऊपर की दिखावट् पर मरते हैं और अपने को मर्यादा के योग्य समझते हैं. नहीं तो यह बड़ी मूर्खता है कि अपने ऊपर के स्वरूप पर गर्व करना और अपने को आप श्रेष्ठ बूझना.

१७८ दृष्टांत

चीते और लोमड़ी का.

एक व्याधी के त्रासे से कितेक जंगली जंतु भागे जाते थे. इस में चीता बोल उठा देखो मैं अकेला सारा वन इनको नष्ट कर्ता हूं और तुम्हारी विपत का अन्त इतना कहते कहते उस अहेरी का तीर चीते के पांजर में आय लगा और जब वह बड़े कष्ट से तीर को निकाल

रहा था तब एक लोमड़ी उस से पूछने लगी यह किस ढीठ के हाथ का तीर था कि तुम को ऐसा घायल किया? उसने उत्तर दिया मुझे बूझ पड़ता है जो यह तीर निश्चय तीर चलाने हारे मनुष्य का है. अब मुझे अच्छी रीत से बूझ पड़ता है जब समय बीत गया और कोई ऐसे मनुष्य का साम्ना नहीं कर सक्ता जिसका घायल कर्ने का बल दूर से है.

उपदेश.

अपने बड़े बली से युद्ध कर्ना उचित नहीं बरन उस के सन्मुख जुहार कर्के माथा नवाना चाहिये.

१७९ दृष्टांत

बाघ और बैल का.

कई बैलों ने आपस में यही बचन और बोध की कि हम संग मिलके रहें और एकही संग चरें औ बैरी के संग एकच होके लड़ें. जब लग यह बोध और बचन उन में स्थिर था तब लग निर्विघ्न और चैन से थे. परंतु फूट के होते ही दैवी आपदा बाघ का रूप धर के उन पर पड़ी जिस ने उन सभों को एक एक कर के नाश किया.

चेतना.

एका कर्ने और जथे से बल और भड़क और धन और प्रताप होता है. और लोगों में मेल और एका रहने से बैरी कुछ नहीं कर सक्ता.

१६०. दृष्टान्त

सनोवर और कटार के वर्णना.

एक सनोवर का वृक्ष गर्व करके कटार के वृक्ष से कहने लगा कि मेरा सिर ऊंचाई में आकाश लग पऊंचता है. और मेरी लकड़ी बड़े घर की धरन और बड़े मस्तूल के जहाजों मे लगती है. और मेरे देह का रस रोगी और घायल के लिये बड़ी औषध है. तू भूमि से लगा रहता है और बिना दुःख देने लोगों के दूसरा काम नहीं कर्ता. कटार का वृक्ष यह सब सुन के बोला कि आप से इस विद्या और निपुणता में जिन का आप दावा कर्ते हैं तिन की समानता मैं नहीं कर्ता. परंतु चेत कीजे कि जिस ने तुझे सनोवर के समान ऊंचा बनाया सो कटार के समान गढ़ सक्ता था. और इस के ऊपर यह तुम्हारी बड़ाई तुम को नष्ट कर्ने हारी है. मुझ से सच कहियो जिस समय लकड़ी कुल्हाड़ा लिये ऊर तुम्हारे काटने को आवेगा तिस समय क्या तुम अपने सनोवर पन से दुःखी और कटार पने की अभिलाषा करोगे?

चेतना.

हमारी निम्नी और आधीनताई अनेक आपदा से जिस में बड़े२ घमंडी फसते हैं तिस से हमें बचाती हैं और दैवी आपदा बज्र के समान ऊंचे और मानी बड़े लोग और बड़े घरों पर पड़ती हैं और छोटे कद और नीचे झोंपड़े मे नहीं आती.

१८१ दृष्टान्त

एक लोभी और डाही का.

एक लोभी और डाही ने जूपीटर की सेवा में आय निवेदन सब किया. उसने उत्तर दिया कि तुम में से जो कोई कुछ प्रार्थना करेगा तो दूसरा उस से दूना पावेगा. यद्यपि लालची ने अधिक लोभ से अनेक धन चाहा और उसी समय उस से दूना डाही को मिला. परंतु डाही जो दूसरों की बुराई से अति प्रसन्न होता है तौभी अपने मित्रको अपने से ज्याद़ा धन लाभ होते देख न सका. इस लिये ईश्वर से मांगा कि एक आंख से उसको काना करे तो उसका अशुभ मन उस के बंधु को दोनों आंख से काना देखे.

उपदेश.

डाही ईश्वर के प्रसाद को देख जलता है और आप को सदा पीड़ा में डालता है और यह प्रत्यक्ष देख पड़ता है कि उसका पाप उसका प्रतीकार है. अथवा उसका पाप और दण्ड का उचित फल एकही समय में प्रकाश होता है.

१८२ दृष्टान्त

कौवे और घड़े का.

एक पियासे काग ने एक गगरी पाई जिस में थोड़ा सा जल उसकी पेंदी में था वहां तक उसकी ग्रीवा नहीं पहुंच सकी थी. इस के पहिले उसकी यह इच्छा भई कि उस गगरी को तोड़ डाले परंतु तोड़ न सका.

बिचार उर्द की यह उपाय सूझा कि बजुत से पाथर उसके भीतर फेंकें तो उसी के हेत से जल ऊपर चढ़ आवेगा.

परीक्षा.

दीनता और प्रयोजनता सारे उत्पत्ति का मूल है. और वही हम को बेबस कर्ता है कि जिस में हम फलदायक वस्तु की उत्पत्ति कर्ते हैं नहीं तो जो कठिन काम बल से नहीं हो सक्ता है सो चतुराई से सहज ही में किया जाता है.

१८३ दृष्टान्त

बाघ और मनुष्य का.

एक बेर मनुष्य और बाघ से बिबाद भया कि दोनों में कौन अधिक बलवान और साहसी है. मनुष्य ने कहा चलो उस मूरत से इस बात को पूछें जो सन्मुख देख पड़ती है जिस में मनुष्य की मूरत ऊपर और बाघ की उस के पांव तले बनी ऊई है. सिंह इस भाव को बिचार के कहने लगा कि जो बाघ चित्र कारी और मूरत बनाने की बिद्या कर्ता तो जिस ठांव तुम एक बाघ नरके पांव तले बनाए ऊए देखते हो वहां अनेक लोगों को एक सिंह के चरन तले बने ऊए पाते.

चेतना.

यह उलटा न्याव है कि अपने बिषय में हम आपही बिचार करें. का ऐसे बिरोध में जो प्रतिवादी के संग

उत्पत्ति हुआ है तो अपने मानने हारों को प्राकृतिकोक्त ठहरावे अथवा मध्यस्थ मानें.

१८४ दृष्टान्त

एक बालक और चोरका.

एक लड़का कूप के तट पर बैठा हुआ बिलख बिलख रोय रहा था. इतने में एक छली चोर ने उसके ढिग आय के पूछा तेरे रोने का कौन हेत है? तब वह धूर्तीला बालक कहने लगा कि मैं इस कूप से जल भर्ता था और मेरा रूपे का घड़ा रस्सी टूट के इस में गिर पड़ा और नीचें बैठ गया. तस्कर यह वचन सुन्ते ही अपने कपड़े उतार कूए में गगरी ढूंढ़ने पैठा. और कुछ देर भर भीतर से दुःख पाय के निकला तो देखता है कि वह ठगना बालक उस के वस्त्र हरन कर ले गया है.

उपदेश.

जो बुराई हम दूसरों के संग कर्ते हैं बहुत कर्के वैसी ही बुराई में हम भी आय फसते हैं. जो कोई दूसरों के कारन कूआ खोदता है तो आपही उस में गिर्ता है. और जो आकाश पर पाथर चलाता है सो अपने ही सिर पर आपदा लाता है.

१८५ दृष्टान्त

मनुष्य और बन मनुष्य का.

एक बेर मनुष्य और बन मनुष्य में बनी मित्रता भई थी. एक दिन मनुष्य अपनी संगती को मुख के पास लाय के

फूकने लगा. तब बन मनुष्य ने उसका हेत पूछा. नर ने उत्तर दिया मेरी उंगलियां बड़ी ठंडी भई थीं उन को तत्ता करने के लिये मैंने फूका. फिर दूसरे दिन उस नर को तत्ता अन्न और रस फूकते ऊए देख उसका कारन पूछा. नर ने उत्तर दिया कि रस को ठंडा करने के लिये यह बचन सुन के बन मनुष्य खिजलाय के बोला जो तुम एक ही मुख से दोनों प्रकार का ठंडा और तत्ता फूक सके हो तो तुम बड़े छली हो और तुम्हारी मित्रता को सहस्र जुहार है अब मैं बिदा ऊआ.

सिद्धा.

लोगों के बचन वा चलन जो एक एक मूल से दो अर्थ बतैाते हैं और कभी जगह सच भी होवें परंतु बऊत करके सखों के मन की मित्रता को तोड़ते हैं क्योंकि वह लोग कदाचित् प्रतीत के योग्य नहीं जिस के बचन और चलन में एक भाव नहीं. परंतु बऊतेरे लोगों के ढिग वह मनुष्य झूठा ठहर्ता है जो एकही पदार्थ को कभी बुरा कहता है और कभी भला यद्यपि उसका बचन सत्य भी होवे.

१८६ दृष्टांत

एक गाड़ीवान और हरकुलीस का.

एक सारथि की गाड़ी पांक में फस गई थी तब उसने रोते रोते यूनान देशी हरकुलीस देवता की सेवा में जाय प्रार्थना की और सहायता चाही. देवता ने क्रोध

कहै कहा अरे ढीठ मूर्ख मुझे क्यों पुकारता है? अपने कांधेको पहिये में लगाय के क्यों विवेचन नहीं करता? जिस समय तू दुध पीने हारे बच्चों की भांत बालकों की रीत से रोवेगा तो देवता क्या तेरे नीच कर्म करने को। सदा ध्यान कर उपस्थित होवेंगे?

उपदेश.

यद्यपि हम ऐसा चाहते हैं कि अपने कारज का अन्त भला होवे तो हमको उचित और अवश्य है कि उस के शेष कर्मों में हम आपही भली रीत से उद्यम और श्रम करें न कि अपने हाथ पांव तोड़ कर बैठ रहैं और ऐसी आस करें कि दूत आय के हमारा कारज सिद्ध करेंगे.

१८७ दृष्टांत

एक बन मनुष्य और उसके दो बच्चों का.

एक बन मनुष्य के दो प्यारे बच्चे थे उन में से एक को अधिक स्नेह करता. एक दिन किसी विपता के हेत से उसको भाग के बचना पड़ा. इस में उस बुरे समय में उसने प्यारे बच्चे को तुरंत गोद में ले और दूसरे को छोड़ के भाग जाने लगा. परंतु वह दूसरा बच्चा अपना प्राण बचाने के लिये कूद के उसकी पीठ से लिपट रहा. और ज्योंहीं वह बन मनुष्य एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर कूद के जाता था इतने में गोद का बच्चा उसके कूदने से भूमि पर गिर पड़ा और मर गया. पर पीठ का बच्चा जीता रहा.

परीक्षा.

माता पिताके अनेक सन्तान अधिक लाड पियारसे नष्ट होते हैं और अपनी रखवाली और सावधानी की चिंता नहीं करते.

१८८ दृष्टान्त

लोमड़ी और साही का.

एक लोमड़ी ने नदी से उतर के तीर की ओर ऐसा ऊंचाव और फिसलाव देखा कि जिस में उसका ऊपर चढ़ना कठिन भया. तब वह निरुपाय इसी सोच में थी कि किस रीत से जाऊं. इस में अचानचक एक झुंड बिर्नी का आय के उसके सिर और आंखों पर बैठ ऐसा डंक मारने और काटने लगीं कि उसका जीव निकालने लगा. इतने में एक साही नदी के तीर पर खड़ा हुआ उसकी यह दुर्दशा देखता था दया करके लोमड़ी से कहने लगा जो तू कहे तो मैं इन बिर्नियों को उड़ाय दूं. लोमड़ी बोली कि ईश्वर के लिये इन बिर्नियों को कि जिन का पेट भर गया है मत उड़ाओ क्योंकि जो यह सब उड़ जावें और दूसरी भूखी बिर्नियों का झुंड इनकी ठौर आय बैठे तो एक बूंद भी रक्त की मेरे देह में न रहेगी.

उपदेश.

बड़े अन्याव से छोटे उपद्रव का अंगीकार कर्ना सहज है जो छोटे उपाय के हेत से सनमुख आता है. अथवा

छोटे उपद्रव पर धीरज धर्ने में कठिन अन्याव से अपे बड़े बचाता है.

१८६ दृष्टान्त

एक गंवार और शिकरे पछीका.

एक गंवार ने एक शिकरे पछी को धरा जो कपोत के आखेट कर्ने के लिये बड़े बेग से उड़ा जाता था. इस में शिकरा अपे छुड़ाने के लिये उस से बाद कर्ने लगा कि मैंने तुझे कुछ कष्ट नहीं दिया है तू भी मुझे दुःख न दे. गंवार कहने लगा भला इस निरपराधी कपोत ने तेरा क्या बिगाड़ा था? इस लिये अब तुझ अन्यायी के संग वही व्यवहार कर्ना योग्य है कि जैसा व्यवहार तू इस दुःखित कपोत के साथ किया चाहता था. तब शिकरा अपने मन में लज्जित होके कहने लगा सच है मैं अपने दंड का फल पाया और यह ताड़ना जैसी मुझ को कठिन बूझ पड़ती है उसी भांत उस निर्दोषी कपोत को भी मेरे उपद्रव से जानी जाती थी.

उपदेश.

जितने लोग ऐसे अन्यायी और कठोर हैं कि जब लग उन पर अति कठिन कष्ट न पड़े तब लग दूसरे के दुःख और पीर की कुछ चिंता नहीं कर्ते हैं. और अपने समय पड़े पर उसी अन्यायी से बड़ी चिरौरी कर्ते हैं. बरन उसको अति कठिन बूझते हैं जिसको आप दूसरों के समय पड़े पर अति सहज बूझते थे.

१९० दृष्टांत

अबाबील पक्षी और मकड़ी का.

एक अबाबील पक्षी बड़ी फुर्ती से माखी धर रहा था एक मकड़ी ने डाह से चाहा कि अपना एक जाल बनाय कें झट पट उसको अहेर करे. वरन इस लिये उसका बड़त ही पीछा किया क्योंकि वह अबाबील उसके राज में बड़ी लूट कर्ता था. इसी रीत वह अबाबील निदान उसके सारे जाल को तोड़ फोड़ के लिये चला गया. तब मकड़ी को यह चेत भया पखेरुयोंका आखेट कर्ना ऐसा सहज नहीं है कि जैसा मैंने पहिले सोचा था. अब मेरे योग्य यही है कि मैं माखियों का अहेर करूं पर बड़े जन्तु के पकड़ने की इच्छा कभी नहीं करूं.

उपदेश.

ऐसे कामों पर साहस कर्ना कि जो हमारे बल अधिक है सो केवल हमारे कष्ट और लज्जा देने का हेत होता है. अथवा जिसने अपनी शक्ति से अधिक बोझ उठाया सो असाध्य ऊआ.

१९१ दृष्टांत

हंस और सारस का.

एक सारस जो मर्ते समय ककनस पक्षी के समान राग गाता था और उस के सन्मुख जंगली हंस खड़ा था. सो उसका राग सुन के कहने लगा कि यह तेरा कैसा उलटा गाना है जो तू मर्ते समय आनंद से गाता है. सारस ने उत्तर दिया कि मैं अब ऐसे निर्भय

स्थान में जाता हूं जहां सदा आस और गोधी और दुःख और शंका और भूख और पियास और मृत्यु के भय से बचा रहूंगा. और ऐसा कौन है जो ऐसी मुक्ति से प्रसन्न न होवेगा ?

उपदेश.

काल संसार की आपदा से रक्षा कर्ता है और जो लोग स्वर्ग भोगने की आशा रखते हैं उन को मृत्यु से कुछ कष्ट नहीं. और सुकर्मी को काल से कुछ भय नहीं क्योंकि मृत्यु होय के उन को स्वर्ग भोग होगा.

१९२ दृष्टांत

साही और सर्पका.

एक साही ने सीत के कष्ट से घबराय के किसी सर्प की बिल में जाय आसरा लिया. तब वह सर्प उसके कांटों से और बांबी की छुटाई देख बड़ा दुःख पाय के निरुपाय भया और उस पाहुन से कहा अब हम दोनों के लिये इस बिल में समाई नहीं होती तो अब यही भला है कि तुम दूसरी ठांव उठ जाओ. इस बात के उत्तर में उस कुजात ने यह कहा कि जो कोई यहां रहने नहीं सक्ता उसको चाहिये कि दूसरी बांबी ढूढ़े. मैं इसी एकान्त स्थल में प्रसन्न हूं और जो तुमको दुःख होवे तो तुम दूसरी ठांव जाओ.

उपदेश.

हमको उचित है कि पराए के संग एकत्र रहवे और उसकी मित्रता करने से भय करें. विशेष करके ऐसे लोगों.

से जो बुरी बानवाले और अन्यायी हैं. और हमको जिन की प्रतीत नहीं.

१९३ दृष्टान्त

मच्छर और मधुमाखीका.

एक मच्छर शीतकाल में ठंड और भूख से अधमुआ होय प्रात समय किसी मधु के छत्ते में भीख मांगने गया. और द्वार पर ठाढ़ा होय संदेसा भेजा कि जो इस सीतकाल में मुझे आहार और स्थान देओ तो मैं तुम्हें गांधर्व विद्या सिखाऊं. मधु माखीयां कहने लगीं क्षमा कीजिये क्योंकि हम अपने सन्तानों को अपनी ही विद्या सिखलावेंगे कि जिस में वे अपने कर्तव्य से जीविका पावेंगे और दिन काटेंगे क्योंकि हम अपनी आंखों से यह देखते हैं कि तुमको इस गांधर्व विद्या ने यहां लग पहुंचाया है और कैसा दुःख भोगवाता है.

उपदेश.

हमको उचित है कि अपने बालकों को पहले अपनी विद्या और जीविका उपार्जन कर्ने का कर्म सिखावें इस लिये कि सब जीव धारी को खाना पीना और जीविका उपार्जन कर्नी अवश्यक है. और गाना बजाना और प्रत्येक भांत की निपुनता और कर्तव्य जिन से हमको केवल मन का सुख होता है सो अवश्यक विद्या उपार्जन कर्ने के पीछे उसकी बारी होती है.

१६४ दृष्टांत

बाघ और गर्धव और खरहे का.

एकबेर ऐसा संयोग भया कि पशु और पक्षी में बड़ाही गाढ़ा युद्ध भया. तब सिंह ने अपनी समस्त सेना और प्रजा से कहा कि अमुक समय अमुक ठांव में तुम सब शस्त्र लिये उपस्थित हूजियो. तब उन में से जेती योधा सेना थी सा राजा की आज्ञा प्रमान उसी पट पर में आय ठाढ़ी भई और गर्धव और ससा भी उस में थे. तिन को सेनापतियोंने निकम्मा बूझ के चाहा कि उन्हें बिदा करें. क्योंकि वे रन में किसी काम के योग्य न थे. इस में सेना के दूत ने इस संदेसे को भूपाल की सेवा में जाय निवेदन किया. तब सिंह राय ने सेना पतियों को ऐसा कहा जो तुम इस बात में चूके हो क्योंकि खर बोझ उठाने के योग्य हैं और तुरई बाजाने की सेवा उन से भली रीत बनपड़ेगी और खरहा समाचार देने के योग्य है.

ज्ञान.

कोई वस्तु निर्गुन नहीं यद्यपि प्रत्यक्ष देखने में दोषित वा ओछी भी होय.

१६५ दृष्टांत

कपोत और सिकरे पक्षी का.

एक बेर सिकरे पक्षीयों में युद्ध भया. कपोत जो उन समय में अति सुख चैन से थे इस में दया विचार के अपने बसीठ के ढिग सिकरों के बिवाद भंजन के लिये

पठाया कि उन में फिर मेल होवे. परन्तु मेल होते ही सारे शिकारोंने अपने बाज पर कबूतरों के नष्ट करने का उद्यम किया. तब उन निरुपाय कपोतों ने बूझा जब अपना काम हाथ से जाय चुका और जाना कि हम चूके जो इन वैरियों में मेल करवाया और अपने ऊपर आपही उपद्रव और आपदा मचवाई.

ज्ञान.

दो बुरे वैरियों में मेल करवादेना भला नहीं क्योंकि उनका आपस में युद्ध करना हमारे लिये संपत् का हेत है और उन में मेल होना हमारी विपत् का कारन है.

१९६ दृष्टान्त

काल और एक वृद्ध मनुष्य का.

एक बेर यमराज फिरते फिरते किसी बूढ़े के घर में गया और उसको कहा कि तुं मेरे संग चलने की सामा कर. इस में वह बुढ़ा यह अचानचक संदेसा सुन अत्यन्त भैचक भया और क्षमा चाह के कहने लगा. यह तो दूर की यात्रा है और मृत्यु अति कठिन फिर उस के लिये अनेक श्रम करना होगा क्योंकि उस के लिये जब लग सब सामग्री बनाई जावे तब लौं बड़ी बेर लगेगी. फिर यमराज ने उत्तर दिया कि तुमको अनेक दिन से इस का समाचार पठाया गया है कि जिस मे तुम अपने गमन की सामा करो क्या तू अपनी और पराई जाति में किसी को मरते नहीं देखता कि इस बरन में बाल युवा वृद्ध झुंड के झुंड मरते हैं? क्या उन में

कोई तुझ से थोड़ी आयुदा का न था? और दूसरे किसी की मीच क्या तुझको काल का समाचार नहीं देती थी? और उस बड़ी ज्वलन के ज्वर की तुमने क्या समझा था जो दस बरस के पहिले तुम को आया था? और उस पेट की पीड़ा को तुम ने क्या बूझा था जो उस के पांच बरस के पीछे तुम को भई थी? और ध्यान धरो जो पिछले बरस अर्धांग के रोग में तुम पीड़ित भए थे और ऐसे रोगों के होते जो उन मे से एक एक दुःख मेरे दूतों के समान थे तिस पर भी तुमने नहीं बूझा था कि अंत में मैं आपही आऊंगा? अब तुम्हारी बात मैं कुछ नहीं मानूंगा तुम अपनी मोटरी बांधो और मेरे संग चलो.

चेतना.

हम मन में कितनाही काल का सोच न करें पर वह हर समय निकटही है और एक दिन सोहीं आवेगा.

१६७ दृष्टांन्त

एक फुर्तीले और म ठे मनुष्य का.

एक ढीले पुरुष ने किसी से पूछा कि इतनी बेर लग बिछौने पर पड़ा क्या करता था? उसने उत्तर दिया कि मैं सेज पर बड़ी बात चीत में लग रहा था क्योंकि भोर के समय जगते ही दो जने मेरे संग आते हैं एक का नाम फुर्तीला और दूसरे का नाम ढीला. और उन मे से एक कहता है कि प्रात समय बिछौने पर से उठने का क्या काम है. और दूसरा उस के विरुद्ध प्रमान देता

है और दोनों वाक्योंकी दृष्टांत देके पर सम्मुख यही ठहराते हैं कि सेज से उठना कुछ अवश्यक नहीं बरन उचित है. बवस्थापक को उचित है कि दोनों ओर की बातें अच्छी रीत से सुने इस लिये मैं सुनता हूं और जब उनकी कथा पूरी होती है तब भोजन का समय आता है.

उपदेश.

यह हमारे योग्य नहीं कि हम अपने समय को मिथ्या कल्पना में गवांवें और अपने काम को पूरन करें.

१९८ दृष्टान्त

कुक्कुट और लोमड़ी का.

एक लोमड़ी ने किसी कुक्कुट को एक वृक्ष की शाखा पर अपनी कुक्कुटियों के संग बैठे ऊपर देख के चाहा कि उसको किसी छल से नीचे लावे और अपना कर्म सिद्ध करे. इस लिये पहिले कुक्कुट से पूछने लगी क्या तूने यह प्रसिद्ध समाचार नहीं सुना है? तब कुक्कुट ने कहा कौन संदेसा? लोमड़ी बोली अब सारे पशुओं में वचन और बोध मेल करने का भया है कि कोई जीवधारी किसी पर उपद्रव न करे और गोपन वा प्रगट किसी भांत से कोई किसी को कष्ट न देवे. पुनि कुक्कुट कहने लगा यह बड़ा समाचार और शुभ संदेसा है. इतने में अपनी ग्रीवा बढ़ाई. जैसे किसी दूसरी वस्तु को ठहरायके देखता था. लोमड़ी तब उस को ग्रीवा निकाले देख पूछने लगी तुम क्या निरखते हो? प्रत्येक

बोला कुछ नहीं केवल एक जोड़ा आखेटी कुत्ते का सामे
से दौड़ा आता है जैसे किसी आखेट को देखा है.
इस में लोमड़ी ने चौकन्नी होय उस ठांव से जाने की
इच्छा की. फिर कुक्कुट बोला ऐसे सुख चैन और मेल
होने के समय में तू कहां जाती है? और कौन भय है!
लोमड़ी ने उत्तर दिया सच है कि यह भय करने का
समय नहीं परन्तु जो इन भौंकने हारे कूकरों ने इस
संदेसे और ढिंढोरे को न सुना होवे तो मुझे उन से
अपने प्राण का घाटा होगा। यह कह के तुरंत उस ठांव
से भाग गई.

परीक्षा.

कथा का दोष और गुन कहने हारों के बचन के संग है.
जो वह सच्चे हैं तो इन की बात मानने के योग्य है.
और जो झूठा बचन होय तो बोलने हारे को धिक्कार
करना और फांसी देना उचित है. अथवा जो बसीठ
सच्चा होवे तो संदेसा भी सच है और जो झूठा होवे
तो समाचार भी झूठ है और सुनने के योग्य नहीं.

१९९ दृष्टांत

एक धूर्त बालक और दादुर का.

कई धूम धामी लड़के एक ताल के तट पर मेड़कों के संग
कौतुक के संग कौतुक कर रहे थे. जब वह दुखिया
मेड़क जल से बाहिर सिर निकालते तब वे उत्पाती
लड़के उनको पाथर मार्ते और हंसते थे. निदान एक
चतुर और परीक्षक मेंडूक अपने दल में से साहस

करें उन अन्यायि बालकों से कहने लगा कि ए मनुष्य के जन्मे तुम नहीं समझते कि यह कर्तव्य तुम्हारे लिये तो खेल है पर हमारे विषय में मृत्यु है.

उपदेश.

वे लोग अति कठोर और अन्यायी हैं जो पराए के दुःख से प्रसन्न होते हैं और बड़ी मूर्खता से दूसरों के दुःख देने को खेल बूझते हैं औ दुःखित की ओर से भय नहीं करते.

२०० दृष्टांत

मंडूक और वृषभ का.

किसी दादुर ने दो बैलों को घोर युद्ध करते हुए देख अपने मित्रों को बुलाय के कहा ए भाई देखो हमारी कैसी गत होगी? एकने उनमे से कहा. भाई तू काहे को घबराता है? वृषभ मेंडक का कौन संबंध है और पट पर को भील से कौन समानता है? उसने उत्तर दिया एजी बड़ा संबंध है. क्योंकि वह जो हारेगा तो पटपरमें से भाग भील के बीच आय आसरा लेवेगा. तब हम सैकड़ों खतारे और मारे जावेंगे.

परीक्षा.

राजों के रन में अनेक दिन प्रजा मर्ती और बसती हैं.

२०१ दृष्टांत

खरहे और गेरैया का.

एक खरहे को गिद्ध ने धरा था. और वह अति असमर्थ होय पुकार पुकार रोय रहा था. और एक चिड़ा कुछ

प बैठे ऊए यह गत देख रहा था. खरहे की हंसी और ठठोली से कहा. भला तुझ ऐसे द्रुत गामी और वायु समान चल्ने हारा जन्तु ऐसा बैठ के मारा जावे क्यों नहीं भागता और अपने पट पर के चल्ने हारे पांव को काम में नहीं लगाता? क्योंकि तुझ ऐसे शीघ्र गामी को गिद्ध से बच्ना अति सहज है. और वह गैरैया इसी बात चीत में थी कि अचानचक एक शिकारा पवन से नीचे आय एकही झपट्टे में चिड़िया को लेगया. और उसके रोने और चिल्लार ने का कुछ भय नहीं किया बरन तुरंत उसको टूक टूक करके खाय गया. और वह खरहा जो मर्ता था सो इस गैरैया की यह दुर्गत देख कहने लगा तूने अभी मेरी बिपता देखके मेरे संग ठठोली की थी और आप को उस से निर्विघ्न बूझता था? अब आनंद होय के उसी आपदा के कटोरे का जल पीओ और उसी हंसी का चर्बन चबाओ.

उपदेश.

हम तो आपही आपदा में पड़ने के योग्य हैं और यह अति नीच पन और क्षुद्र पन है कि पराए को बिपता में देख के दुःखी न होवें और उन से ठठोली करें.

२०२ दृष्टान्त

दो मनुष्य और फांसी का.

एक शोकी जो मारे बिपत् के दरिद्र और निर्बल मित्र हीन और अविश्वासी होय गया था सो उसने चार दिन के जीवन को जीव का जञ्जाल समझ के अपने मन में

उसी बिचारा कि मरे न फांसी लगाय के मरे. इसी रीत एक खूंटा चौर एक फांदा बनाय के खूंटे को एक पुरानी भीत पर गाड़ने लगा कि जिस में डोरी बांध के अपने कंठ में फसरी लगावे. अकस्मात् उसी समय एक बड़ा पाथर चौर एक मुहर की भरी ऊई हांड़ी उसके पास उस ठांव से नीचे गिरी. तब उस मनुष्य ने उस की खोज चौर रसरी को उसी ठांव छोड़ा चौर अति प्रसन्न होय धन भरे पात्र को लिये चला गया. उसी के जातेही दूसरा जन जिस ने उस मुद्रा भरी हांड़ी को गाड़ रक्खा था सो उस को देखने आया. चौर जब उस ठांव कुछ न पाया तब मारे शोक चौर चिंता के उसी जेवरी को अपने कंठ मे लगाय चौर खूंटे से लटकाके प्राण तज दिया. उस के मर्ते समय मन समझौती के लिये बिना इस बचन के चौर कोई दूसरी कथा न थी कि सब धन तो नष्ट भया परन्तु इस जेवरी का फांदा मुझे अंत में हाथ लगा.

चेतना.

सत्य है कि धन का मोह सारी आपदा का मूल है चौर यह संपत् अपने ठाकुर के लिये कठिन आपदा है. क्योंकि जो वह जीते जीव उस के काम न आई तो मर्ते समय उस को पछतावा चौर शोक बढ़ाती है.

२०२ दृष्टांत

एक वैद्य चौर भाण का.

एक समय एक वैद्य किसी सभा में बैठा अपनी दवा

रपैय सिंह लैं लोगों को दिखला रहा था. और चार लोग उस के चारों ओर ठाढ़े भए थे. अचानचक एक भाल सिंह की नाक में डोरी बंधी हुई थी सो उसी ओर से आता था. इतने में वह सकल लोग उस बैल को छोड़ रीछ की ओर देखने लगे. तब वह पशु उन लोगों से यह बोलने लगा ए मित्र मैं इस से बड़ा प्रसन्न भया कि तुम सब मुझ को बड़े अचरज से डीठते हो क्योंकि मेरी नासिका में जेवरी का बंधन है और एक जना मुझे खींचे लिये जाता है. परंतु हम को न चाहिये कि आपस में एक दूसरे को हंसें. क्योंकि वह चिकित्सक तुम्हारे कान पकड़ कर खींचता है. और मेरी नाक धर के यह नटुवा घसीटता है. और जो मेरी नासिका फांदे में है तो तुम्हारे कान कारागार में हैं.

चेतना.

सकल लोग पंच भूत के अधीन हैं विशेष करके काम जिस ने अपनी झूठी बातों से हमारी बुद्धि को दासी बनाया है.

२०४ दृष्टांत

काली पन्नी का.

वह अभागी और नीच औरत की है जिसका नाम काली पन्नी है सो अनेक दिन से इस संसार में सर्व्वव्यापियों की भांत से राज करती रही. निदान [illegible] देवताओं

एकच होय के कही बरामर्ष दी कि इस अशुद्ध बंध और कुचाल को बन्द देवें अथवा घांडी. और इस के लिये कचहरी में बड़ प्रधान नियोग किये गए कि नीत के प्रमाण काम काज करें. परन्तु छः महीने बीत गए तब तक भी चढ़ो यत्ते अच्छी रीत से निर्भय अच्छा व्यवहार करती थी और कोई बाद वा झगड़ा पत्र उस पर होय नहीं सका. तब अनेक भेदी और हरकारे खोज ढोह के लिये ठहराए गए. निदान हज़ारों कठिनता से एक अपराधी को कचहरी में धर लाए जिस पर चढ़ोर यत्तो का संदेह भया थाः क्योंकि उसने कचहरी के एक दर्बारी की अनेक प्रशंसा की थी जो निर्गुन मिथ्यावादी और दुराचार इत्यादि कर्के प्रसिद्ध थाः निदान उस पातकी ने अंगीकार किया सत्य है कि मैंने उसी दर्बारी की ओर इस उत्तम स्तुति को संबंध किया था. और उसी से उस की विचार चाहा कि क्या मैंने तेरी झूठी प्रशंसा की थी वा नहीं? तब उस दर्बारी मनुष्य ने न केवल उसी दोषी को निर पराधी समझ के छोड़ दिया बरन उस कचहरी को भी अपराधी किया क्योंकि जिस ठांव में ऐसी बात जो सच और ठीक हैं उस को चढ़ो यत्तो का नाम लेके कलंक लगाते हैं. इस लिये वे सब कचहरी के प्रधान अपनी अपनी सेवा से छोड़ाए गए. क्योंकि यह उचित नहीं था कि उस अपराधी को दंड करें. कि जिस के ऊपर कोई बाद न करे.

परीक्षा.

मनुष्य की रुचि नक़ली वस्तो को अधिक लाड़ दुलार करती है. और इसी लिये उस का चाव होता है.

२०५ दृष्टांत

एक दुराचार अश्व और उसके स्वामी का.

एक बुरी बान का घोड़ा जो अपनी पर्छांईं देख के उछलता था. एक दिन उस के स्वामी ने पूछा तू किस लिये इतना झिझकता है? और वह तो केवल तेरा प्रतिबिंब है सो उस की कुछ गिन्ती नहीं न तो तुझ को तेरे प्राण का दंड करेगा और न किसी भांत का कष्ट दे सक्ता है. तुरंग ने उत्तर दिया कि तुम्हारा धिक्कारना उचित है परन्तु बहुत करके मैंने देखा है कि तुम भी इन भूत प्रेत और निश्चित वस्तु से बड़ा भय करते हो. और मैं जो पर्छांईं से डरता हूं तो वह डीठ पड़ती है परन्तु तुम ऐसी वस्तु से आशंका करते हो जिस को तुम ने कभी नहीं निरखा है वरन कहानी की भांत से सुना होगा.

चेतना.

बहुत करके हम पराए को धिक्कार करते हैं ऐसे थोड़े दोष के लिये जो हमारे में अनेक पाए जाते हैं.

२०६ दृष्टांत

एक कुत्ते और उस के स्वामी का.

एक पहरिया कुत्ते को उस के ठाकुर ने धिक्कार करके कहा कि तू हर एक बुरे भले शब्द पर भोंकता है जो तेरे सुने में रात को आया. उस ने उत्तर दिया कि प्रत्येक

शब्द पर भौंकना मेरी सावधानी और फुर्ती का हेत है क्योंकि मैं आप की सेवा करता हूं. और आप यह चाहते हैं कि मैं केवल बुरे ही मनुष्य की आहट पाय के पुकारा करूं. पर मेरी समझ में यह आता है कि मैं जो प्रत्येक मनुष्य का शब्द सुन के भौंका हूं तो बहुत थोड़ा चूकता हूं बरन सच ही भौंका हूं. और जो झूठ होवे तो दस बेर में एकही बेर होवेगा.

चेतना.

मनुष्य पर अधिक बिश्वास करना कष्ट होने का हेत है क्योंकि नर लोग से सावधान होना उचित है और प्रतीत करना अनुचित.

२०७ दृष्टान्त

एक गर्धब और मूरत का.

किसी गर्धब के लादे से एक मूरत को लिये जाते थे और लोग देख के दंडवत करते थे. तब वह मूर्ख पशु यह गति देख के कान उठाने लगा। और मन में प्रसन्न भया कि यह लोग मुझी को प्रनाम करते हैं. परन्तु एक जन ने उस के बड़े कानों में धीरे से कहा कि ए निर्गंत जन्तु तू वही गदहा है चाहो तेरी पीठ पर मूरत रहे वा न रहे. और यह तू निश्चय जान इतनी मान मर्यादा तेरे लिये नहीं करते हैं बरन इस मूरत के कारन है जो तेरी पीठ पर है.

परीक्षा.

निर्बुद्धि जन बहुत करके उस मान मर्यादा को अपनी ओर

सम्बन्ध पावें हैं और अपने लिये समझते हैं जो सब कों पराए के संग सम्बन्ध होता है.

२०८ दृष्टान्त

कूकर और बिड़ाल का.

एक श्वान और बिड़ाल जो दोनों एक ही घर में छोटे पन से पाले गए थे वो आपस में बड़ी माया मोह रखते थे कि वैसा थोड़ा देख पड़ता है. और दोनों मिल के ऐसे कौतुक करते थे कि जिस में घर के लोगों का मन अति आनन्द होता था क्योंकि उन दोनों को नित दिन आपस में खेलते कूदते देखते थे. और इस माया और मित्रता में अनेक बार यह भी देखा कि खाने के समय एक हाड़ वा एक ग्रास जो उन दोनों को दिया जाता तो वे आपस में बड़ा युद्ध और चिक्कार करते थे जैसे दोनों प्राय नामक शत्रु मिल के जूझते हैं.

ज्ञान.

अपने मनोरथ के लिये लोग झगड़ा और लड़ाई करते हैं.

२०९ दृष्टान्त

घरेलू कुत्ते और गर्दभ का.

एक रखवाला श्वान और रोटी वाला अन्धा खर दोनों मिल कहीं दूर देश को जाते थे. अकस्मात् दोनों को मग में भूख लगी: दुखिया गर्दभ तो घास चरने लगा. परन्तु श्वान ने उस के रोटी वाली जो उस की पीठ पर थी. और बेर बेर हठ करने लगा. तब गदहा

बोझ जो रोटी मेरे पीठ पर है सो मेरी नहीं. और मेरा इतना पौरुष नहीं कि रोटी की मोटरी से निकाल के तुझे देऊं. निदान एक भेड़िया उन के ढिग आया तब गर्दभ उस को देख के कंपित भया और कुत्ते से विनय कर कहने लगा मुझ को तो यह भरोसा है कि तुम अपने संगी को बचाओगे और ऐसे निरुपाय समय में मुझ दुखिया की सहायता करोगे. तब श्वान ने स्पष्ट उत्तर दिया कि जो भले समय में दूसरों को साझी नहीं करते हैं सो विपत् पड़े पर क्या सहाई खोज पावेंगे. अथवा जो आपही अकेले खावें सो आपही अकेले युद्ध करने को जावें. यह कह के उस गर्दभ को अकेला छोड़ चला गया.

परीक्षा.

किसी व्यवहार में कठिनता और सावधानता नहीं बरतन करने वाले का हेत होता है. अथवा हम जो किसी जीव पर दया न करें और उस को समय पड़े पर काम न आवें तो वह भी हमारी विपत्ता में कब हितू होवेगा.

२१० दृष्टांत

एक स्त्री और काल का.

एक स्त्री जिस का भतार अति पीड़ित था और सब वैद्य गुनी भी हार चुके थे इस लिये उस की स्त्री बड़ी व्याकुल थी. और इस दुखिया को बिना इस ध्यान के और किसी वस्तु से ढाढ़स नहीं होती कि जो स्वामी के बदले में यमराज उस स्त्री का प्राण लेवे, फिर काल

को बिनती करके बुलाने लगी. निदान एक दिन यमराज डरौनी मूरत और रोगा आकार बनाय के उस के सन्मुख आय खड़ा भया और वह उस को देख बहुत डरी और कहने लगी कि आप चूक न कीजिये क्योंकि जिस के लिये आए हो सो उधर पड़ा है.

परीक्षा.

हम किता ही नेह और मित्रता को अपने भाई बंधु से प्रकाश किया चाहें. परन्तु थोड़े दिन के पीछे हम को भली रीत से बिचार होगा कि अपना मोह सब पर भारी है. अथवा सब लोग अपने जीव को पियारा बूझते हैं..

२११ दृष्टान्त

ऊंड़ार और पीड़ित खरहा.

एक ऊंड़ार किसी रोगी गदहे से औरा पूछने गया. और उसकी नाड़ी बड़े नेह से देख कहने लगा ए मित्र तुम्हें किस ठांव अधिक व्यथा है? खरने कहा हाय उसी ठांव में अधिक व्यथा है जहां तुम अंगुरी धरे हो.

परीक्षा.

संसार के जो लोग अपने प्रयोजन के लिये पीड़ा और आपदा के समय रोगी से मिलने आते हैं तो उस पीड़ा और आपदा से भी अधिक दुःख दे जाते हैं.

२१२ दृष्टान्त

एक असंतोषी गदहे का.

एक गदहे को शीतकाल में किंचित् तृण पकल और हरे

ऋतु की अभिलाषा भई क्योंकि वह ठंडे स्थान और सूखी घास से अतिही दुःखित था. निदान उस की आशा पूरी भई क्योंकि तभी बताश और हरी घास ये दोनों पदारथ उस के भाग में ऊए थे. परन्तु बड़े श्रम और कष्ट से जैसा वह गदहा इस ऋतु से दुःखित भया तैसाही सीत से भया था. तब वह ग्रीष्म काल की अभिलाषा करने लगा और जब ग्रीष्म काल आया तब उस को बसंत काल से भी अधिक कष्ट भया. तब उस ने यह ध्यान किया कि जब लग बसंत काल नहीं आता है तब लग मेरा श्रम नहीं घटेगा. फेर जब बसंत काल आया तब उस को सेब और दाख लकड़ी ढोने से दूना दुःख भया इस में वह निरुपाय मर्धैव बरस भर ताईं इसी रीत अपने ऊपर कष्ट दुःख सह के पुनि सीतकाल की बांछा करने लगा जो किसी रीत उस के भाग में आनन्द प्राप्त होवे कि जिस ठांव से उस ने अपने दुःख की निंदा प्रारंभ की थी.

परीक्षा.

चंचल मनवाले का जीवन और मिथ्या वासना और निन्दा ही में बीतता है.

२१३ दृष्टांत

एक बराह और लोमड़ी का.

किसी रूख की छाल पर अपनं दांतों को चोखा कर रहा था. इतने में एक लोमड़ी ने वह गत देख के उस से पूछा कि इस में तेरा कौन

मनोरथ है? सूअर ने उत्तर दिया इस प्रश्न की इस लिये चोखा कर्ता हूं कि युद्ध के समय काम में आवे. तब लोमड़ी बोली मुझे इसका हेत बूझ नहीं पड़ता. क्योंकि आपका बैरी इस ठांव में कोई नहीं. फिर बराह ने कहा कि इसका हेत तो स्पष्ट बूझा जाता है क्योंकि जब शत्रु मेरे संग रन करने को आवेगा तब इस अस्त्र से युद्ध करूंगा और चोखा करना नहीं पड़ेगा.

नीति.

जो कोई बैरी से भय करता रहे तो उस को उचित है जो उस से युद्ध करने के लिये पहिले ही से चौकस रहे और सावधानी की सामा में अचेती न करे.

२१४ दृष्टान्त

एक ऊंड़ार और साही का.

एक भेड़िये की यह इच्छा भई कि किसी साही से मित्रता करे परन्तु इस अवध पर कि जो पहिले साही किसी भांत से अपने कांटों को दूर करे. इस लिये एक दिन उस से ऊंड़ार ने कहा यह लोगों को भला बूझ नहीं पड़ता कि जैसे युद्ध के समय अस्त्र लेते हैं उसी रीत तू हर समय शस्त्र लिये रहे. इस लिये अब तुम को उचित है कि अपने शस्त्रों को एक ओर किसी ठांव में धर देओ और जब काम पड़े तब ले लेओ. तब यह सुन के साहीने उत्तर दिया क्या तुम युद्ध की बात कहते हो? मेरी तो सदा यही मत है कि मैं अपने हथियार बनाए रहता हूं क्योंकि मुझे ऊंड़ार की संगत है.

उपदेश.

हम को उचित है कि कभी सहायता की वस्तु वा शस्त्र अपने बैरी को न देवें और बैरी के बचन में कभी आप को न फसावें.

२१५ दृष्टान्त

एक मिथ्या बादी और बैद्यका.

एक निकम्मा मनुष्य किसी बैद्य के निकट मिलने गया. और उस को अकेला पोथी पढ़ते ऊए देख के कहने लगा कि मैं तुम को इस भांत से अकेला देख के अति अचंभव ऊआ. क्योंकि तुम ऐसे मन के उचाट करने हारे ठांव में क्योंकर हर्षित रहते हो और कौन प्रकार से जीते हो? तब उस चतुर ने उत्तर दिया तुम इस बात के बिचार में क्या अचंभित होते हो. क्योंकि मैं तुम्हारे आने के पहिले से अति आनंद में था बरन तुम्हारे आने से अधिक कष्ट भया.

ज्ञान.

बुद्धिवान मूंसा संगी अर्थात् जो सकल प्राणियों का ज्ञान मारग में प्राचीन ग्रंथ है सो बोलने हारे मित्र से लाख बिसवे उत्तम है अथवा मृत्युवत् ज्ञानी के संग अपोप वचन करना अर्थात् अगले ज्ञानियों की पुस्तकों को पढ़ना सजीव मूर्खों के संग बोलने से अत्यंत उत्तम है.

२१६ दृष्टान्त

दो बटोही का.

एक पाखक और दूसरा अंधेक एकत्र होय थोड़े थोरे

विदेश जाते थे. जो उन्मत्त था सो वारंवार नाखोंही प्रकार के ध्यान और चिंता करके चिल्लार मार यही कहता था कि मैं जीता रह के क्या करूंगा? परन्तु दूसरा हंसोड़ अपने आनंद में चला जाता था और अपने सब काम को परमेश्वर और अपने भाग पर छोड़ा था. एक बेर वह पागल उस से कहने लगा भाई तुम तो निश्चिंत और हर्षित देख पड़ते हो सो इस का कौन हेत है? मेरा कलेजा तो मारे क्रोध और शोक के कटा जाता है. तब कौतुकी ने उत्तर दिया तुम निराश मत हो क्योंकि मैंने अपने निश्चय श्रद्धा को दृढ़ किया है और अपना सकल काम काज परमेश्वर के समीप सौंपा है इसी हेत से मुझ को आनंद है. तब उन्मत्त बोला अजी तुम क्षमा करो मैंने तुम से बड़े बड़े ज्ञानियों की अनेक निष्ठा और प्रतीत देखी है जो अंत में भंग होय गई. यह कहके वह उन्मत्त फिर औरही इधर उधर के ध्यान और चिंता में पड़ा यहां तांई कि एक बेर वह उकता और कहने लगा हे भगवान जो मैं अंधा हो जाऊं तो अंत को मेरी कौन गत होवेगी? यह कह के इसीबात की परीक्षा के लिये आंखे को मुंद अपने साथी से आगे दूर लग चला गया कि अचानचक जो वह अंधा हो जाता तो क्योंकर चलता. इतने में उस के संगी ने जो पीछे आता था एक थैली मुहर भरी बाट में पाई. मानों ईश्वर ने उसके सन्तोष का फल उस को दिया. और वह निष्ठाहीन अभागा निरंधी रहा. जैसी

वही आगे गया था जो आंख न मूंदता तो निश्चय वही पाता. परन्तु ईश्वर ने उस को निष्ठा हीन होने से इस रीत निरंशी करके दंड दिया.

उपदेश.

जो कोई संतोषी होता है उस को दरिद्रता के समय ईश्वर सहायता करता है और विपत् पड़े पर अपनी कृपा प्रकाश करता है.

२१७ दृष्टांत

एक आज्ञा लंघक बाघ के बचेका.

एक बाघने अपने बचे को अति उत्तम उपदेश किये थे. उस में से एक यह है कि तू नर के संग कभी संग्राम न कीजियो क्योंकि तू किसी भांत से कदाचित् जयी न होवेगा. उस ने पिता की आज्ञा को सुन के सुध राखी परन्तु उस में भली भांत से मन न लगाया. जब यौवन अवस्था भई और अति बलवान् भया तब वह मनुष्य की आशा से बस्तियों की ओर टहलने फिरने लगा. इतने में उस को गाड़ी के बैल जुते ऊए दीठ पड़े पुनि घोड़े. परन्तु उन्होंने अपने को मनुष्य करके भाषा इस लिये व्याघ्र के पुत्र ने उन को कुछ न छेड़ा. और एक मनुष्य की ओर झपटा जो लकड़ी फाड़ रहा था और उस से कहा क्या तू मनुष्य है? उस ने उत्तर दिया हां मैं नर हूं तब व्याघ्र पुत्र ने कहा भला तुम मुझ से युद्ध कर सकोगे? उस ने कहा हां लड़ेंगे. क्योंकि मैं इन सब लकड़ियों को फाड़ सकता हूं. तुम

तो थोड़ी देर लग चला पांव इस छेद में जहां वह
लोहे की कील कि जिस को लकड़ी फाड़ने के समय
छेद में रखते हैं जिस में वह न मुंदे और सहज से
फिरजावे अपने बल की परीक्षा करो और फाड़ो.
इस में सिंह के बच्चे ने उतावली से अपने पांव को
छेद में डाला और हाथ से उस लकड़ी को काढ़ लिया.
और कील को निकालते ही वह छेद मुंद गया और वह
कुन्दा उस के पांव की बेड़ी भई. तब उस मनुष्य ने
पड़ोस के लोगों को पुकारा. और अब उस बच्चे ने यह
समझा कि मैं कष्ट कि बेड़ी में पड़ा तब बड़े बल से
अपने पग को उस कारागार में से निकाला परंतु
उस के नख उखड़ गए. और रोते लंगड़ाते हुए अपने
पिता की सेवा में जाय कहने लगा; ए पिता बड़ा शोक
है कि तुम्हारी आज्ञा उल्लंघन करने के हेत से इस मूर्ख
की यह गत भई.

परीक्षा.

अनेक आज्ञा लंघक संतान आपदा में बंद होते हैं. और
जब पछतावे से कुछ लाभ नहीं रहता तब लज्जित
होते हैं.

२१८ दृष्टांत

जुपीटर और गवांर का.

एक असंतोषी दुरात्मा गवांर ने जुपीटर के सन्मुख इस
प्रार्थना का यह निवेदन कर दिया कि वह उस को
पवन का राजा करे और वायु को उस के अधीन. तब

जुपीटर ने उस अचेत ठीठ के दंड देने के लिये प्रार्थना पत्र को अंगीकार किया. तब इसी रीत तपन और वायु की प्रीत और जलमय और निर्जल भूमि का डोलना और ठहरना उस के हाथ ऊआ. परन्तु वह ऋतु के उपाय में ऐसा मूढ़ था कि उसकी मूर्खता से कभी तो बेठिका मेंह बरसता था और कभी बेठिका के धूप होती थी. अंत को कोई समय उस के विषय में भला न भया. और जिस बरस उस के सारे पड़ोसी संपूरण लाभ और खेत की बऊतायत के लिये धन्यबाद करते थे तो वह पाले और जल के हेत से भौंखला था और अब उस को यह भली रीत सूझ पड़ा कि यह कारण उसी की अभागता और ढिठाई और मूर्खता का प्रतिफल था. तब उसने अति निबलाई और चिरौरी से जुपीटर के सन्मुख जाय निवेदन किया कि सकल ऋतु का उद्योग पहिले आपही के हाथ में जैसा था वैसाही रहे.

ज्ञान.

हमारी भलाई और उपकार का एक उत्तम उपाय यही है. कि हमारी सकल वृथा प्रार्थना ग्रहण नहीं होती.

२१९ दृष्टान्त.

आनन्द और शोक का.

संपत् और विपत् जो दोनो बहनें एक माता के पेट की थीं एक बेर इन दोनों में इस बात का बड़ा विवाद भया कि उन दोनों में से कौन बेटी है और कौन छोटी और

जब यह विवाह ने आप भंजन न कर सकीं तब आज्ञा न्याय करोने मैनस् देवता के सोंहीं गईं उसने उन का विवाह भंजन करने के लिये अनेक उद्यम किये कि जिस में एकत्र होय सुख से दिन निभावें जैसे कि दो बहनें मिली रहती हैं परन्तु जब उस के समझाने बुझाने से उन के मन में कोई वचन प्रवेश न किया. अंत को निरुपाय होय के मैनस ने आज्ञा की कि दोनों एकही सीकण में एकत्र बंधी रहें. और सदा एक दूसरी के पीछे चले. वा उस के आगू यह अथवा इस के पहिले वह.

परीक्षा.

जगत् में सब ठांव सुख और दुःख एकत्र जुड़े हुए देख पड़ते हैं.

२२० दृष्टान्त

एक ग्राम वासी और गर्दभ का.

एक गवांर जो युद्ध के समय में अपने गर्दभ को एक खेत पर में चराय रहा था अकस्मात् उस को किसी ने डराया कि यह देख शत्रु आय पहुंचा. तब गवांर ने उतावली से खर को बुलाय के आतुर होय अति भय से कहा कि तुरंत यहां से चल नहीं तो बैरी के हाथ में पड़ेंगे. खर ने उत्तर दिया जो हम पड़े तब तो क्या होगा? कहो मुझे धर के जावें मेरे भाग में जो सेवा करनी लिखी है सो सदा रहेगी चाहो मैं पड़ा जाऊं अथवा नहीं.

शिक्षा.

यह हमारी बड़ी चौकसी है कि संपत् के समय हम लोगों के संग ऐसी चाल ढाल रक्खें क्योंकि हम जो निर्धन भी हो जावें तो वे सब हमारे मित्र और सहाई होवें

२२१ दृष्टान्त

जहाजी लोगों का.

एक बेर बड़े आंधड़ में एक जहाज के कोई एक जात के लोग अपने २ देवता से प्रार्थना करने लगे. तब प्रधान जहाज चलाने हारे ने उन की प्रार्थना सुन के कहा ए संगी तुम थोड़ा समझो क्या करते हो? क्योंकि जो हम अब अभी डूबें और पीछे इस के हमारे निवेदन को देवता वहां लग पहुंचावें तो इस क्षमा चाहने का क्या फल होवेगा? इस लिये ऐसे भटक ने फिरने से यही भला है कि हम उसी को मनावें जो हम सभों को दूसरों की सहायता बिन आपही बचा सके.

शिक्षा.

जो हम चाहें कि हमारा काम काज भले उपाय से किया जावे तो हम को अवश्यक है कि हम उस को आपही आप करें और दूसरे के हाथ न देवें.

२२२ दृष्टान्त

पशु और मछला.

एक समय बन के सकल पशु और सारे मच्छ ने आपस में एका किया कि पक्षियों के संग युद्ध करें. परंतु जब युद्ध

का छिन्न बिचारा गया तब मछुवियों ने एक क पट घट में छैना भेज ने के लिये छमा चाही कि हमारा कटक छूखी भूमि में आय नहीं सक्ता.

परीक्षा.

शिथिल बचन और ढीले प्रतिज्ञा का फल बिना लज्जा और निराश्र के दूसरा नहीं.

२२३ दृष्टान्त

एक अहंकारी जुवा का.

एक निर्लज्ज युवा अकस्मात् एक वृद्ध से मिला जिसका डील बुढ़ापे और निर्बलता से निभ गया था. तब उस को देख के कहने लगा अजी तुम्हारी कमान का क्या मोल है? बूढ़े ने उत्तर दिया ए मूढ़ अपना अर्थ अपने पास धर क्योंकि जब तू मेरी अवस्था को पहुंचेगा तब ऐसा धनुष तुझ को सेंत में मिलेगा.

समाचार.

निर्बुद्धि अपने अंत की सुर्त नहीं रखते और दूसरे से ठठोली करते हैं.

२२४ दृष्टांत

भालू और मधु माखी का.

एक भालू को किसी मधुमाखी ने अपने डंक से छाती पर काट दिया तब रीछ कोप करके उस उपवन में जहां अनेक मधु का छाता था तहां दौड़ा गया. और उसके फूटे में सब को उजाड़ डाला. तब उस अन्याय के हेत से माखी की सारी सेना उस पर टूटी और डंक से

मारे उस को निर्जीव कर दिया. सिद्दान्त इस दृष्टांत से उस मूर्ख को यह निश्चय भया कि क्रोध कर्के हजार डंक खाने से एक डंक खाय के धीरज धर्ना मेरे लिये भला था.

सिक्षा.

सारे क्षमा सन्तोष और क्रोध और विपत् सहने से एक जने के हाथ का अन्याय अंगीकार कर्ना उत्तम है.

२२५ दृष्टांत

एक अहेरी और चमार का.

एक अहेरी ने किसी चाम लेनेवाले से कहा कि मैं अमुक दिन भालु का आखेट कर्ने जाऊंगा. और उसका चाम तेरे निकट बेचूंगा. तब वह चमार इस बात का बचन प्रतिज्ञा कर्के अहेर के दिन उस अहेरी के संग गया. और बन में जाय के एक वृक्ष पर चढ़ा. इस लिये कि उस अहेरी का खेल देखे. अहेरी ने साहसी की रीत भालु की गुफा लग जाय के अपने श्वान को ललकारा. इतने में रीछ तुरंत उस ठांव से बाहिर निकला. और अहेरी की छक्की छूटी पड़ी इस लिये वह रीछ की शंका से औंधा गिरा और जीता रहा परन्तु ऐसी सांस साध के स्थिर रहा मानो कोई मुआ पड़ा है. फिर भालु ने उस को जाय के सूंघा और जाना कि यह प्राणान्त भया है. तब छोड़ के चला गया और जब भालु डीठ न पड़ा तब वह चमार वृक्ष पर से नीचे उतर आया. और उस अहेरी को उठाय के पूछा ए मित्र रीछ ने तेरे कान में क्या

कहा? उसने उत्तर दिया कि आगे ने मुझ को यही उपदेश दिया कि आगे को सावधान रहो और पहिले रीछ को मारो पीछे उस के चाम को बेचो.

उपदेश.

हम को अवश्यक है कि उसी बात में वे स्वीकार और प्रतिज्ञा करें जिस के करने की सामर्थ्य है.

२२६ दृष्टांत

एक वृद्ध और उस के पुत्र और गर्धभ का.

एक वृद्ध और उसका बालक दोनों मिल कर एक खर को अपने आगे हांकते ऊए मेले की ओर बेचने लिये जाते थे. पहिले एक मनुष्य को गैल में मिला उस ने उन पिता पुत्र को थोड़ी दिष्ठ और ठठोली से कहा तुम लोग अति निर्बुद्धि हो जो पांव पांव ऐसा कष्ठ पाय के चले जाते हो इस गदहे पर असवार क्यों नहीं होते? तब उस निष्कपट वृद्ध ने जो हर एक की बात मान लेता था अपने पुत्र को गर्धभ पर आरूढ़ किया. परंतु अनेक दूर लग नहीं गया था कि दूसरा जन उस बालक को धिक्कार करके कहा तू अति शिथिल और मूर्ख लड़का है क्योंकि आप तो आरूढ ऊआ है और तेरा दुखिया वृद्ध पिता पीछे चलता है, तब वह बूढ़ा अपने संतान की धिक्कार सुन के अति दुःखित भया. और उस को नीचे उतार आप असवार भया. और थोड़ा और आगे बढ़ा इस लिये कि दूसरा कोई बेटे को बुरा भला न कहे परन्तु कुछ देर नहीं भई थी

कि पथिक लोग उस वृद्ध को छी छी करने लगे इस बूढ़े
निर्दय को देखो कि आप तो चैन से गदहे पर असवार
ऊए चला जाता है और इस का बालक पीछे चलता है.
तब दुखिया बूढ़ा बऊत घबराया कि अब किस भांत से
लोगों को प्रसन्न करूं? निदान बालक को अपने पीछे
गदहे पर बैठा लिया और मन में कहा कि अब सब
कोई हर्षित होवेंगे और धिक्कार न करेंगे. परन्तु
इसी रीत से वे थोड़ी दूरताईं नहीं गए थे कि इस में
कितेक पथिक उस बूढ़े से पूछने लगे कि यह गर्धब
तुम्हारा है वा नहीं? क्योंकि इस रीत की असवारी
से बूझ पड़ता है कि यह आप का वाहन नहीं होवेगा.
और वह वृद्ध जो उस समय लग लोगों की बात
मानने से वञ्चित नहीं ऊआ था फिर इस सोच में
पड़ा कि अब मैं कौन उपाय करूं कि जिस में लोग
प्रसन्न होवें? क्योंकि जिस बात का पीछा मैं करता हूं
उसी में सब लोग अप्रसन्न होते हैं और मेरी भी
इस निंदा से मुक्त नहीं होती. भला यह बात जोंकी तों
रहे अब गर्धब को बांध के अपने कांधों पर धर ली
जिये तब तो सकल मनुष्य ठठोली और धिक्कार
की ठांव धन्यवाद करें. इसी रीत उस विमल मन के
बूढ़े ने एक मोटी लकड़ी में गदहे को जकड़ा. और
पिता पुत्र दोनों अपने कांधो पर उठाय के ले चले.
परंतु इस नए स्वांग को देख हाट के लोग बड़े अचंभे
से हंसने लगे और सब उस पर आय टूटे तब देखने

हारों का झुंड उन के पीछे लगा. सो पैंड़ पैंड़ पर उन के संग हंसी ठठोली करते थे. निदान बुड्ढा लोगों के हाथ से निरुपाय भया और अपने श्रम और उद्यम से जिस में सारे जग को प्रसन्न करे अत्यन्त संकेत भया और कोपित होय एकही बेर गधेको नदी में डाल दिया और यही कहते२ अपने घर की बाट धरी कि अब इस जंजाल से छुटे. मनुष्य कहां लग लोगों के विपरीत ध्यान का पीछा करे.

ज्ञान.

जो कोई ऐसी इच्छा करता है कि सब को प्रसन्न करे सो किसी को हर्षित नहीं करेगा. और जो आप बुद्धिवान और चतुर नहीं है सो लोगों के प्रमान चलेगा और नष्ट होवेगा.

२२७ दृष्टान्त

जुपीटर और दो झोली का.

यूनान देशी जुपीटर देवता ने प्रथम मनुष्य को गढ़ा और उस को दो थैली दी. एक थैली जो पड़ोसियों के दोष और औगुन के लिये थी उस को पीछे रखने की आज्ञा दी. और दूसरी जो विशेष करके उसी मनुष्य के दोष कारन थी सो उस को सन्मुख धरने के लिये कहा इस लिये कि वह प्रत्येक समय अपनी दृष्टि में रहे. परन्तु नर ने जुपीटर के वचन को विपरीत करके अपने भूल की झोली पीछे फेंक दी और दूसरों की आगे धरी.

इस लिये कि चोरों का घाट सदा उस को देख पड़ता और उस को अपने चूक की सुर्त नहीं आती.

चेतना.

हम लोग पड़ोसी का घाट और दोष देखने के लिये दृष्टि के बड़े चोखे हैं और अपने दोष और घाट देखने में अंधे.

२२८ दृष्टांत

एक बैपारी और जहाजी मनुष्य का.

किसी बैपारी ने एक प्रधान जहाज चलाने हारे से समुद्र में पूछा कि तुम्हारा पिता कौन मृत्यु से मरा? उसने उत्तर दिया कि मेरा बाप दादा परदादा सब डूब के मरे. तब महाजन ने कहा क्या तुम डरते नहीं अकस्मात् तुम्हारे भाग में भी उसी रीत मृत्यु होगी. पुनि प्रधान जहाज चलाने हारे ने बनिये से कहा कहो तुम्हारे पुरखा किस रीत मरे? बैपारी ने कहा सब अपने अपने सेज पर मरे. फिर उस प्रधान चतुर ने कहा. हम को भी उचित नहीं कि समुद्र में जाने डरें क्योंकि तुम तो खाट पर जाते हुए भय नहीं करते.

सिक्षा.

जब हम किसी अति कठिन और अवश्यक काम के लिये बुलाए आवें तो हम को चाहिये कि ईश्वर का भरोसा करें और उस काम से मुंह न मोड़ें.

२२९ दृष्टांत

गिद्धिनी और बिल्ली और सूअरनी का.

एक गिद्धिनी और बिल्ली और बराहिनी किसी बन में

एकही ठांव रहती थी. गिद्धिनी ने अपना घोंसला एक बड़े सांखू की रूख पर बनाया था और बिड़ाली ने उस के खोड़र में बच्चे दिये थे. और सूअरनी ने उसी वृक्ष के मूल के खोड़र में एक झोल बच्चों का निकाला था. एक दिन बिल्ली गिद्धिनी के ढिग जाय ऐसा कहने लगी कि तुम नीके यत्न करो क्योंकि वह अशुद्ध सूअर्नी ने तुम्हारे विषय में कुछ बुरा बिचार किया है और मुझ दीन के विषय में भी. और वह हर दिन इस वृक्ष का मूल खोदती है. अंत को यह वृक्ष गिरेगा और तुम्हारे हमारे सन्तान नष्ट होवेंगे. अब इसी रीत ठगनी बिल्ली ने शत्रुता का बीज उस गिद्धिनी के मन में नीका करके रोपा. तब उस ठांव से चुप के सूअर्नी के ढिग आई. और कहने लगी तू कुछ नहीं जान्ती कि कैसी आपदा में तेरे बच्चे पड़ा चाहते हैं. क्योंकि वह गिद्धिनी जो इस वृक्ष के ऊपर रहती है सो नित औसर खोजती है इस लिये कि तेरे सन्तान का अहेर करे. अब जो तू यहां से डगेगी तो वह गिद्धिनी निश्चय अपना काज साधेगी. यह कहके अपने वास में आई जहां दिखलाने के लिये दिन को भय मान इधर उधर देखती रहती और निस के समय धीरे धीरे बाहिर जाय के अहेर कर लाती और अपने बच्चों को पोसती परन्तु गिद्धिनी सूअरनी की अशंका से अपने खोड़र से बाहिर डग न धर्ती. और सूअर्नी भी गिद्धिनी के भय से अपने वास को कभी छोड़ती. संक्षेप वे दोनों

यहां लग अपने बच्चों की यत्न और रखवाली में रहीं कि अंत को क्षुधा और तृषा के मारे मर गईं. तब उन के बच्चे उस ठगकी बिल्ली के हाथ लगे.

परीक्षा.

जिन के निकट ठग और छली आवा गमन करते हैं वैसे लोगों में कदाचित् सुख चैन नहीं मिलेगा.

२३० दृष्टांत

गवार और नदी का.

एक गवार को उसकी माता ने माखन और छैना बेचने के लिये एक नदी के तीर चौक में भेजा था जिस के पार उसे उतर्ना था इस इच्छा से तट पर आय बैठा कि जब उस का सकल जल तर्खे से तुरंत बह जायगा तब मैं निर्बिघ्न पार उतर जाऊंगा. इसी रीत आधी रात लग बैठा ऊआ बाट जोह रहा था. और जब देखा कि वह जल वैसाही बहता जाता है तब फिर के अपने गृह में चला आया. माताने पूछा ए पुत्र तूने कहां दिन गवाया जो इस माखन और छैने को बिना बेचे जैसे का तैसा फेर लाया? पुत्रने उत्तर दिया कि नदी सारे दिन बहती रही इसी लिये म उसके तट पर बैठा दीठता रहा कि जब उसका नीर बह जावे तब मैं पार उतरूं.

सिक्षा .

हम को न चाहिये अपने मन में कठिन ध्यान धरें और उसी के भरोसे पर आप को बिगाड़ें.

२३१ दृष्टांत

एक बलवन्त गिद्धिनी का.

एक बेर पक्षि में यह विवाद भया कि उन में कौन सुन्दर है? इस में गिद्धिनी ने अपने पक्ष का अनेक बर्णन किया और बड़ी बड़ाई और घमंड प्रकाश करने लगी और बोली कि सकल पक्षी को मेरे धूंस धाम के हेत से बिना निबताई के दूसरा उपाय देख नहीं पड़ता. यह कौतुक देख मोर बोल उठा. सच है हम को चाहिये कि आप की सुघड़ई और सुंदरता को मानें. तो तुम्हारी मन मोहिनी चोंच और पियारे थापकी जोखम से बचें.

परीक्षा.

अनेक लोग अधिक भय के कारण लल्लोपत्तो और चिरौरी करते हैं.

२३२ दृष्टांत

एक मूर्ख भूस्वामी का.

एक मूर्ख भूस्वामी ने जो किसी चतुर भूस्वामी की भूमि का ठाकुर ऊआ था एक दिन आज्ञा की कि उसकी दाख के उपबन में जितनी टट्टियां चारों ओर से थीं सब को जड़ से खन डाले इस लिये कि उन वृक्षों से किसी फल होने की आशा नहीं है. निदान उस का प्रति फल यही ऊआ कि उस दाख के बन को मनुष्य और पशु ने नष्ट किया. और वह मूर्ख अंत को लज्जित भया और अपनी मूर्खता का अंगीकार किया कि मैंने इस

फल दायक और रक्षा करने की पदार्थ को नष्ट करके अनेक घाटा पाया.

सिक्षा.

दो काम अनेक उद्यम से अपने बस होते हैं एक तो फलदा-यक वस्तु मिलनी और दूसरी उसकी रखवाली करनी.

२३३ दृष्टांन्त

वृषभ और मशक का.

एक मूर्ख मसा किसी बैल के सींग पर बैठ के बड़े गर्व से कहने लगा मेरे बैठने से तुम मत झुंझलाओ, राम दुहाई में तुम को दुःख देने नहीं चाहता हूं। बरन आप जो आज्ञा कीजे तो मैं अभी इस ठांव से उड़ जाऊं. बैल ने उत्तर दिया कि तुम को यहां से जाना कुछ अवश्यक नहीं जब लग चाहो तब लग बिराजो. क्योंकि मुझे कुछ जान नही पड़ा कि तुम कब आए और कहां बैठे हो। और जिस समय तुम गमन करोगे तब भी मुझ को संदेसा नहीं मिलेगा.

परीक्षा.

थोड़े लोग ऐसे तुच्छ हैं कि जिन का होना और न होना जगत् में दोनों समान है तिस पर भी वे अपने मन में आप को अति नीक बूझते हैं. बरन धनपत्ति और और राजधर्म अपना नाम धरते हैं.

२३४ दृष्टांन्त

एक परदेशी और टिड्डियों का.

एक दुरात्मा बटोही ग्रीष्मकाल में असवार हुआ चला

आता था. इतने में टिड्डियों के झुंड से अति क्रोधित होय चाहा कि घोड़े से उतर के सभों को नष्ट करे. वैसेही किसी किसी को अपने पांव के तले दबा और कितनों को कोड़े से हना. संक्षेप टिड्डियों के मारने में उस का सारा दिन बीता और सांझ के समय इतना श्रान्त और शिथिल भया कि व्याकुल होय के उसी ठांव एक वृक्ष के संग घोड़े को बांधा और उन्हीं चिकारने हारे कनगों में कि जिन के मारने से रुका था उन्ही में लेट रहा.

परीक्षा.

जो कोई ऐसा भरोसा रखता है और श्रम कर्ता है कि इस छली और उत्पाती संसार में संपूरण सुख चैन से जीये उसकी आशा कभी पूरण नहीं होवेगी और उसका उद्यम सकल निष्फल होवेगा.

२३५ दृष्टान्त
गिद्ध और खरहे का.

एक गिद्ध किसी खरहे की बिल में से कोई बच्चों को झपट्टा मार के ले गया इस लिये कि अपने बच्चों को खिलावे तब खरहे के बच्चों की माता अति गीहारे से रोय के उन दूतों की दुहाई देने लगी जो निरपराधी और उपद्रवित जन की सहायता करते हैं और गिद्ध से कहने लगी कि इन निर्दोषियों पर दया कर और किसी रीत का उपद्रव मत कर. पर उस दुराचारी गिद्धने दुखिया माता की रोय पुकार न सुन के दया माया न करके उन बच्चों को

टूक टूक किया. और यह अन्याय देखं के सारे खरहे आपस में एकत्र होय पलटा लेने की इच्छा से उसी वृक्ष का मूल खोदने लगे जिस के ऊपर उस गिद्धने अपना खोंता बनाया था. फिर थोड़े दिन के पीछे वह वृक्ष पहलेही झाड़से गिर पड़ा. कोई कोई गिद्ध के बचे गिर्ने के कष्ट से मर गये और किसी किसी को अहेरी जंतु उसी खरहे के सन्मुख खाय गए जिस के बचों को उसने मार के खिलाया था.

उपदेश.

उपद्रव का कष्ट यद्यपि प्रकाश रूप देखने में थोड़ा है परंतु उपद्रवित के हाहाकार के झाड से तुरंत निर्मूल होता है.

२२६ दृष्टान्त

तीतर और अहेरी श्वान का.

एक समय तीतरों के झुंडने बधिक और कूकरों के भय से एक जात सटर अर्थात् अहेरी श्वान के संग मेल की आर बौध बदी कि वे श्वान एकत्र होय मित्रता का व्यवहार करें. सटर अपने हृदय में यह बूझ के एक मत भया कि हमारे सु व्यवहारी कुत्तों में से इन तीतरों को कोई न छेड़ेगा. क्योंकि इस समय के श्वानों को यह उपदेश और सिक्षा की गई है कि अब आखेट के समय कोई उन को तीतरों के आस पास पावे तो वे उसी ठांव निश्शब्द होय के ठिठक जावें और एक डग आगे न बढ़ावें. अब यह प्रतिज्ञा पत्र हस्ताक्षर का

श्रीर साक्षी से सीख पक्का पोढ़ा भया तब उस के थोड़े दिन पीछे उन तीतरों के झुंडने उन्हीं अहेरी कूकरों को पट पर में खेलते उड़ते देखा. परंतु कुत्ते तीतरों को देखतेही उसी सिक्षा के प्रमान जैसी उन को दी गई थी ठाढ़े रहे. श्रीर निष्कपट तीतर यह चरित्र देख के अति प्रसन्न भए इस लिये कि श्वान अपने बचन परन के सांचे हैं. परंतु यह बात उन्होंने नहीं बिचारी कि कुत्तों को सिक्षा गुन करनां उन के लिये निष्फल है श्रीर केवल उन बधिकों के लिये फलदायक है जो उन को सुपक्ष रखते हैं.

चेतना.

उस क्रोध बचन के ठहरने का कुछ भरोसा नहीं जो दोनों श्रोर समझ बूझ के भली रीत से नहीं बदे गए हैं. श्रीर ऐसे बचन परन की किंचित् प्रतीत नहीं की जिये जो बिना बिचारे करते हैं.

२३७ दृष्टांत

एक अंधे श्रीर लंगड़े का.

एक अंधा श्रीर लंगड़ा दोनों एकही पड़ोस में बसते थे. अचानचक एक समय उनको कोई ऐसा अवश्यक काज आन पड़ा कि दोनों को एकही ठौर जाना भया. तब दोनों ने एक दूसरे की सहायता के लिये श्रीर लाभ के कारन आपस में यह बचन बदा कि जो नेत्र हीन आंधा श्रीर पांव रखता है सो अपाहज संगी को कांधे चढ़ाव. श्रीर जो लंगड़ा डीठने हारा है सो दूर की बाट

भुहावे. आगे वे दोनों उसी गीत से अपने मनोरथ को निर्विघ्न पऊंचे पुनि निष्कंटक सुख चैन सहित निज मंदिर में लौट आए.

ज्ञान.

संसार के लोग एक दूसरे को खोजते हैं इस लिये कि दूसरे की सहायता बिन किसी का काज नहीं सरता.

२३८ दृष्टांन्त

तीन पश्चात्तापी मिथ्याबादियों का.

एक भेड़िया और लोमड़ी और गदहा तीनोंने अग्ले समय में जो पाप किये थे उस से अति लज्जित और पश्चात्तापित होंय के यह बिचार किया कि सब कोई अप्ना अप्ना घाट एकदूसरे के लग स्वीकार करें. पहिले ऊंड़ार कहने लगा कि एक बेर मैंने अपने रक्त की उमंग से एक हृष्ट पुष्ट बराही को हना था परन्तु वह नष्ट करने के योग्य थी. क्योंकि उस कुजात के बारह बच्चे थे जिन को शूकर साल में भूखों मर्ते छोड़ एक पड़ोसी के बन में जाय नाना भांत के अन्न भोजन से अप्ना पेट भर्ती थी. इस लिये ऐसे अभागे जीवका बधना मेरे निकट अति पुण्य था क्योंकि वे दीन दुःखित संतान भी अपने कष्ट और पीड़ा से मुक्त भए और यही बिचार कर्के मैंने उन बच्चों का प्राण नाश किया कि न रहेंगे न दुःख भोगेंगे. इतना कह ऊंड़ार नैन से नीर बहाने लगा और बोला हाय अब मैं जब उसका ध्यान कर्ता हूं तो मुझे अतिही पीर होती है, इतना सुन लोमड़ी कहने

लगी ए मेरे सांचे दयावंत मित्र जिन बातों उन दोनों काज में तेरी सत्य भावना रही क्योंकि तूने उस मूर्गी को केवल इस कारन 'मार डाला कि उसने अपने संतान की रक्षा और पालना नहीं की और उन बच्चों को इस लिये बचा जामें वे पिता माता हीन दुःखित अपने कष्ट और दरिद्रता से उद्धार होवें. अब मेरे पाप कर्म का बेवरा सुन कि मैंने एक महा पाप और कठिन कुकर्म किया है क्योंकि दुराचार लुटेरों के संग एक बेर मैंने एक प्रधान कुक्कुट को जिस समय वह कुक्कुटियों के संग बिहार रहा था पकड़ा और उसका मूंड छेदन किया. परंतु उसने मुझ को भी खिजाया था और बेर बेर अपने गर्व और चिंघाड़ से मुझ को उस काम में बर्जोरी लाया था. और सदा बड़े घमंड से अकड़ के चलते ऊए इतना चिल्लाता कि पड़ोसी लोग उसके कारन सोय नहीं सक्ते. और दूसरी चूक जो मैंने की थी यद्यपि उसको घाट कह के मानो तो यह है जिस समय कुक्कुटियां बज़त चिंघाड़ मारने लगीं और मेरा प्राण कंठ लग आया तब मैंने अपने जीव रक्षा के लिये निरुपाय होय परमेश्वर से क्षमा मांगी और कुक्कुटियों के संग भी उसी रीत का व्यवहार किया जैसा कुक्कुट के संग किया था. निदान लोमड़ी यह सब बातें मान अपने दुराचार के हेत से नेत्र से जल बहाने लगी. इस में उसको ढाढ़स देने और शान्ति करने के लिये भेड़िया बोला एकीकी सुजात

लोमड़ी चुप रहो काहे को रोती हो तुमने न्याव और
बिचार के प्रमान उस कुजात धूर्त कुक्कुट के संग व्यवहार
किया. और जो कुछ तुमने ढीठ और निर्लज्ज कुक्कुटियों
के विषय में किया सो केवल अपने प्राण रक्षा के
लिये किया था. इस से अधिक कोई सच्ची भागवानी
लोमड़ी किसी रीत से और कुछ नहीं कर सकी.
इतना कह सुन के ऊंड़ार और लोमड़ी अपनी अपनी ढाढ़स
और निपटारे से निश्चिंत भए पुनि गर्धब कहने लगा
अब मैं भी अवश्य स्वीकार करूंगा एक दिन मैंने अपने
स्वामी के पलान में से थोड़ी छया काढ़ के खाई थी.
जिस के हेत से उसने बड़ा जाड़ा खाया. पर मैं उस
समय क्षुधा के मारे मर्ता था. अब दया करके तुम
मेरा बिचार करो. इस में ऊंड़ार हंस के कहने लगा
ए कुजात ऐसे घाट और अपराध दयामाया के भरोसे
पर किये थे वा उसके प्राण का जोखम था. लोमड़ी
बोली सच है ऐसे कठिन अपराध की कथा मैंने तो
अपने जीवन मात्र नहीं सुनी थी. निदान शृगाल और
भेड़ियों ने उस दीन खरको वधा और भक्षण किया.

समाचार.

जहां अन्यायी प्राड्विवाक होवे और अपने गर्व के लोग
अपने और दूसरों के वादका बिचार करें उस ठांव में
न्याव और बिचार का भरोसा कभी नहीं पड़ता.

२३९ दृष्टान्त

एक निराश ग्वालिन का.

एक दूधवाली पय की मट की माथे पर धरे हाट में बेचने जाती थी. बाट में इस अगाध सोच में पड़ी कि यह क्षीर जो मेरे मुंड़ पर है यद्यपि तनिक सचेती से इस धन को अपने काम काज में लगाऊं तो अनेक द्रव्य लभ्य होवेगा. क्योंकि इस धन को मैं रोक रुपैये पर बिकरी करूंगी. पुनि उसी मुद्रा से बहुत हंस के अंडे को लूंगी फिर उस से मैं ढेर हंस के बच्चों की ठकुरानी बनूंगी तब एकही वेर अधिक हंसों का काम काज मेरे बस में निर्विघ्न से रहेगा. पुनि तुरंत हंस को बेच एक बराह का बच्चा लेऊंगी. और नीके खिलाय पिलाय के शीघ्र हृष्ट पुष्ट होवेगा. तो उसको भी चाक में बिक्रय कर एक धेनु बछवा सहित ले आऊंगी. तब उस समय मेरे संग सारे श्रेष्ठ लोग लाड़ दुलार करेंगे. वाहरे वाह. इस सुंदर कथा से उस ग्वालिन के माथे ने ऐसी चक फेरी दी कि इतने में अकस्मात् दुग्ध की कलसी जिस में उसके बौरहे मन की सर्वस माया थी सो चट औंधी होय गिर पड़ी. और सकल पय की धारा बहने लगी तिस की तरंग में वे अंडे और हंस गाय का बछरा और सारे प्रेम प्रीत कर्णे हारे बह गए.

चेतना.

वे जो ध्यान का खीर रींधते हैं सो अपनी रूखी रोटी के टूकों को बज़त कवें निराश रहते हैं.

समाप्ति ॥